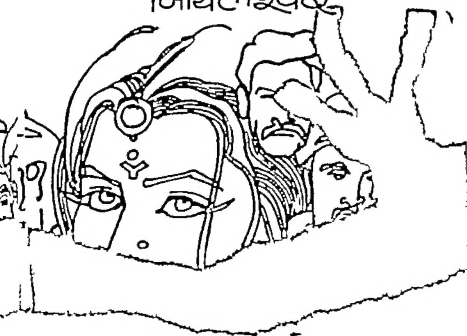
झुनिया

मिथिलेश्वर





सरस्वती विहार

जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032

मूल्य : सोलह रुपये (16.00)

प्रथम संस्करण : 1980

प्रकाशक | सरस्वती विहार
जी०टी० रोड, शाहदरा
दिल्ली-110032

JHUNIA (Novel) by Mithileshwar

समर्पण

पिता स्व० प्रो० बंसरोपन लाल
(पूर्व विभागाध्यक्ष वाणिज्य विभाग
ह० डी० जैन कॉलेज आरा) को
जिनकी संघर्षमयी जिन्दगी
बाधाओं से लड़ने के
लिए मुझे आज
भी ललकारती
रहती है।

क्रम

झुनिया

गेहूं की कटनी शुरू हो गई। हर साल की तरह इस साल भी रात में ही गेहूं की कटनी शुरू हुई। दिन में सूरज आग उगलता है इसीलिए रात में ही कटनी होती है। रात अधिया जगने पर कटनिहार अपने-अपने घरों से निकलते हैं। फिर आठ बजे सुबह तक कटनी चालू रहती है। आठ बज के बाद जब सूरज की किरणें आग बन जाती हैं तभी कटनिहार अपने-अपने घरों की ओर लौट आते हैं।

कटनी के दिनों में बूढ़े कहार हरिहर की आंखों से नींद उड़ जाती है। उसके जैसे मजदूरों के लिए ये ही कुछ दिन अपने होते हैं। रोपनी कटनी और दवनी ये तीनों मौसम ऐसे होते हैं जिनमें गांव के मजदूरों को खाने-पान तथा कमाकर वर्ष भर के लिए संचित करने का मौका मिलता है। इन दिनों में जो मजदूर आलस कर देता है उसे पूरे वर्ष भर फांके करने पड़ते हैं और उसका एक-एक दिन आंसुओं में डूबा हुआ बीतता है।

हरिहर के कानों में ठाकुरबारी के घंटे की आवाज सुनाई पड़ती है। गांव से बाहर ठाकुरजी का एक विशाल मंदिर है। प्रतिदिन रात के बारह बजे ठाकुरजी का भोग लगता है। भोग लगते समय मंदिर के साधुओं द्वारा खूब तेज आवाज में घंटे बजाए जाते हैं। गांव के मजदूरों के लिए घंटों की यह आवाज रात अधिया जाने की सूचना होती है। गेहूं की कटनी के दिनों में यह आवाज सुनते ही मजदूर अपने-अपने [illegible] जगते हैं।

खटिया से उठ बैठता है हरिहर। झुनिया को जगाने के लिए आगे बढ़ता है। झुनिया उसकी एकमात्र लडकी है। बचपन मे ही मा और भाई उसे छोडकर चले गए। उनका डोरा पूर गया था। भगवान ने उन्हे अपने पास बुला लिया। तब से झुनिया की परवरिश हरिहर ही करता आ रहा है। बच्ची थी झुनिया तो हरिहर को कोई फिकर नही थी। लेकिन झुनिया की उम्र बाध सकने की क्षमता भी तो हरिहर मे नही थी। झुनिया जवान हो ही गई। और जब से जवान हुई है झुनिया, हरिहर मुसीबत मे पड गया है। गाव में झुनिया के बारे मे अफवाहे और बातें वह रोज ही सुनता है। फिर भी जानबूझकर अनजान बनने की कोशिशें किया करता है। लेकिन यह सिर्फ हरिहर ही जानता है कि भीतर मे नग्न सच्चाई जानते हुए भी ऊपर से अनजान बनना कितना कष्टदायक होता है। पर क्या करे हरिहर ? टूटी हुई मडई और फूटी हुई हड़िया मे कुछ भी छिपाया नही जा सकता। गरीबो की हालत भी ऐसी ही होती है। उनका घर एक टूटी हुई मडई और उनकी जिन्दगी एक फूटी हुई हड़िया होती है।

"उठ री।" हरिहर झुनिया को झकझोरता है। झुनिया कुनमुनाते हुए करवट बदलती है। एक क्षण को वह अपना हाथ-पैर ऐंठती रहती है। फिर बैठकर आख मलने लगती है। हरिहर बोलता है, "चल, सभी चले गए होंगे। दो-चार बोझा काट लिया जाए। अभी से इस तरह सोएगी तो कैसे होगा ? अभी तो पूरी कटनी बाकी है।"

झुनिया उठ खडी होती है। कहती है, "चलो, मैं बाहर के दरवाजे मे ताला लगाकर आती हू।" हरिहर चल देता है। जानता है, झुनिया उसके पीछे क्यो आना चाहती है। अभी आगन मे जाएगी। फिर कोने वाले घर के दियरखे से बीडी-सलाई लेकर कमर में खोसेगी। एक बीडी सुलगाकर मुसकुराएगी और तब आएगी। बचपन मे ही मा के मर जाने से टोला-पडोस की लडकियो ने उसे मेला-बाजार घुमाना तथा बीडी सुलगाना सिखा दिया है। हरिहर को मजदूरी से फुर्सत मिलती नही थी कि इसे देखे। और अब तो 'आदत' से भी आगे बढ़कर झुनिया के लिए बीडी जरूरत हो गई है। खाना बनाते, आराम करते और इसी तरह प्राय. हर वक्त वह बीडी पीती रहती है। जब कभी हरिहर पर उसकी नजर पड

जाती है, तब बीड़ी बुझाकर वह कान पर खोंस लेती है। फिर हरिहर के हाथ से ही कान से बीड़ी उतारकर सुलगा लेती है। हरिहर को लगता है कि अब बहुत अधिक समय नहीं है। जल्द ही झुनिया अब उसके सामने भी बीड़ी पीना शुरू कर देगी।

गांव से बाहर सड़क के किनारे वाले प्राइमरी स्कूल को लांघते हुए हरिहर और झुनिया पुलिया पर आ गए। कल की भांति आज भी वे राणा बहादुरसिंह के खेत में ही जाएंगे। राणा बहादुरसिंह उसके गांव के सबसे धनी गृहस्थ हैं। उनके पास एक सौ बावन बीघा खेत है और एक ही जगह। उनके खेत को बावन बिगहवा कहा जाता है। गांव में सबसे अच्छी फसल उनके खेत में ही पैदा होती है। इलाके में दो-दो सौ बीघा रखने वाले गृहस्थ हैं पर राणा बहादुरसिंह की तरह फसल वे नहीं काट पाते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि राणा बहादुरसिंह की तरह और लोगों का खेत ऊसर नहीं है। आजकल पैदा ऊसर खेत में नहीं, बल्कि खाद के दम पर होती है। गांव के लोग बतियाते हैं कि राणा बहादुरसिंह का बी० डी० ओ० से मेल-जोल है। इस गांव के नाम पर जितना कुछ खाद पास होता है सब राणा बहादुरसिंह को ही मिल जाता है।

गांव में कटनी भी सबसे पहले राणा बहादुरसिंह के खेत में ही लगती है। उनका खेत कट जाने के बाद दूसरे के खेत में कटनी लगती है। हर जगह 'सोरही' का हिसाब है। सोलह बोझे काटने पर एक बोझा मिलता है। सो गांव के कटनिहार सबसे पहले राणा बहादुरसिंह का खेत ही काटते हैं। उनके खेत की फसल बहुत घनी और बालियां अनाजों से भरपूर होती हैं। दूसरे के खेत में जितना समय लगता है उससे कम समय में ही राणा बहादुरसिंह के खेत में सोलह बोझे कट जाते हैं। फिर दूसरे के खेत में सोलह बोझे काटने के उपलक्ष्य में मिले बोझ से दुगुना अनाज राणा बहादुरसिंह के खेत से मिले बोझे से झड़ता है। इसीसे गांव का कोई भी कटनिहार राणा बहादुरसिंह के खेत में काटने का अवसर नहीं खोता है।

राणा बहादुरसिंह के बाद दस बारह चौदह और पच्चीस बीघा के कुछ गृहस्थ उस गांव में हैं। राणा बहादुरसिंह के बाद उनके खेत की कटनी शुरू होती है। उनमें से कुछ तो टूटते-खपते यहां तक गिर गए हैं

कि कटनिहार भी बन गए हैं। लेकिन कुछ उठते आ रहे हैं। वे राणा बहादुरसिंह तक अपने को उठाने की कोशिश में लगे हैं।

हरिहर और झुनिया के 'बावन बिगहवा' तक पहुचते-पहुचते कटनी लग चुकी होती है। वे भी एक किनारे बैठकर काटने लगे। हवा का तेज झकोरा बहुत अच्छा लगता है। रात की शीतलता हवा मे घुल-मिल गई है। लेकिन ऊपर का सुहाना वातावरण और ठडक पैर के नीचे की ऊबड-खाबड जमीन से तनिक भी मेल नहीं खाती। जगह-जगह से पैर मे मिट्टी के सूखे नुकीले कोने चुभ जाते हैं तथा गेहू का कटा हुआ घना खरोंचे लगा देता है। लेकिन तेजी से काटने की आपाधापी मे इन सब कुछ का कोई ख्याल नही करता। निरन्तर अधिक काटने की लालसा पैरो को पत्थर बना देती है, जो पूरी कटनी सब कुछ सहने के लिए अभ्यस्त हो जाते हैं। फिर भी पैर मे किसी तरह का चुभन हरिहर को अपने बडे लडके की याद दिला देती है। इसी बावन बिगहवा की कटनी मे उसका लडका हमेशा के लिए उससे जुदा हो गया। हरिहर को आज भी इस बात का विश्वास है कि उसके लडके को साप ने ही काटा था। लेकिन राणा बहादुर-सिंह ने अपने खेत को बदनामी से बचाने के लिए भूत का ग्रसना और डायन का बाण लगना ही प्रचारित कर दिया था। हरिहर को साफ याद है, जब उसका लडका कटनी करते-करते ही पसर गया था, तब हरिहर दो-चार कटनिहारो के साथ उसे टाग-टुगकर किनारे की मेड पर ले आया था। किनारे की मेड पर चौकी लगाए इतमीनान से राणा बहादुरसिंह बैठे थे। बराबर कटनी के समय वे इसी तरह बैठते हैं। अपनी टार्च की रोशनी मे उन्होंने हरिहर के लडके को देखा था। उसकी आखें एकदम लाल-लाल हुई थी और वह अर्द्धबेहोशी की स्थिति मे था। उसने कहा था, 'मेरे पैर में किसी चीज ने काट लिया है।'

उसके पैर को देखा गया था। उसके पैर मे जख्म के कई निशान थे—मिट्टी के सूखे नुकीले कोनों के चुभने तथा गेहू के थनों के खरोचने का। अब यह पहचानना मुश्किल था कि किसी जन्तु के काटने का निशान कौन-सा है? इसीलिए राणा बहादुरसिंह ने सबो को मुश्किल में डाल दिया था कि इसे किसी भी चीज ने नहीं काटा है। भूत का ग्रसना और

सायन का नाम भगना बताते हुए उन्होंने यह बताया था कि इसे मूर्च्छा आ गई है। फिर हरिहर को उन्होंने कहा था कि इसे घर पर ले जाकर आराम से लिटाए। हरिहर उसे लेकर घर आ गया था। घर आने के घंटे भर बाद उसके मुंह से काफी झाग आने लगा था। फिर हरिहर के लाख भाग-दौड़ करने के बावजूद भी उसका लड़का नहीं बच सका था। हरिहर से यह दुःख सहा नहीं जा रहा था। लेकिन राणा बहादुरसिंह ने उसे सांत्वना दी थी कि क्या करोगे ? जिसका काल पूरा आता है उसे कोई रोक नहीं सकता। भगवान के यहां से उसका बुलावा आ गया था। हमारे और तुम्हारे रोकने से वह रुकने वाला नहीं था।

हरिहर आज भी इस खेत में कटनी करने आता है तो उसका मन दहशत से भर जाता है। इस खेत की पुरानी मोटी पगडंडियों में अनेक सुराखें हैं। उन सुराखों में से कई बार कई विषैले सांपों को उसने खुद निकलते देखा है। उसने ही क्यों प्रायः सभी कटनिहारों ने देखा है। लेकिन कटनी करने से कहां कोई बाज आता है ! पेट का अजगर इन सांपों से ज्यादा भयावह है। उसकी क्रूर मांग हर भय को दूर कर देती है। लोग हंसिया लेकर खेतों में कूद पड़ते हैं। उनके सामने जीवन की एक ही व्याख्या होती है—काल आ जाने पर कोई रोक नहीं सकता। क्या खेत क्या महल, काल आ जाने पर कहीं भी आदमी बच नहीं पाएगा। राजा परीक्षित को बचाने की लाख कोशिश की गई लेकिन वे बच नहीं सके।

रात के सातवें पहर चांद निकल आता है। कटनिहारों का मन बाग बाग हो जाता है। उनके हाथ की रफ्तार और तेज हो जाती है। कई के कंठ कुछ गीत भी गुनगुनाने लगते हैं। खासकर सोमारू कुछ तेज-तेज आवाज में गाने लगता है। सोमारू को चांदनी रात में झुनिया बहुत अच्छी लगती है। चांदनी रात ही क्यों अंधकार में भी सोमारू की आंखों के आगे झुनिया की आकृति तैरती रहती है। सोमारू अपने कुछ कटनिहार मित्रों से कहता है कि वह हवा के रुख से ही पहचान लेता है कि झुनिया कहां बैठी है। झुनिया के शरीर की सोंधी गंध सोमारू को बेचैन किए रहती है ऐसा सोमारू अपने मित्रों से बताता है। लेकिन उसके मित्र कहते हैं कि तू मजनू हो गया है। कहां उसके शरीर से कोई गंध आती ?

कटनी हम लोग तो बराबर उसके करीब करते हैं। पर सोमारू अपने मित्रों की बात पर कान नहीं देता है। वह कहता है कि मुझे खेत, खलिहान, गली कहीं भी झुनिया नजर आती है तो बस, उसी समय उसके शरीर की सोंधी गंध मेरी नाक में घुस जाती है।

यह सोमारू झुनिया की तरह ही अब अपने मां-बाप का अकेला बच्चा है। उसकी तीन बहनें थीं, जिनकी शादियां हो चुकीं। अब वे अपनी ससुराल में हैं। सोमारू की शादी की बात भी उसके मां-बाप चलाते हैं, पर वह लड़ बैठता है। लेकिन वह चाहकर भी अपने मां-बाप को यह नहीं बता पाता है कि वह झुनिया से शादी करना चाहता है। दरअसल ऐसा इस गांव में कभी हुआ ही नहीं है कि इस गांव की ही किसी लड़की को इस गांव का ही कोई लड़का रख ले। इसीसे सोमारू बराबर झुनिया को लेकर इस गांव से भाग जाना चाहता है। लेकिन झुनिया तैयार ही नहीं होती है। तैयार होने की तो बात अलग है, झुनिया सोमारू को प्यार भी नहीं दे पाती है। सोमारू अपने हृदय का संपूर्ण प्यार समर्पित करता रहता है, पर झुनिया की ओर से कोई जवाब नहीं मिलता। सोमारू के मित्र बताते हैं कि तुम्हारा प्यार एकतरफा है और जब तक प्यार दो-तरफा नहीं हो पाता, तब तक प्यार में गुल नहीं खिलता है। इसीसे सोमारू अपने प्यार को दोतरफा बनाकर गुल खिलाने की कोशिशों में संलग्न रहता है। झुनिया को पा लेना उसके लिए विश्व पर विजय प्राप्त कर लेना है।

अचानक फिल्मी गानों की मधुर आवाज कटनिहारों को चौंका देती है। वे चौकन्ना होकर देखते हैं। गांव से आने वाली पगडंडी पर सूट-बूट में लैस एक खूबसूरत नौजवान कंधे पर ट्रांजिस्टर लटकाए चला आ रहा है। कौन है?—यह जानने की जिज्ञासा सभी कटनिहारों के मन को मथने लगती है। फिर जब वह नौजवान धीरे-धीरे काफी करीब आ जाता है तब राणा बहादुरसिंह के आस-पास रहने वाले कुछ कटनिहार उसे पहचान जाते हैं। वह राणा बहादुरसिंह का लाडला पुत्र निखिल बहादुर है। आज ही शाम को शहर से आया है। एम०ए० पास कर गया। पढ़ने के लिए शहर गया था। अब स्थायी रूप में रहने के लिए गांव आ

गया है। शहर की सौ-पचास की नौकरी से क्या होगा ? इतना लेत बधार है कौन देखेगा ? राजा बहादुरसिंह तो अब बूढ़े हो चले हैं।

निखिल बहादुर अपने खेत की पगडंडियों पर घूमने लगता है। जगह-जगह झुक-झुककर कटनिहारों को देखता जाता है। एकाएक मुनिया के पास पहुंचते ही उसके कदम ठिठक जाते हैं—इतना आकर्षक सौन्दर्य ! गठीला बदन ! फिर भी कटनी कर रही है ! वह आश्चर्य से भौचक हो देर तक मुनिया को देखता रहता है। फिर पूछता है, "किसकी बेटी हो ?"

वह आंख नचाकर बोलती है 'हरिहर कहार की।

"कौन हरिहर कहार ?" वह दुबारा पूछता है।

"आप नहीं पहचानिएगा बबुआजी पीछे से हरिहर कहार बोलता है 'आप बहुत छोटे थे तब मैं आपको कंधे पर बिठाकर सड़क पर घुमाया करता था।

अच्छा कहो क्या हाल है ?

'सब ईश्वर की कृपा है बबुआजी !

"कितने लड़के हैं तुमको ?

'लड़के नहीं हैं बबुआजी ! एक लड़का आपकी उम्र का था वह ईश्वर के पास चला गया।

'और लड़की ?"

'लड़की यही एक मुनिया है।

"इसकी मां ?

'इसकी मां नहीं है। वह भी परलोक सिधार गई। माई और मां का प्यार इसे नहीं बदा था।

"क्या करोगे ! सब ईश्वर की लीला है। और सब तो 'ठीक है न ?'

"सब ऊपर वाले की दया है बबुआजी !"

इसके बाद दोनों खामोश हो गए। हरिहर कटनी में मशगूल हो गया और निखिल मुनिया को घूरने लगा। कभी-कभी मुनिया भी पलटकर निखिल को देख लेती। और यही बात मीनाक्ष के ऊपर चाबुक की तरह

कटनी हम लोग तो वरावर उसके करीब करते हैं। पर सोमारू अपने मित्रो की वात पर कान नहीं देता है। वह कहता है कि मुझे खेत, खलिहान, गली कही भी झुनिया नजर आती है तो वस, उसी समय उसके शरीर की सोंधी गंध मेरी नाक में घुस जाती है।

यह सोमारू झुनिया की तरह ही अब अपने मा-बाप का अकेला बच्चा है। उसकी तीन बहनें थीं, जिनकी शादियां हो चुकीं। अब वे अपनी ससुराल में हैं। सोमारू की शादी की वात भी उसके मां-बाप चलाते हैं, पर वह लड वैठता है। लेकिन वह चाहकर भी अपने मां-बाप को यह नही वता पाता है कि वह झुनिया से शादी करना चाहता है। दरअसल ऐसा इस गाव मे कभी हुआ ही नहीं है कि इस गाव की ही किसी लडकी को इस गांव का ही कोई लडका रख ले। इसीसे सोमारू वरावर झुनिया को लेकर इस गाव से भाग जाना चाहता है। लेकिन झुनिया तैयार ही नही होती है। तैयार होने की तो वात अलग है, झुनिया सोमारू को प्यार भी नहीं दे पाती है। सोमारू अपने हृदय का सपूर्ण प्यार समर्पित करता रहता है, पर झुनिया की ओर से कोई जवाव नहीं मिलता। सोमारू के मित्र वताते हैं कि तुम्हारा प्यार एकतरफा है और जव तक प्यार दोतरफा नही हो पाता, तव तक प्यार मे गुल नहीं खिलता है। इसीसे सोमारू अपने प्यार को दोतरफा वनाकर गुल खिलाने की कोशिशो में सलग्न रहता है। झुनिया को पा लेना उसके लिए विश्व पर विजय प्राप्त कर लेना है।

अचानक फिल्मी गानों की मधुर आवाज कटनिहारों को चौंका देती है। वे चौकन्ना होकर देखते हैं। गाव से आने वाली पगडडी पर सूट-बूट में लैस एक खूवसूरत नौजवान कधे पर ट्रांजिस्टर लटकाए चला आ रहा है। कौन है?—यह जानने की जिज्ञासा सभी कटनिहारों के मन को मथने लगती है। फिर जव वह नौजवान धीरे-धीरे काफी करीव आ जाता है तव राणा वहादुरसिंह के आस-पास रहने वाले कुछ कटनिहार उसे पहचान जाते हैं। वह राणा वहादुरसिंह का लाडला पुत्र निखिल वहादुर है। आज ही शाम को शहर से आया है। एम०ए० पास कर गया। पढ़ने के लिए शहर गया था। अव स्थायी रूप मे रहने के लिए गांव आ

गया है। शहर की सौ-पचास की नौकरी से क्या होगा? इतना खेत बखार है कौन देखेगा? राणा बहादुरसिंह तो अब बूढ़े हो चले हैं।

निखिल बहादुर अपने खेत की पगडंडियों पर घूमने लगता है। जगह-जगह झुक-झुककर कटनिहारों को देखता जाता है। एकाएक मुनिया के पास पहुंचते ही उसके कदम ठिठक जाते हैं—इतना आकर्षक सौन्दर्य! गठीला बदन! फिर भी कटनी कर रही है! वह आश्चर्य से भौचक हो देर तक मुनिया को देखता रहता है। फिर पूछता है, "किसकी बेटी हो?

वह आंख नचाकर बोलती है "हरिहर कहार की।"

"कौन हरिहर कहार?" वह दुबारा पूछता है।

"आप नहीं पहचानिएगा बबुआजी पीछे से हरिहर कहार बोलता है, "आप बहुत छोटे थे तब मैं आपको कंधे पर बिठाकर सड़क पर घुमाया करता था।

अच्छा कहो क्या हाल है?

'सब ईश्वर की कृपा है बबुआजी!

कितने लड़के हैं तुमको?'

"लड़के नहीं हैं बबुआजी! एक लड़का आपकी उम्र का था वह ईश्वर के पास चला गया।

'और लड़की?"

"लड़की यही एक मुनिया है।

"इसकी मां?"

"इसकी मां नहीं है। वह भी परलोक सिधार गई। भाई और मां का प्यार इसे नहीं बदा था।

"क्या करोगे! सब ईश्वर की लीला है। और सब तो ठीक है न?'

"सब ऊपर वाले की दया है बबुआजी!"

इसके बाद दोनों खामोश हो गए। हरिहर कटनी [illegible] और निखिल मुनिया को घूरने लगा। कभी-[illegible] निखिल को देख लेती। और यही बात भोलानाथ के ऊपर [illegible]

प्रहार करती है। उसे निखिल अपना सबसे बडा दुश्मन प्रतीत होने लगता है, यह जानते हुए भी कि वह उसीके खेत मे कटनी कर रहा है। उसे झुनिया पर भी गुस्सा आता है कि वह क्यो उसे पलटकर देखती है। उसके हाथ एकदम से शिथिल हो जाते हैं। उससे गेहू के पौधे काटे नही जाते। वह बुरी तरह बेचैन हो उठता है। यह जानकर कि निखिल अब स्थायी रूप से गाव मे रहने के लिए आ गया है, उसे अपना प्रणय-भविष्य एकदम अधकारपूर्ण लगने लगता है। फिर एक स्थिति ऐसी आती है कि हसिया फेंककर सिर-दर्द का बहाना बना पास ही की मेड पर बैठ जाता है।

सुबह के तडके ही सनसनी की तरह यह खबर पूरे गाव मे फैल जाती है कि हरनाम जेल से छूटकर आ गया है। अबकी दफा वह तीसरी बार जेल से छूटकर आया है। इस बार उसका शरीर काफी भरा-भरा लगने लगा है तथा मूछें बहुत बडी-बडी हो गई हैं। उसका चेहरा पहले से कहीं अधिक खूखार और भयावह हो गया है। अपने आ जाने की सूचना देने के लिए वह पूरे गाव का चक्कर एक बार लगा चुका है।

अब क्या किया जा सकता है? कौन-सा रास्ता अब शेष बचा है? राणा बहादुरसिह को कुछ भी समझ मे नही आ रहा है। हरनाम को पहली दफा गिरफ्तार करवाने के बाद राणा बहादुरसिह गहरी नींद सोए थे। उन्हे लगा था कि जेल की सजा भुगत चुकने के बाद बच्चू अब कभी चोरी-बदमाशी नही करेगा। इसीलिए जब पहली दफा हरनाम जेल से छूटकर आया था तो राणा बहादुरसिह उसकी हरकतो पर विशेष गौर करने लगे थे। लेकिन वैसा कुछ भी नही हो पाया, जैसा उन्होंने सोचा था। हरनाम के रवैये मे कही कोई बदलाव नहीं आया था। पुन दूसरी बार राणा बहादुरसिह ने उसे गिरफ्तार करवाया था। इस बार थाना पर उसे हटरो से पिटवाया भी था। पर इस दूसरी बार भी हरनाम जेल की अवधि समाप्त कर लौट आने पर तनिक भी नहीं बदला, बल्कि पहले से कहीं और ज्यादा कठोर हो गया था। राणा बहादुरसिह को दूसरी बार जेल से लौट आने पर हरनाम ने पानी पिला दिया था। उनकी आधी से अधिक

फसलें चोरी से कटवा ली थीं और खलिहान में सोए हुए उन्हें एक रात अपने मित्रों से पिटवाया भी था। वे उससे बुरी तरह तंग हो चुके थे। फिर काफी भाग-दौड़कर तथा कई सालों की फसलों का मुनाफा लुटाकर उन्होंने तीसरी बार उसे गिरफ्तार करवाया था। और इस तीसरी बार भी वह पुनः छूटकर आ गया है। इस बार वह सिर्फ कठोर ही नहीं हुआ है बल्कि एकदम खूंखार और भयंकर हो गया है। राणा बहादुरसिंह के अन्तरंग मित्रों ने उन्हें बताया है कि गांव में घुसते ही हरनाम ने चुनौती दी है कि अब राणा बहादुरसिंह उसे कभी गिरफ्तार नहीं करवा सकते हैं। इसी लिए राणा बहादुरसिंह गहरी सोच में डूब गए हैं।

दरअसल राणा बहादुरसिंह और हरनामसिंह की यह लड़ाई बहुत पुरानी नहीं है। वैसे भी हरनाम राणा बहादुरसिंह से काफी छोटा है। वे अब बूढ़े हो गए हैं और उसकी जवानी तो अभी-अभी आई है। गांव के लोग बताते हैं कि अपनी बिरादरी के गरीब हरनाम को कई बार और कई जगह इस्तेमाल करने के बाद भी जब राणा बहादुरसिंह उसके मौकों पर काम नहीं आए थे तो वह फुंफकार उठा था। फिर गलत तरीके से उसने उनके ऊपर वार करना शुरू किया था। चूंकि राणा बहादुरसिंह सम्पत्तिशाली थे। गांव उनका था। लोग-बाग उनके थे। इसीलिए उन्होंने तीन-तीन बार हरनाम को पकड़वा कर जेल भिजवाया था। मगर इस बीच हरनाम ने अपने को काफी मजबूत कर लिया था और अब तो भरपूर साहस और काफी शक्ति के साथ हरनाम इस गांव में खड़ा हो गया है। राणा बहादुरसिंह को इसीलिए अब सारे रास्ते और दरवाजे बंद नजर आने लगे हैं।

हरिहर की मड़ई में शराब पीते हरनाम को अपना हमउम्र जोगिंदर मिल गया। जोगिंदर का राजनीतिक जीवन अब गांव की ऊंचाइयों को छूने लगा है। गांव के अन्य युवकों की तरह मैट्रिक या बी॰ ए॰ करने के बाद जोगिन्दर रोजी रोटी में नहीं फंसा बल्कि बचपन से लगी अपने मन की राजनीतिक लगन को उसने और अधिक विस्तार दिया। अपनी इस छोटी उम्र में ही उसने कितनी पार्टियां छोड़ीं और पकड़ीं। दरअसल उसके लिए पार्टियों का कभी महत्त्व नहीं रहा। चुनाव लड़ने वाले व्यक्ति

जिनमें उसे कुछ लाभ होता था, जो उसे कुछ लेते-देते थे, वह उन्हीका प्रचार करता था, चाहे वे किसी भी पार्टी के क्यो न हो। इस इलाके के कई लोगो को उसने एम० एल० ए० वना दिया है। इसीलिए इस इलाके में उसकी पूरी वाक है। इस गाव मे भी उसकी भरपूर लोकप्रियता कायम हो गई है। गाव के अमीर-गरीव, दोनो वर्ग उसे चाहते हैं। चमरटोली और दुसाध टोली मे सरकारी नल और कुए का इतजाम उसने करवा दिया है। अमीर वर्ग की लेवी सूखाग्रस्त क्षेत्र घोषित करके उसने माफ करवा दिया है। गाव के तमाम लोग कहते हैं कि जोगिंदर एक सही राज-नीतिक व्यक्ति हैं। उसका जन्म इस गाव के उद्धार के लिए ही हुआ है। जोगिंदर की मिट्टी के मकान के स्थान पर उठ आए पक्के मकान से गाव के लोग काफी प्रभावित हैं। वे अपने वच्चो को भी राजनीति सिखाने तथा जोगिंदर के शागिद वनाने की कोशिश मे लगे रहते हैं।

हरनाम को देखते ही जोगिंदर अपने राजनीतिक लहजे मे कहता है "अरे हरनाम, यहा हो। जव से तुम आए हो, तव से मैं तुमको खोज रह हू।"

"कहो, क्या हाल है?" हरनाम पूछता है।

"सव ठीक है। तुम्हारे लिए मैंने दारोगा, इन्स्पेक्टर, डी० एम० पी० और एम० पी० को तग कर दिया था। जानते हो, एम० पी० का ट्रान्स-फर हो रहा था। वे वहुत मुश्किल मे पड गए थे। मेरे सामने गिडगिडा लगे। वस, मैंने अपने एम० एल० ए० को भिडा दिया था। फिर क कहना, उनकी वदली रोक दी गई। अव वच्चू को जो कहूगा सो करें तुम अव मौज से रहो। जव तक यह एस० पी० रहेंगे, कोई तुम्हे गिरफ करने नही आएगा।"

हरनाम गद्गद हो जाता है। वह अभी एकदम अनुभवहीन है। पहले भी जोगिंदर ने कई वार उसे इस तरह का आश्वासन दिया है इसके वावजूद भी वह गिरफ्तार हुआ है। फिर भी उसे झटका न है। जोगिंदर की वातें इतनी प्रभावशाली और असरदार होती हैं गद्गद हो ही जाते हैं। उन्हे जोगिंदर अपना परम हितैषी लगे है।

हरनाम जोगिंदर का हाथ पकड़ते हुए कहता है, "बैठो यार, थोड़ा पियो। कोई सवा है?'

जोगिंदर बैठकर हरनाम के साथ ही पीने लगता है। फिर कहता है, नहीं दोस्त सवा क्या? तुम्हारी एक नजर ही काफी है। इलेक्शन आ रहा है। देखना, चमरटोली और कुलाय टोली के लोग बहकने न पाएं।"

इसके लिए तुम बफिकर रहो। एक आदमी भी नहीं बहकेगा। तुमसे भी कोई अपना होगा? जिसको तुम चाहोगे उसीको वोट पड़ेगा।"

इसी तरह हरनाम से बतियाने तथा उसके साथ कुछ देर तक पीने के बाद जोगिंदर वहां से चल दिया। अपनी पूर्व निश्चित योजना के अनुसार वह सीधे राणा बहादुरसिंह के दालान पर आया। राणा बहादुरसिंह को देखते ही दूर से ही हाथ जोड़कर वह बोला "पा लागी चाचा!"

खुश रहो, खुश रहो, इधर दो-तीन दिनों से नजर नहीं आए। राणा बहादुरसिंह भरपूर रुचि के साथ उसकी ओर मुखातिब हो जाते हैं। वह राणा बहादुरसिंह का अपना भतीजा नहीं है। फिर भी अपने भतीजे से कहीं ज्यादा आत्मीय लहजे में कहता है "चाचा, साला हरनाम फिर छूट गया। इसके बाहर के दोस्त जौथिक-पैरवी करके इसे छुड़ा देते हैं। अबकी बार इस साले को सदा के लिए गिरफ्तार करवा दिया जाए।"

"यही तो मैं भी सोच रहा हूं बेटा! जब से मैंने सुना है कि वह आ गया है, मेरी नींद हराम हो गई है।"

"नहीं चाचा फिकर करने की कोई बात नहीं है। एस० पी० डी० एस० पी० सभी मेरे अपने हैं। अभी परसों ही तो डी० एम० पी० की लड़की की शादी में गया था। सारा भार मेरे ऊपर था। आप चुपचाप देखते रहिए। मैं महीने भर के अन्दर इसे फिर गिरफ्तार करवा रहा हूं। सिर्फ आपका हाथ मेरी पीठ पर रहना चाहिए।"

"अरे बेटा, मैं तेरे से अलग थोड़े ही हूं। तुम्हें जब जिस चीज की जरूरत पड़े, सिर्फ खबर कर देना।"

फिर राणा बहादुरसिंह अपने नौकर को आवाज लगाते हैं। उनका नौकर नहीं है। शायद कहीं गया है। वह खड़े होते हुए जोगिंदर से कहते हैं "नौकर नहीं है। चलो बेटा, अन्दर ही चला जाए। मछली बन रही है,

खाकर जाना।

जोगिंदर राणा बहादुरसिंह के साथ उनकी ड्योढ़ी के अन्दर घुसा। अचानक आगन के बरामदे मे खडी एक अत्यत खूबसूरत नौजवान लडकी को देख वह भौचक हो उठा। फिर उसे बचपन मे अपने साथ खेली, अपने से छोटी राणा बहादुरसिंह की लडकी विमली याद आती है। वह अवाक् होते हुए पूछता है, "विमली है क्या?"

राणा बहादुरसिंह कहते हैं, "हा, विमली ही है। बी० ए० कर गई। निखिल के साथ आई है। वह भी एम० ए० कर गया। अब ये दोनो गाव मे ही रहेंगे। यही से इसकी शादी कर दी जाएगी और निखिल खेत-बधार देखेगा।"

फिर राणा बहादुरसिंह विमली से कहते हैं, "पहचानती नही हो? उत्तरपट्टी के रामजी भैया का लडका जोगिंदर है।"

अब विमली पहचान लेती है। उसके अधर कुछ-कुछ फैल जाते हैं। बहुत महीन हसी हसते हुए वह हाथ जोडकर जोगिंदर को नमस्कार करती है। इस क्रम मे उसकी मछलीनुमा आखें जोगिंदर की आखो से मिल जाती हैं। बस, जोगिंदर का होश-हवास ही जैसे गुम हो गया। कुछ क्षणो के लिए जोगिंदर को यह भी मालूम नही पडा कि उसके पैर के नीचे धरती है या नहीं।

राणा बहादुरसिंह ने जोगिंदर को एक जगह बैठाया। फिर बातें शुरु कर दी। लेकिन जोगिंदर का मन तो अशात हो चुका था। विमली का निखरा सौंदर्य और उसके युवा शरीर का मासल उभार जोगिंदर को बेचैन किए हुए था। विमली अब शादी से पहले तक गाव मे ही रहेगी, यह बात जोगिंदर के अन्दर जाले बुनने लगती है। यहा एक बार फिर वह अपना राजनीतिक अस्त्र चलाता है, "चाचा, विमली का तो मुझे ख्याल ही नही था। अच्छा, अब हाथ से नहीं निकलने दिया जाएगा। मेरे दो मित्र हैं—एक राची मे प्रोफेसर तथा दूसरा बोकारो मे इन्जीनियर है। दोनो घर के भी काफी गुनी-सम्पन्न हैं। इनमे से किसी एक से विमली की शादी कर दी जाए।"

"अरे बेटा, यह हो जाएगा तब तो मेरा सारा बोझ ही दूर ह

जाएगा।" राणा बहादुरसिंह बादी में पहले ही आभार प्रकट करने लगते हैं। वह नजर बचाकर बिमली को देखता है। बिमली भी यह सब सुन रही होती है। उसका चेहरा रक्तिम हो उठा है। बस, जोगिन्दर को साफ लगता है कि उसका राजनीतिक वार सही जगह हुआ है। और अपने राजनीतिक वार के सफल होने का पक्का विश्वास जोगिन्दर के मन में है।

बिमली राणा बहादुरसिंह और जोगिन्दर को तली हुई मछली खिलाने लगी। राणा बहादुरसिंह जोगिन्दर की थाली में बिमली से जबरन मछली गिरवाते हैं। जोगिन्दर खूब छककर खाता है। खाता है और बातें करता जाता है। वह विधानसभा से लेकर ब्लाक तक की अनेक गुप्त सूचनाएं राणा बहादुरसिंह को देता है। इस बीच नजर बचाकर बराबर ही बिमली को देखता जाता है। इसी तरह करीब दो घण्टे बाद वह राणा बहादुरसिंह से विदा लेकर चल पड़ा। उसके साथ घर से बाहर दालान तक राणा बहादुरसिंह भी आए। उसे मर मिलाई एक बार फिर बिमली को देखने की इच्छा होती है। वह राणा बहादुरसिंह से कहता है "अरे चाची चाची को नहीं देख पाया। कहीं गई हैं क्या?"

"नहीं घर में हैं तबीयत खराब है।

"तब एक मिनट ठहरिए। मैं उनको देखकर आ रहा हूं। और जोगिन्दर राणा बहादुरसिंह को दालान पर ही छोड़ तेजी से उनके घर के अन्दर घुस जाता है। बिमली उसे अकेले आया देख थोड़ा असहज हो उठती है। वह बिमली के एकदम करीब चला आता है। फिर कहता है "बिमली! जरा चाची से मुझे मिलाओ। वे बीमार हैं न?

बिमली माथा हिलाकर माँ के बीमार होने की सूचना देती है। फिर जोगिन्दर को लेकर उस कमरे में चल देती है जिसमें माँ है। उस कमरे में प्रवेश करते वक्त जोगिन्दर जानबूझकर बिमली के शरीर का स्पर्श कर देता है। फिर इस सबस बिलकुल अनजान बनते हुए जोगिन्दर चाची का देखन-सुनने तथा उनकी बीमारी के बारे में पूछने लगता है। इस बार वह शीघ्र ही वहां से चल देता है। घर से निकलते वक्त एक बार भरपूर नजर बिमली पर डालता है। बाहर आकर राणा बहादुरसिंह से चाचा

की बीमारी को ठीक करने के लिए कुछ हिदायतें देता है। फिर वहा से चल देता है।

अब दोपहर ढल चुकी है। जोगिन्दर को झुनिया याद आ गई। झुनिया की कसी हुई देह, उफान खाता यौवन और सलोना रूप पिछले वर्ष भर से जोगिन्दर की आखो मे गड रहा है। अपने गाव के हरिहर कहार की इस भोली-भाली लडकी को जोगिन्दर कभी का फास चुका होता; लेकिन उसे कभी मौका ही हाथ नहीं आया। हरनाम था तो उसके सामने किसीकी दाल गलती ही नही थी। हरनाम के जेल चले जाने के बाद राणा बहादुरसिंह ने हथिया लिया था। इस बीच जब कभी मौका निकालकर जोगिन्दर पहुचता, सोमारू को पहरा देते पाता।

इस समय झुनिया अकेली ही होगी। हरिहर कही रस्सी का इतजाम करने गया होगा। रात मे कटनी करते वक्त बोझा बाधने के लिए कटनिहार दिन मे ही रस्सी का इन्तजाम कर लेते हैं।

जोगिन्दर तेजी से कहार टोली की ओर झुनिया की मडई के पास पहुच गया। उसका अनुमान गलत निकला। हरिहर पुआल को पानी मे भिगोकर अपनी मडई में ही रस्सी बना रहा था। खैर '। हरिहर के रहने और न रहने से कोई फर्क नहीं पडता है। वह राजनीतिज्ञ है। हरिहर के सामने भी उसकी बात बन सकती है। वह सीधे हरिहर की मडई मे घुस जाता है। उसे देखते ही हरिहर खटिया से नीचे उतरकर जमीन पर बैठ गया। वह खटिया पर जा बैठा। हरिहर पूछता है, "कहिए बाबू साहब, कैसे आना हुआ?"

"अरे हरिहर भाई, तुम्हारा कुशल-मगल पूछने चला आया। नही तो तुम भी कहोगे कि बाबू साहब सिर्फ चुनाव के दिनो मे ही हम लोगो के दरवाजे आते हैं।"

"नही, नहीं, बाबू साहब, ऐसी बात नही है। आपकी नेकी को कौन भूलेगा? आपकी बदौलत ही तो आज नल का पानी पीने को मिल रहा है अन्यथा हम गरीबो को कौन पूछता?"

"हरिहर भाई, तुम नही जानते हो। मैं बराबर गरीबो का ही पक्ष लिया करता हू। इसीसे बाहर में लोग मुझे गरीबो का नेता कहते हैं। और

यानी कि तुम्हारे ऊपर मेरी विशेष दृष्टि रहती है। भूमिहीनों को कुछ जमीन मिलने वाली है। उसमें मैंने सबसे पहला नाम तुम्हारा ही लिखवा दिया है। ब्लाक की ओर से इस गांव के कुछ मजदूरों के मकान बनवाए जाएंगे। उसमें तुम्हारा नाम नहीं था लेकिन मैंने सबसे ऊपर तुम्हारा नाम ही चढ़वा दिया है।"

हरिहर आश्चर्यचकित विस्फारित और कृतज्ञ नेत्रों से जोगिन्दर को देखने लगता है। उसकी आंखें छलछला आती हैं। गद्गद कंठ से वह बोलता है "बाबू साहब आपकी नेकी का बदला हम गरीबों से किसी जनम में भी नहीं दिया जाएगा।

ऐसा मत कहो हरिहर! तुम अपने को गरीब मत कहो। अब और अधिक समय नहीं है। चारों ओर लड़ाई छिड़ गई है। अब गरीबों को जल्द ही असली सुराज मिलेगा। उनके रहने को मकान तथा खेती करने को जमीन सरकार देगी।"

हरिहर जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से जोगिन्दर की ओर ताकते हुए उसकी बात सुनता रहा। जोगिन्दर इसी तरह कुछ देर तक हरिहर को स्वप्नों की दुनिया में भुलाता रहा। मुनिया अब तक घर से बाहर नहीं निकली है यह बात जोगिन्दर को कचोटने लगती है। फिर तत्काल ही उसे एक अच्छी बात सूझती है। वह अपनी जेब से सिगरेट का एक पैकेट निकालता है। हालांकि माचिस भी उसकी जेब में है लेकिन वह हरिहर से कहता है "माचिस होगी तुम्हारे पास ?

"हां अभी मंगवाए देता हूं। और वह मुनिया को आवाज लगाता है "मुनिया!

"रहने दो हरिहर भाई! कुछ कर रही होगी" जोगिन्दर बीच में ही बोल उठता है और खड़ा होते हुए कहता है "मैं स्वयं ही अन्दर जाकर जला लेता हूं।

जोगिन्दर तेजी से हरिहर के घर के अन्दर चला जाता है। मुनिया आंगन में बैठी मिट्टी मिले धान को सूप से अलग कर रही थी। जोगिंदर उससे माचिस मांगता है। फिर सिगरेट सुलगाता है। फिर एक सिगरेट मुनिया की ओर भी बढ़ाता है। मुनिया नहीं लेती है। कहती है, "नहीं

बाबू साहब ! मैं बीड़ी पीती हूं।"

"लेकिन मेरे कहने से एक पीकर तो देख।" और जोगिंदर जबरन झुनिया के हाथ मे सिगरेट पकड़ा देता है। इस क्रम में वह धीरे से झुनिया की हथेली भी दबा देता है। इससे पहले भी जोगिंदर झुनिया को कई वार आंखों से इशारा कर चुका है तथा छेड़खानी भी करता रहा है। इसीसे झुनिया के पास उसे भय, शर्म, सकोच और हिचक नाम की कोई भी चीज महसूस नही होती है। इधर-उधर चौकन्नी दृष्टि से देखते हुए वह अपनी जेब से दस का एक नोट निकालकर झुनिया की ओर बढ़ा देता है। झुनिया नहीं लेती है। वह आगे बढ़कर झुनिया को दबोच लेता है।

"बाबू यही पर हैं।" भयभीत आवाज में बोलती हुई झुनिया छटपटाते हुए उससे अपने को अलग कर लेती है। वह निराश होकर आ गया

मड़ई में हरिहर उसी तरह रस्सी बना रहा होता है। एक क्षण के लिए वह हरिहर के पास खड़ा हुआ। फिर अपने घर की ओर चल पड़ा।

अब शाम गहराने लगी है। शीघ्र ही शाम अब रात में बदल जाएगी। फिर सारा गाव रात के अधकार में छिप जाएगा। लेकिन नहीं। अब हरनाम आ गया है। अब प्राय हर रात को गाव मे कोई न कोई नई घटना घटेगी। लेकिन कौन इसकी चिन्ता करता है तथा घटनाओ को रोकने के लिए रात भर जागकर कौन जोखिमपूर्ण कार्य करता है? सभी पकाने-खाने तथा इतमीनान से गहरी नींद सोने की तैयारियो मे मशगूल हो जाते हैं।

रोज की तरह शाम गहराते ही सोमारू झुनिया के घर की ओर च
पड़ा। इस समय झुनिया आगन में खाना पका रही होगी। सोमा
उसके करीब ही बैठकर बीड़ी सुलगाएगा। एक बीड़ी उसको भी सुल
कर देगा। और फिर रोज की तरह करीब घण्टे भर तक उसे अपनी ब
मे उलझाए रखेगा। अधिकतर उसकी बातें प्यार और प्रेम से सम्ब
ही होती हैं। वह अपने तरीके से प्यार और प्रेम को परिभाषित करत
वह झुनिया के मन तक यह बात पहुचा देना चाहता है कि वह झुनि

सच्चा प्यार करता है। वह चाहता है कि मुनिया भी उसके प्यार का जवाब दे। लेकिन मुनिया कोई कदम नहीं उठाती है और आश्चर्य यह कि मुनिया उसका विरोध भी नहीं करती है।

सोमारू को इस बात से खुशी होती है कि उसके आगमन से हरिहर नाराज नहीं होता है। दरअसल गांव के बाबू लोगों के अपने घर आने से हरिहर मन ही मन कस-मुन जाता है। लेकिन सोमारू के आने से तो उसे खुशी ही होती है। असल में सोमारू उसके अपन धर्म और अपनी बिरादरी का है। और सोमारू हरिहर के लिए बहुत कुछ करता भी है। कई बार मुसीबत पड़ने पर हरिहर को सोमारू ने ही उबारा था। अपने माँ-बाप से तनिक भी कम ख्याल सोमारू हरिहर का नहीं रखता है। इसीलिए हरिहर यह जानते हुए भी कि मुनिया जवान है सोमारू का अकेले में उसके साथ बैठना-बतियाना ठीक नहीं होगा वह सोमारू को नहीं रोक पाता है। आखिर क्या करे हरिहर? मुनिया के साथ अकेले में बोलने-बतियाने वाले कई लोगों को वह जानता है। लेकिन उन्हें रोकने की शक्ति उसमें नहीं है। तब फिर एक सोमारू के बढ़ जाने से क्या होगा? सोमारू तो कई दृष्टियों से उसका अपना है। हरिहर के मन में कहीं न कहीं यह बात है कि मुनिया को सोमारू को सौंप दे। लेकिन ऐसा कभी हुआ ही नहीं है। गांव की ही लड़की गांव के ही लड़के से । गांव हँसेगा और थूकेगा। और इसीलिए हरिहर कभी भूलकर भी यह बात अपने होंठों पर नहीं ला पाता है।

सोमारू मड़ई में खटिया पर सोए हरिहर के पास न रुककर सीधे उसके घर के अन्दर चला गया। जैसाकि वह जानता था मुनिया उसे आंगन में खाना पकाते हुए ही मिलती है। वह मुनिया के करीब ही बैठ गया। इस बार वह मुनिया के काफी करीब बैठा है। मुनिया थोड़ा खिसक-कर अलग हो जाती है। कहती है, "जरा दूर ही बैठो। बाबू आएंगे तो क्या कहेंगे?

वह कहता है "कहेंगे क्या? कुछ नहीं। एक दिन उनके सामने ही तुमको अपने घर ले जाऊंगा।"

"चलो हटो। तुम तो दिन रात यही बकते रहते हो।" मुनिया झिड़क देती है। मुनिया की यह झिड़की उसे बहुत अच्छी लगती है। वह अपने

कमर के फेंटे से बीडी निकालता है। चूल्हे से एक जलती हुई चिनगारी खींचकर एक ही साथ दो बीडी सुलगाता है। एक खुद पीने लगता है और एक झुनिया की ओर बढ़ाता है, "मैं अभी पी चुकी हू।" कहते हुए झुनिया ना-नूकुर करने लगती है। लेकिन वह जबरन झुनिया को बीडी थमा देत है। वह चुपचाप पीने लगती है। बीडी के दो-चार कश खींचने के बा सोमारू कहता है, "झुनिया, जानती हो, कल रात से ही मैं गुस्से के मा जल रहा हू। अगर मेरा वश चलता तो मैं राणा बहादुर के उस शहरि छोकरे की एक आख निकाल लेता।"

"क्यों ? उसने तुमसे कुछ कहा क्या ?"

"अरे, मुझको क्या कहेगा ? वह आख फाड-फाडकर तुझको दे रहा था।"

"तो इससे तुमको गुस्सा क्यों आया ?"

"तुम नहीं समझोगी झुनिया। भले ही तुम मुझको जो सम लेकिन मेरी आखो के सामने कोई तुझे आंखें फाड-फाडकर देखे, य बर्दाश्त नहीं करूंगा।"

"तो क्या करोगे ? घर में उतना अनाज तो नहीं है कि ब बेटियों की तरह मैं घर में छिपी रहूगी। रोजी-मजूरी के लिए खेत-ख हान में जाना ही पडेगा। फिर तुम किसको रोकोगे ? जोगिंदर, हरना तुम किस-किसको रोक सकते हो ?"

झुनिया की इस बात से सोमारू का माथा झुक जाता है। सचमु किसीको नहीं रोक सकता। वह खून का घूट पीते हुए माथा ऊपर र है। फिर कहता है, "लेकिन झुनिया, मुझसे शादी के लिए तू सिर्फ कह दे। इसके बाद देख, मैं क्या करता हूं।"

झुनिया हसने लगती है। हसते हुए कहती है, "तुम्हारा दिमाग हो गया है। भला गाव मे ही शादी होती है ! और तुम तो रिश्ते लगोगे।"

सोमारू गभीर हो जाता है। कहता है, "झुनिया, आदमी रि लेकर जन्म नहीं लेता है। रिश्ते यहा बनाए जाते हैं। क्या हम प नहीं बन सकते हैं ?"

"हटो भी ऐसी-वैसी बात मत कहो। मुझको शर्म आती है। और मुनिया आंचल से अपना आधा मुंह ढक लेती है। मुनिया का यह रूप जानलेवा होता है। मोमाक उसके इस रूप पर कुर्बान हो जाता है। उससे रहा नहीं जाता। वह एक बार फिर गिड़गिड़ाते हुए कहता है "मेरी मुनिया, तू सिर्फ हां कह दे। सिर्फ तेरे हां कहने की देर है। फिर तू देखना कितनी जल्दी इस गांव के जल्लादों से मैं तुझे अलग कर देता हूं।"

"कैसे अलग कर लोगे ? मुनिया अनजान बनते हुए उससे पूछती है।

वह कहता है 'यहां से लेकर तुमको भाग जाऊंगा।

"भागकर कहां जाओगे ?

"किसी दूसरे गांव में या शहर में।

'तो वहां जल्लाद नहीं होंगे ?

"होंगे लेकिन मैं तुझे घर से बाहर नहीं निकलने दूंगा। मैं खुद कमाऊंगा और हम दोनों खाएंगे।"

इस बार मुनिया फिर हंसती है। कहती है 'तुम बड़े मूर्ख हो। सिर्फ सपने देखा करते हो। मैं कई बार तुमसे कह चुकी हूं कि यह सब सोचकर बेकार में अपना दिमाग मत खपाया करो। लेकिन तुम मानते ही नहीं हो।"

एक क्षण के लिए वह चुप हो जाता है। उसे बीड़ी पीने की तलब महसूस होती है। वह पुनः दो बीड़ी सुलगाता है। इस बार एकदम आसानी से मुनिया उससे बीड़ी लेकर पीने लगती है। उसे मुनिया के इस व्यवहार से काफी बल मिलता है। वह खिसककर मुनिया के एकदम करीब आ जाता है। फिर प्यार से मुनिया की हथेली अपने हाथों में लेने की कोशिश करता है। 'बापू आ जाएंगे।" कहते हुए मुनिया झिझककर उससे दूर हट जाती है। वह खड़ा हो जाता है। काफी समय गुजर गया। अब वह चलेगा। लेकिन चलने से पहले हर बार की तरह इस बार भी मोमाक अपनी कमर में लिपटी धोती के फेंटे से एक पचीसी बीड़ी (पचीस बीड़ियों का एक बण्डल) तथा माचिस की एक डिबिया निकालकर मुनिया के हाथ में थमाने लगता है। मुनिया नहीं लेती है। इनकार करती है 'पहले तो तुम बराबर यह सब क्यों लाते हो ? मैं नहीं लूंगी।"

"सोचता हूं तुम अब बीड़ी अधिक पीने लगी हो इसीसे लेता आया

हू ।"

"लेकिन मैं नहीं लूगी ।" झुनिया तुनककर अलग हट जाती है।

"देखता हू, तुम कैसे नहीं लोगी !" और सोमारू आगे बढ़कर झुनिया के आचल के छोर मे जबरन बीडी का बण्डल और माचिस की डिबिया बाध देता है। लेकिन सोमारू जब चलने लगता है, तब झुनिया कहती है, "देखो, अब से यह सब मत लाना। नहीं तो पक्की कह रही हू, अब कभी नहीं लूगी।"

"ठीक है, मत लेना।" सोमारू कहता है, "मैं आगन मे चूल्हे के पास रख दूगा। जिसे पीने की जरूरत पड़ेगी, उसके काम आएगी।"

सोमारू चला गया और झुनिया सोच मे डूब गई। ऐसा हर बार होता है। देर तक बतियाने के बाद जब सोमारू चला जाता है, चूल्हे के पास घंटो गमगीन बैठी झुनिया सोच मे डूबी रहती है। यह सोमारू कितना भोला-भाला है और उसे कितना मानता है! लेकिन सोमारू मूर्ख भी तो एक नबर का है। अब उसके पास क्या रखा है कि सोमारू उसके ऊपर मरता है! उससे अलग वह रहती है, तो सोमारू सब कुछ देख-सुन लेता है। उसे अपनाने के बाद हरनाम, जोगिदर और इसी तरह के लोगो का उसके पास आना सोमारू कैसे देखेगा? और वे लोग उसकी जवानी रहने तक आएगे ही। उनको रोकने की शक्ति और क्षमता सोमारू मे नहीं है। झुनिया सोचती है कि कल सोमारू को वह डाटेगी। कहेगी, 'यह प्यार-प्यार की बात अब से तुम मुझसे नहीं बतियाना। तुम अलग, मैं अलग। बेकार की बात कर-करके अपना तो दिमाग खराब करते ही हो, मुझे भी सोचते रहने की बीमारी देकर पागल बनाना चाहते हो!'

झुनिया चूल्हे से हडिया उतार लेती है। भात पक गया है। वह हडिया के ऊपर ढक्कन रख कटोरे मे माड पसारती है। अब हडिया के भीतर भात मे छिपे आलुओ को ढूढ-ढूढकर निकालती है। सभी आलू निकाल चुकने के बाद वह उन्हे छीलकर चोखा बनाने लगती है। थोड़ा नमक-तेल के साथ-साथ चूल्हे मे खोसकर पकाई गई एक सूखी लाल मिरचाई को वह टुकडे-टुकडे करके चोखा मे डाल देती है। खूब अच्छी तरह चोखा मीसकर स्वाद जानने के लिए वह एक छोटी-सी गोली अपने

मुंह में फेंकती है। उसका मुंह पानी से भर आता है। वह तेजी से चटखारें लेने लगती है। पिछले कई दिनों के बाद आज इतना बढ़िया चोखा बन पाया है। वह आवाज देकर हरिहर को पुकारती है। दिन भर का भूखा हरिहर आ धमकता है। वह हरिहर के सामने खाना परोस देती है। हरिहर बड़े-बड़े कौर जल्दी-जल्दी निगलने लगता है। वह भी हरिहर की तरह ही जल्दी-जल्दी खाती है। उसे याद है एक बार हरिहर का दांत दर्द कर रहा था। वह भी हरिहर के साथ-साथ कस्बे के डाक्टर के पास गई थी। डाक्टर ने हरिहर से कहा था कि तुम्हारे दांत बहुत कमजोर हो गए हैं। अब शीघ्र ही टूटेंगे। तुमने अपने दांतों का इस्तेमाल ठीक से नहीं किया है। मुंह में बत्तीस दांत होते हैं। इसीलिए हर कौर को बत्तीस बार चबा कर निगलना चाहिए। लेकिन खाना खाते वक्त डाक्टर की यह बात मुनिया को एकदम फालतू लगती है। दिन भर के भूखे पेट को इतना धैर्य नहीं होता कि चबाने के लिए कौर को देर तक मुंह में छोड़ दे। अपनी आग शांत होने तक पेट ताबड़तोड़ कौर को निगलते जाने के लिए बाध्य किए रहता है। पेट भर खाने के बाद ही मन को शांति मिलती है।

खाना खा चुकने के बाद मुनिया घर और आंगन की सभी चीजें तोपने-ढांकने लगी। इस क्रम में उसे कुछ देर हो गई। इस बीच हरिहर दरवाजे में सो चुका था। वह भी अपने स्थान पर जाकर सो गई।

वह अंदाज लगाती है बापू सो चुके हैं। दिन भर के थके और शरीर से बूढ़े हो चले बापू शाम को शीघ्र ही सो जाते हैं। उसकी भी पलकें झपकने लगती हैं। शाम को खाना खाने के बाद उसे भी नींद जल्द ही आ जाती है। लेकिन आज वह सो नहीं पाती है। अकारण जागी रहती है। उसके मन में सुबह से ही इस बात की आशंका बनी हुई है कि आज रात हरनाम जरूर आएगा। काफी दिनों बाद जेल से छूटकर आया है। पापी जेल से छूटकर आने पर भी अपनी आदत नहीं छोड़ता है। लगता है, इस कसाई से अब जान छूटने को नहीं। फिर सोचती है मुनिया कि यहाँ कसाई सिर्फ यह ही नहीं है उसके लिए तो इस गांव में अनेक कसाई हैं। एक के जाने के बाद दूसरा तैनात रहता है।

वह अपनी झपक रही पलकों को बंद नहीं होने देती है। जब भी उसकी पलकें मूंदती हैं, उसे लगता है, हरनाम आ ... के

सामने ही उसे जगाने लगा है। वह आखें खोल देती है। सोचती है, जगी रहेगी तो कम से कम बाबू के सामने की बेइज्जती से तो बचेगी। और सचमुच कुछ क्षणों के बाद वही होता है, जिसका उसे भय था। बाहर की दीवार को फादकर हरनाम आगन मे आ गया। वह चुपके से उठकर आगन मे आ गई। जानती है, नही जाएगी तो यह हरामी बाबू के सामने से ही उसे खीच ले जाएगा।

झुनिया को उबकाई आने लगती है। हरनाम के मुह मे उठ रही शराब की दुर्गंध उसके नथुनो मे भर जाती है। उसका मन कैसा तो हो जाता है। फिर भी वह किसी तरह अपने को नियत्रित कर आगे बढती है और हरनाम के आने से ही, लाश बन गए अपने शरीर को उसके हवाले कर देती है।

रात अधिया जाने तक हरनाम की भूख मिटती है। साथ ही उसके नशे की खुमारी भी छट जाती है। वह दीवार फादकर कही चला जाता है। झुनिया अब सहज होती है। वह पूर्ववत् अपनी जगह आकर सो रहती है। सोने से पहले एक बीडी सुलगाती है। उसे कुछ-कुछ थकान महसूस होती है। बीडी का आखिरी कश लेते-लेते उसकी पलकें ढपने लगती हैं। वह बीडी फेंककर करवट बदल लेती है। सोचती है, एक-दो घटा आराम कर ले, क्योंकि रोज की तरह रात के अतिम पहर में कटनी के लिए बाबू जगाएगे ही।

जिस तरह हरनाम के आने की खबर सुबह के तडके ही पूरे गाव मे फैल गई थी, उसी तरह आज दूसरी सुबह सनसनी की तरह यह खबर पूरे गाव मे दौड गई है कि रात मे राणा बहादुरसिह के खलिहान से गेहू के पचास बोझे गायब हो गए। भैयाजी के दालान पर, साबजी की मडई पर, बरगद के नीचे, दुसाध टोली के पीपल के पास मुख्य रूप से इसी विषय की चर्चा शुरू हो गई थी। कुछ मनचले टाइप के लोग राणा बहादुरसिह के खलिहान का मुआयना करने के लिए भी निकल गए हैं। गाव की प्राय सभी बैठको पर इस विषय को सुनाया जा रहा है। लोग अपने-अपने विचार और अपने-अपने ढग से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर

रहे हैं। चूंकि हरनाम के आने के बाद यह घटना घटी है। इसीलिए बहुत लोगों के विचार एक-दूसरे से मिलते हैं। लेकिन जोगिंदर का विचार इन सारों से बिल्कुल अलग है। सावजी की मड़ई पर कुछ लोगों के बीच अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जोगिंदर कहता है, 'यह हरनाम को बदनाम करने की चाल है। इस गांव में चोर डाकू और बदमाश बहुत भर गए हैं। वे छुपे रुस्तम रहकर दूसरों के माथे शिकार खेलना चाहते हैं। अब जबकि हरनाम आ गया है इन्होंने चोरी-बदनामी शुरू कर दी है। वे जानते हैं, गांव में कहीं भी चोरी होगी कोई चोरी करेगा, नाम हरनाम का होगा।

जोगिंदर की इस प्रतिक्रिया का सावजी की मड़ई पर कोई विरोध नहीं करता है। दरअसल सावजी की मड़ई पर बैठने वाले अधिकांश लोग हरनाम के एजेण्ट ही होते हैं। हरनाम की भी बैठक अक्सर सावजी की मड़ई पर ही जमती है। लोग चुपचाप जोगिंदर की बात पर हामी भर देते हैं। वहां से उठकर जोगिंदर सीधे भैयाजी के दालान पर आता है। भैयाजी के दालान पर कुछ क्षणों तक लोगों की बातें सुनने के बाद वह कहता है, "हर गांव की यही स्थिति है। चोरी बदमाशी और जाल-फरेबी अब पहले से बहुत अधिक बढ़ गई है। इसी से चुनाव के समय में सतर्क हो जाने की आवश्यकता है। अपने क्षेत्र से किस व्यक्ति को विजयी बनाया जाए, यह समझना बहुत जरूरी है और जोगिंदर लगे हाथों अपने भावी एम० एल० ए० का प्रचार शुरू कर देता है।

भैयाजी के दालान पर कुछ क्षणों तक अपना प्रचार भाषण देने के बाद जोगिंदर दुसाध टोली के पीपल के पास आ गया। डोम चमार दुसाध और इसी तरह की छोटी जातियों के लोग यहां बैठे हैं। जोगिंदर को देखते ही सब उसके करीब आ गए। जोगिंदर चेतावनी देते हुए कहता है "देखना, इस सबके बारे में तुम लोग कहीं कुछ न बोलना। अब यह गांव एकदम बदल गया है। गरीब की इज्जत समझने वाला कोई नहीं है। भैयाजी के दालान पर तुम लोगों में से कई आदमियों का नाम लिया जा रहा था। लेकिन मैंने डांट दिया।"

वे सब हाथ जोड़कर जोगिंदर के पैर पर गिर जाते हैं। वह कहता

है, "इतमीनान से रहो। मेरे रहते तुम लोगों का कुछ नही होगा।" वे सब गद्गद हो जाते हैं। अब जोगिंदर वहा से चल देता है। हालांकि यहा से राणा बहादुरसिंह के घर जाने की उसने योजना बनाई थी। लेकिन उसके कदम अपने घर जाने वाली गली में मुड गए। वह सोचता है, इस समय राणा बहादुरसिंह के पास कई लोग जुटे होंगे। उसका जाना ठीक नही रहेगा। दोपहर को वे अकेले होंगे। तब उसका जाना अच्छा रहेगा।

दोपहर तक का समय जोगिंदर बडी मुश्किल से काटता है। इस समय राणा बहादुरसिंह के घर जाना उसके लिए कई दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है। अब राणा बहादुरसिंह से उसे सिर्फ आर्थिक सुविधाए ही नही मिलेंगी, अब विमली भी आ गई है"! इस बार वह विमली से कैसे निबटेगा, सोचने लगता है। विमली से अपने घनिष्ठ सम्बन्ध की शुरुआत वह कहा से करे, उसे कुछ भी समझ मे नही आ रहा है। असल मे किसी लडकी से सम्बन्ध बनाने के लिए देर तक प्रयत्न करना तथा प्रेम-जाल बिछाना उसे आता ही नही है। वह तत्कालिक इच्छापूर्ति मे विश्वास रखता है। झुनिया की तरह किसी भी लडकी से मिलते ही उसपर अपना अधिकार जमा लेना ही वह अपनी मर्दानगी समझता है।

दुपहरिया गुजरने मे पहले ही जोगिंदर राणा बहादुरसिंह के घर की ओर बढा। जैसाकि उसने अदाज लगाया था, राणा बहादुरसिंह उसे एकात मे ही मिले। चोरी के कारण आए सहानुभूति दिखाने वाले लोग जा चुके थे। राणा बहादुरसिंह जोगिंदर को लेकर नीचे ड्योढी के अन्दर चले गए। फिर ओसारे के पलग पर इतमीनान से उसके साथ बैठ गए। इससे पहले कि बातचीत शुरू हो, जोगिंदर राणा बहादुरसिंह की नजर बचाकर आगन और ओसारे मे हर जगह विमली को ढूढता है। विमली उसे कही नजर नही आती और न कोई अन्य ही। अब वह बातचीत शुरू करता है, "चाचा, यह काम साला हरनाम का है। उसके आते ही मुझे लगा था कि अब कोई न कोई खुराफात जरूर होगी। देखिए, इस बार कसकर उसका जवाब देना है, नही तो उसका मन बढ जाएगा। आपको कुछ नही करना है। सिर्फ तैनात रहना है। सब मैं देख लूगा। आखिर किस दिन के लिए मैं राजनीति करता हू ?"

राणा बहादुरसिंह जोगिंदर की बात से बहुत खुश हो उठते हैं। थोड़ा और खिसककर उसके करीब आ बैठते हैं "बेटा तुम मेरा दायां हाथ हो। तुम्हारे बल पर ही तो हरजाम स समर छेड़ता हूं, नहीं तो इस बुढ़ापे मफ़री से लगने पर इज्जत की बर्बादी ही है।

'नहीं चाचा इज्जत की बर्बादी कुछ नहीं है। जल्दी जल्दी जेल से छूट जाने के कारण इस साले का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया है। अबकी बार अगर इस साले को काला पानी की सजा न दिलवा दी तो फिर मेरा नाम जोगिंदर नहीं।" यह कहते हुए जोगिंदर थोड़ा तनकर बैठ गया। इस समय राणा बहादुरसिंह को वह अपना परम आत्मीय नजर आ रहा था। वे आवाज लगाते हैं "बिमली भी बिमली!"

छत वाली कोठरी से बहुत महीन आवाज आती है "जी?'

"अरे नीचे आओ देखो जोगिंदर आया है। इसे कुछ खिलाओगी पिलाओगी नहीं?

बिमली फुर्ती से नीचे उतर आती है। बस जोगिंदर को यही चाहिए। वह बिमली को देखता रहेगा। उसका खाना-पीना सब पूरा हो जाएगा। उसके लिए यह एक सुखद संयोग ही है कि ऐन बिमली के छत से नीचे उत रते ही दालान से राणा बहादुरसिंह की बुलाहट आ जाती है। शायद कोई उनसे मिलने आया है। वे बाहर चले गए। अब जोगिंदर अकेला बचता है। जानता है बिमली की मां (उसके राजनीतिक संघर्षों की चाची) सर्दी-बुखार स कमरे में बेखबर सोई हागी। वह बिमली स पूछता है 'निर्मिम कहां है?

"छत पर सोए हैं। बिमली कहती है और स्टोव जलाकर जोगिंदर के लिए हलवा बनाने लगती है।

जोगिंदर कहता है, 'अरे, यह सब हलवा बेमतलब क्यों बना रही हो? मैं कोई मेहमान थोड़े ही हूं। ऐसे ही अगर हो सके तो चाय बना दो।

बिमली मुस्कराते हुए कहती है "चाय नाश्ते के बाद ही पी जाती है।

जोगिंदर बात आगे बढ़ाने के लिए कहता है "लेकिन यह शहर का नियम है। हम गांव वाले कभी भी चाय पी लेते हैं।"

एक क्षण को विमली चुप रहती है। फिर कहती है, "अब शहर बहु तेजी से गावो की ओर पसरने लगा है।" इस बार विमली के अधर कुछ ज्यादा ही फैल जाते हैं। जोगिंदर भी हस पड़ता है। लेकिन अदर ही अदर जोगिंदर को एक झटका लगता है। कुछ ही साल शहर मे रहने के बाद यह लडकी कितनी खुल चुकी है!

"यहा तो मन नहीं लग रहा होगा ?" जोगिंदर पूछता है।

"हा, शुरू-शुरू में कुछ उखडा-उखडा लग रहा है। लेकिन धीरे-धीरे व एडजस्ट कर लूगी। आखिर रहना तो यही है। फिलहाल मन लगाने लिए कुछ उपन्यास लेती आई हू।"

"अच्छा, तो उपन्यास वगैरह पढने में रुचि रखती हो ?"

वह सिर हिलाकर 'हा' की सूचना देती है। वस, जोगिंदर अपने राज तिक झोले से 'सिर्फ वयस्को के लिए' वाली मुहर लगी एक किताब सकी ओर बढा देता है। वह किताव को लेकर उलट-पलटकर देखती । फिर जवरन अपनी हसी को रोकते हुए वह किताव जोगिंदर को ौटा देती है। कहती है, "इस किताव को तो मैं दो साल पहले ही पढ़ ुकी हू।"

विमली की यह वात सुनते ही जोगिंदर को मन ही मन एक जवर्दस्त दमा पहुचता है। उसके ख्याल चूर-चूर हो जाते हैं। विमली को उसने जतनी भोली समझने की कोशिश की थी, वह उसकी भूल थी। विमली हुत तेज-तर्रार लडकी है। खैर । इसमे कोई फर्क पडने को नहीं। वह वमली से भी अधिक पढी-लिखी और तेज-तर्रार लडकियों से निवट चुका । हा, इस तरह की लडकियो मे समय वहुत अधिक लगता है।

इससे पहले कि जोगिंदर कोई और रास्ता अख्तियार करे, दालान से ाणा वहादुरसिह आ गए। इस वीच विमली भी हलवा वना चुकी थी। ह अपने पिता और जोगिंदर को हलवे की प्लेट थमाती है। ठीक इसी मय छत से निखिल भी नीचे उतर आया। जोगिंदर किसी पूर्व परि-नत दोस्त की तरह निखिल से हाथ मिलाता है। वैसे जोगिंदर उम्र मे ाखिल मे एक दो साल वडा जरूर है, लेकिन देखने-सुनने मे निखिल ही सने वडा और उम्रदार लगता है। विमली निखिल को भी नाश्ता देती

है। लेकिन निखिल नाश्ता नहीं करता। हां अपने पिता और जोगिंदर को यह चाय का साथ दे देता है।

गांव आने के कुछ समय बाद ही निखिल गांव की रंगीनियों और गांव की राजनीति में रुचि लेने लगा। असल में अब उसे स्थायी रूप से यहीं रहना है तथा खेती-गृहस्थी का सब कारोबार संभालना है। पिताजी की उम्र अब ढल चुकी है। उनकी जिन्दगी में ही उसे सब कुछ देख-समझ लेना चाहिए। और निखिल अपने इस दायित्व के प्रति काफी हद तक सचेत भी है। वह जब से गांव आया है खेती-गृहस्थी सम्बन्धी तमाम समस्याओं को काफी गहराई से समझ रहा है। पिताजी को इन समस्याओं से वह बिल्कुल मुक्त कर देना चाहता है। अब पिताजी की उदासी और परेशानी उससे देखी नहीं जाती है। खलिहान से गेहूं चोरी हो जाने के कारण उसके पिताजी बहुत उदास हो गए थे। उनकी यह उदासी उसे बुरी तरह कचोटने लगी थी। उससे रहा नहीं गया था। एक शाम उसने पिताजी से कहा 'पिताजी, आप इतने उदास क्यों हैं? देखिए, खेती बारी सम्बन्धी किसी भी समस्या के बारे में अब आपको नहीं सोचना है अब आप चुपचाप आराम कीजिए। सब मैं संभालूंगा। हो सकता है नया होने के कारण शुरू-शुरू में मुझे कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़े। लेकिन इससे क्या? कठिनाइयों के बाद ही तो रास्ता मिलता है।"

राणा बहादुरसिंह उस समय कोई जवाब नहीं दे पाए थे। परन्तु मन ही मन अपने बेटे की गर्वोक्ति पर उन्हें आन्तरिक संतोष ही मिला था। लेकिन उसी समय एक जटिल सवाल बना एक व्यक्ति उनके मानस में कौंधने लगा। और वह सवालनुमा आदमी हरनाम था। उन्होंने सोचा कि यह हरनाम जब तक इस गांव में रहेगा उनका लड़का शांति से खेती गृहस्थी नहीं करवा पाएगा। किन्तु निखिल की सोच उनसे बिल्कुल भिन्न है। गांव में पन्द्रह दिन गुजरते-गुजरते ही उसे सब कुछ एकदम सहज और आसान लगने लगा है। कहीं कोई उलझन और दुश्वारी नजर नहीं आई है। उसे अपने पिताजी पर हंसी आ रही है। आखिर यहां सब कुछ इतनी सहजता से हो जाने लायक ही यहां झूठमूठ में बेकार का झगड़ा-टकरार

मोल लेने से क्या फायदा ?

एक दोपहर को निखिल भुनिया के घर की ओर चल पडा । हालांकि इससे पहले वह कई दफा भुनिया के घर तथा उसके आसपास के लोगो का मुआयना कर चुका है। पहली भेंट के बाद से ही झुनिया उसकी आखो मे गड गई है । झुनिया का सलोना रूप और गठीला बदन देख वह अन्दर ही अन्दर मचलने लगा है। रूप का सलोनापन और बदन का कसाव बहुत कम ही लडकियो मे पाया जाता है। लेकिन भुनिया इन दोनो आकर्षणो का बेमिसाल नमूना है।

भुनिया के घर के पास पहुचने पर निखिल आश्वस्त हो गया कि वह सही समय पर पहुचा है। दरअसल, यहा आने से पहले निखिल यह अच्छी तरह पता लगा चुका था कि हरिहर की अनुपस्थिति का समय कब-कब होता है।

अन्दर से भिडके भुनिया के घर के दरवाजे-पर निखिल हाथ की थाप लगाता है।

"कौन ?" कटनी वाली झुनिया की वही मादक आवाज उसके कानो में गूज उठती है।

"मैं हू।" निखिल सहमते हुए बोलता है।

"मैं कौन ?" शायद झुनिया को आवाज पहचान मे नही आई है।

"खोलकर देखो।" निखिल अपनी आवाज को और साफ करता है।

भुनिया ने दरवाजा खोल दिया। अपने सामने निखिल को पा वह हक्का-बक्का रह गई। फिर जल्दी ही अपने पर काबू पा ली उसने । उसे याद आता है, पहली दफा राणा बहादुरसिंह भी उसके यहा आए थे, तो वह इसी तरह हक्का-बक्का हो गई थी।

"कुछ काम है ?" झुनिया पूछती है।

"हा, काम तो जरूर है। लेकिन सोचा कि काम के साथ-साथ जरा तुम्हारे घर को भी देख लू।"

"आप ! ··आपने मेरा घर नहीं देखा था ? आप तो यही जन्मे-पले हैं।"

'बचपन मे देखा होगा। याद नहीं। हा, अब देखूगा।" और निखिल थोडा तनकर खडा होते हुए अपनी बेशर्म निगाहो से भुनिया को

पूरन लगा। पर यह मुनिया के लिए कोई नई बात नहीं है। इस तरह की बेशर्म आँखों का सामना करते-करते वह अभ्यस्त हो गई है। हाँ उसे निखिल के व्यवहार से राजा बहादुरसिंह की याद आ जाती है। राजा बहादुर सिंह की आँखें भी निखिल की तरह ही हैं और इसी तरह बेशर्मी से वह भी उसे टोका करते थे।

"बैठने को नहीं कहोगी क्या ? निखिल अपनी बात को बदलता है।

"अच्छा अब तक तुम खड़े हो बैठो-बैठो !" मुनिया निखिल को 'आप' नहीं कहकर तुम ही कहती है। असल में वह किसीको 'आप' नहीं कहती उसे 'आप' कहना आता ही नहीं है। वह राजा बहादुरसिंह और अपने बापू को तुम ही कहती है। साथ ही हरलाल और सोमारू को भी।

निखिल कोने में रखी खटिया को थोड़ा और आगे खींचकर बैठ गया। फिर खूबसूरत बूट और मोजे में बंधे अपने पाँवों को उसने आराम की स्थिति में आगे फैला दिया।

"कहो क्या काम है ?" मुनिया फिर पूछती है।

क्यों बैठने नहीं दोगी क्या ? अपना घर नहीं दिखाओगी ? अरे, कुछ खिलाओ-पिलाओ।" निखिल एकदम बेझिझक हो उठता है। निखिल की इस बेझिझकता पर अवाक हो वह निखिल को देखने लगती है। निखिल फिर कहता है, "क्यों नहीं खिलाओगी ? 'अच्छा। कुछ खिलाने लायक नहीं है। तो लो " निखिल अपनी जेब से दस का एक नोट बढ़ाते हुए कहता है "कसबे के रामरतन साव की दुकान से एक किलो पेड़ा ले आओ। सुनने में आया है, आजकल वह पेड़ा भी बेचने लगा है।

मुनिया उसके हाथ से नोट नहीं लेती है। बुत की तरह चुपचाप खड़ी रहती है। वह फिर कहता है लो सोच क्या रही हो ? जल्दी लाओ !

अबकी बार मुनिया उसके हाथ से नोट ले लेती है और दरवाजे से बाहर निकल जाती है। दरवाजे से बाहर निकलकर वह दरवाजा खींचकर भिड़का देती है। दरअसल आस-पास के लोगों की नजरों में अब वह तनिक भी बेदाग नहीं रह गई है। लेकिन इसके लिए उसका कसूर ही क्या है ? वह कर ही क्या सकती है ? वह जानती है, उसकी बिरादरी की कोई भी लड़की इस गाँव में बेदाग नहीं बची है। लेकिन हाँ, वे सब उसकी तरह

वदनाम नही हुई हैं। उनकी मा हैं। भाई हैं। वे वहुत हद तक सुरक्षित हैं। उनके अनुपात में वह एक दम असुरक्षित है। वह जानवूझकर वावू से कुछ भी नही कह पाती है। असहाय वावू उसकी कोई भी रक्षा नही कर पाएगे, उलटे उसकी परेशानिया और वढ जाएगी।

वह सोचती है, अगर वावू आ जाएगे तो निखिल को देखकर क्या कहेंगे ? वह तेजी से सावजी की दुकान की ओर वढ जाती है, ताकि पेडा लेकर शीघ्र वापस लौट जाए और 'क्या काम है ?' पूछकर निखिल को जल्द ही विदा कर दे।

इधर निखिल उसके चले जाने के वाद मन ही मन मुस्कराता है। चलो, शुरुआत वहुत अच्छी हुई। शुरू मे ही मुह मीठा कर लेगी तो फिर कभी झिकझिक नहीं करेगी।

निखिल धीरे से उठकर दरवाजे मे वाहर हो गया। फिर वाहर होकर दरवाजा उमी तरह भिडकाकर वह तेज कदमो से अपने घर की ओर चल पडा। सोचता है, झुनिया पेडा लेकर आएगी, तो उसे न पाकर चौंक उठेगी। फिर वाहर-भीतर हर जगह ढूढेगी। सोचेगी, कहा चला गया ? क्यो चला गया ? शाम तक उसीके वारे मे सोचती रहेगी। फिर रात मे पेडा खाना शुरू कर देगी। निखिल सोचता है कि अगली वार झुनिया से मिलते ही सवसे पहले वह यही कहेगा, 'झुनिया, उस रोज अजव हो गया। जिस समय तुम वाहर निकलीं, उसी समय मेरा नौकर मुझे खोजते खोजते आ गया। घर पर एक वहुत जरूरी काम था। वस, मैं चला गया। सोचा, चाहे मैं खाऊ या तुम, कोई फर्क पडने का नहीं।'

निखिल घर पहुचकर सीधा छत पर चला गया। फिर अपने कमरे मे जाकर विस्तरे पर लेट गया। सोचने लगा, अव झुनिया शीघ्र ही हाथ मे आ जाएगी। उसे खुशी होती है, गाव मे सव कुछ कितना सहज और आसान होता है!

वह एक सिगरेट सुलगाकर वैठ जाता है। सिगरेट के आखिरी कश के साथ ही हरनाम की आकृति उसके दिमाग मे उभर आती है। वह सोचता है, इस हरनाम नामक व्यक्ति से वह कैसे निपटे ? उसे लगता है, इस व्यक्ति को ठीक कर लेने के वाद ही वह इस गांव मे निष्कटक राज

कर सकता है। वह अपने माथे पर जोर देता है नहीं झगड़ा-तकरार से यह निपटारा नहीं होने का। चोर डाकू के रूप में हरनाम बदनाम हो चुका है। उसने जिन्दगी भर यही सब कुछ सीखा है। इस रास्ते उससे पार नहीं पाया जा सकता।

अचानक निखिल को एक अच्छी बात सूझती है। वह सोचता है, गरीब घर का हरनाम आखिर रुपये-पैसे के लिए ही तो यह सब कुछ कर रहा है। क्यों न कुछ ले-देकर समूची खेती-बारी का मैनेजर उसे ही बना दिया जाए। इससे बहुत फायदे होंगे। उसके परिवार से दुश्मनी तो खत्म हो ही जाएगी। साथ ही हरनाम के नाम पर उसकी फसल बर्बाद करने वाले चोरों की दाल भी न गलेगी। यही होगा न कि हरनाम को कुछ देना पड़ेगा। तो उससे क्या? उससे अधिक तो बर्बाद हो जाता है।

लेकिन पुन एक सवाल खड़ा हो गया निखिल के सामने क्या हरनाम यह स्वीकार करेगा? क्या अपनी पिछली घटनाओं को वह भूल जाएगा? फिर निखिल की ओर से ही जवाब मिलता है, 'हां ऐसा हो सकता है। दुश्मनी उसकी पिताजी से है, उससे नहीं। वह उसके लिए तो नया है। हो सकता है उसकी बात को वह भी नये सिरे से ले।

रात को खाना खाते वक्त मां पिताजी और बिमली के सामने निखिल यह प्रस्ताव रखता है। शुरू-शुरू में राणा बहादुरसिंह को यह बात ही कुछ अजीब लगती है। लेकिन शीघ्र ही उन्हें यह बात जंच जाती है। वे कहते हैं "अगर ऐसा हो सके तब तो बहुत ठीक है।

बिमली निखिल की इस उक्ति की भूरि भूरि प्रशंसा करती है। वह मन ही मन भैया की इस तेज बुद्धि पर गौरवान्वित हो उठती है। उससे रहा नहीं जाता। कहती है, 'जितनी जल्दी हो सके यह कर लो भैया। इससे सारा झगड़ा ही निपट जाएगा और इससे फायदे भी बहुत हैं।"

निखिल के इस प्रस्ताव पर मां भी अपना समर्थन देती है। वह बाग बाग हो जाता है। उसे विश्वास था इस प्रस्ताव को सब पसंद करेंगे। रात को सोते वक्त वह सोचता है, अगली सुबह हरनाम से उसे मिलना है।

निश्चिन्त होकर सोने के कारण सुबह काफी देर बाद निखिल की नींद

खुली। वह अपने शहरी जीवन की ही भाति यहा भी बिस्तर छोडने से पहले ही चाय पीता है। चाय पीने के बाद गुसलखाने जाता है। फिर हाथ-मुह धोता है। फिर लगे हाथों तत्काल स्नान भी कर लेता है। अब नाश्ते पर बैठता है। नाश्ता करते वक्त ही वह सोचता है, हरनाम के पास दुपहरिया मे जाना ही ठीक रहेगा। ठीक उसी समय, जिस समय वह झुनिया के पास गया था। ऐसे वार्तालापो के लिए एकात का होना नितात आवश्यक है।

नाश्ता करके निखिल छत पर आ गया। अपने बिछावन पर आराम से लेटते हुए उसने रेडियो खोला। फिल्मी गाने शुरू हो गए। आज इतवार है। विमली पहले से ही रेडियो सीलोन पर लगाकर छोड चुकी है। शीघ्र ही फिल्मी गानो के सहारे उसे झुनिया याद आ जाती है। बदन का कसाव और चेहरे का लावण्य! वह बेचैन हो उठता है। फिर अपने और झुनिया को लेकर दिवा-स्वप्नो मे खो जाता है।

करीब साढे दस के आसपास निखिल को कार के हार्न की आवाज सुनाई पडी। कमरे से बाहर निकलकर उसने नीचे की सडक पर झाका। वहा खडी कार उसे जानी-पहचानी लगी। फिर कार मे बैठा उसे अपना दोस्त प्रकाश नजर आ गया। वह छत से ही चिल्ला पडा, "हैल्लो प्रकाश!"

कार से बाहर निकलकर प्रकाश ने भी उसे देखा और हसकर बोला, "हैल्लो!"

वह तेजी से सीढिया उतरते हुए बाहर आ गया और प्रकाश से गले मिला। प्रकाश को साथ लिए वह घर के अन्दर आ गया। विमली प्रकाश को देखते ही मचल उठी। आगे बढकर प्रकाश के हाथ से उसने बैग ले लिया। निखिल जानता है, विमली उसकी तरह प्रकाश को भी अपना भाई ही समझती है और प्रकाश उसे अपनी बहन ही जानता है। लेकिन यहा निखिल अधकार में है। विमली और प्रकाश के आपसी सबध कुछ और ही हैं। शायद उन्ही सबधो को लेकर प्रकाश यहा आया है। पर पता नही, वह यहा एडजस्ट कर पाएगा भी या नही। वह पटना के कई कारखानो के मालिक का लडका है। उसके रहन-सहन और खान-

पान की व्यवस्था एकदम उच्चस्तरीय है। यहाँ के वातावरण को कुछ घंटे भी वह झेल पाएगा, यह असम्भव ही लगता है।

निखिल प्रकाश का परिचय अपने माँ-बाप से कराता है। बिमली प्रकाश के लिए जल्दी ही कुछ बनाने हेतु स्टोव जलाने लगी। प्रकाश बिमली को रोक देता है। कुछ बनाने नहीं देता। वह अपने साथ ढेर सारे फल और मिठाइयाँ लेता आया है। वह गाड़ी के अन्दर से फल और मिठाइयों की टोकरी मंगवा लेता है।

टोकरी का मुंह खुलते ही बिमली को अपने और प्रकाश के संबंध बुरी तरह याद आने लगते हैं। वह देखती है, प्रकाश अधिकांश फल और मिठाइयाँ वही लेकर आया है जो बिमली को पसंद हैं। मन ही मन बिमली को दुःख होता है कि इतनी जल्दी उसकी पढ़ाई खत्म हो गई। एक क्षण के लिए अपने सुखद अतीत को याद कर वह आहें भर उठती है।

निखिल प्रकाश को ऊपर छत पर ले जाता है। छत पर से ही वह सारा गाँव प्रकाश को दिखाता है। फिर छत पर से ही अपने प्रसिद्ध बाबा 'बिगहवा' बाग की ओर भी उंगली से इशारा करके उसे बताता है। इसके बाद कमरे में उसे अपने पास बैठाकर खूब गप्पें लड़ाता है। फिर दिन का खाना वे सब साथ ही खाते हैं। लेकिन प्रकाश को यह सब अच्छा नहीं लगता। वह बिमली से एकांत में मिलना चाहता है। पर उसे लगता है कि यहाँ उस तरह का माहौल ही नहीं है। यहाँ वह चाहकर भी बिमली से नहीं मिल सकता। हार-थककर वह खाना खाते वक्त ही सबों के सामने बिमली से पूछता है 'यहाँ मन लग रहा है ?"

'अरे यहाँ मन क्यों नहीं लगेगा ! यही तो जन्मभूमि है।" बिमली तपाक से बोल उठती है। प्रकाश को महसूस होता है कि बिमली राधा बहादुरसिंह और निखिल के पास होने के कारण ही ऐसा कहती है। मगर एकांत में होती तो वह ऐसा कभी नहीं कहती। बिमली की वह बात प्रकाश के कान में अभी तक गूंज रही है। शहर छोड़ते वक्त बिमली रोते हुए प्रकाश से चिपट गई थी और बोली थी 'तुम्हारे पास से गाँव जाने का मन तनिक भी नहीं कर रहा है।'

अब प्रकाश को एक क्षण के लिए भी यहाँ बर्दाश्त नहीं हो पाता है।

कुछ ही क्षणो मे वह यह जान गया है कि यहा विमली से एकात मे भेंट होने की सम्भावना नही है। वह मन ही मन कोई योजना बनाने लगता है। हठात् उसके दिमाग मे एक अच्छी बात आती है। इस समय उसके शहर में रेमन सर्कस आया है। क्यो न इसी बहाने आज निखिल और विमली को वह अपने साथ शहर लेता जाए। हालाकि निखिल के साथ होने मे विमली से वह पूरी तरह नही मिल पाएगा, फिर भी निखिल की नजर से बचकर वह विमली का थोडा-बहुत सान्निध्य तो प्राप्त कर ही लेगा। बस, उसी समय खाना समाप्त होते वक्त प्रकाश अपना यह प्रस्ताव रखता है। निखिल खुशी के मारे उछल पडा। विमली भी अपनी खुशी छिपा नही पाई। वह प्रकाश का मतव्य समझ गई थी।

शाम होने से पहले ही निखिल और विमली प्रकाश की गाडी में बैठकर उसके साथ शहर चल पडे। प्रकाश राणा बहादुरसिह को यह आश्वासन देता है कि कल निखिल और विमली को छोडने के लिए वह यहा तक पुन. आएगा।

गाडी चल पडी। शीघ्र ही गाव पीछे छूट गया है। लेकिन कच्ची सडक अभी समाप्त नही हुई थी। यह कच्ची सडक हसन बाजार कस्बे तक जाती है। फिर वहा पक्की सडक मे मिल जाती है। इसके बाद सीधे आरा। फिर पटना।

कच्ची सडक बहुत ऊबड-खाबड है। गाडी हिचकोले खाती हुई आगे बढती है। अचानक गाडी एक जगह रुक गई। प्रकाश नीचे उतरकर गाडी को चेक करने लगा। उसे अपनी भूल पर पछतावा होता है। वह ड्राइवरो से पूछे बगैर गाडी ले आया है। यह गाडी ठीक नही है। निखिल और विमली भी नीचे उतर आते हैं। प्रकाश, निखिल के साथ गाडी को ठेलने लगता है। बिना ठेले अब गाडी नही चलेगी। लेकिन आगे काफी ऊचाई पर गाडी को चढना है। प्रकाश और निखिल थक जाते हैं। गाडी ऊचाई पर नही चढ पाती है। हारकर वे किसी यात्री की प्रतीक्षा करते हैं। पीछे, गाव के करीब, सडक पर तेजी से आता उन्हे कोई दिखाई पडता है। वे उसका इन्तजार करने लगते हैं।

अब शाम गहरा चली है। वह आने वाला धीरे-धीरे करीब आता

जाता है। फिर एकदम करीब आ जाता है। निखिल उसे पहचान जाता है। वह हरनाम है। निखिल कहता है "हरनाम भैया नमस्ते।"

"नमस्ते ! हरनाम के तेजी से बढ़ते कदम रुक जाते हैं। फिर वह निखिल को पहचानते हुए कहता है "अच्छा निखिल तुम !"

निखिल को महसूस होता है कि हरनाम आश्चर्य में पड़ गया है। दरअसल, हरनाम को स्वप्न में भी इस बात का विश्वास नहीं था कि निखिल उसे नमस्ते करेगा।

"नमस्ते हरनाम भैया !" अब बिमली भी बोलती है। हरनाम मुड़कर बिमली को देखता है। वह उसे पहचान नहीं पाता। निखिल कहता है, "यह बिमली है—मेरी छोटी बहन।"

"अच्छा बिमली !" हरनाम का मुंह खुला का खुला रह जाता है। यह सब कैसे हो रहा है? हरनाम एकदम अचंभित हो उठता है। वह कुछ भी नहीं बोलता। चुपचाप खड़ा रहता है। निखिल कहता है, "भैया जरा गाड़ी में धक्का दो न !"

हरनाम धक्का लगाने लगता है। निखिल और प्रकाश भी उसके साथ लग जाते हैं। गाड़ी ऊंचाई पर चढ़ जाती है। फिर आगे ढलान की ओर बढ़ती है। अब गाड़ी स्टार्ट हो जाती है। प्रकाश बिमली और निखिल गाड़ी में बैठ गए। निखिल हरनाम से पूछता है "भैया, तुमको भी तो आगे चलना है?

"हां।"

"कहां तक चलोगे?"

"आरा तक।

"तब आओ तुम भी बैठ जाओ। आरा उतर जाना। हम लोगों को पटना तक जाना है।"

हरनाम आकर गाड़ी में बैठ गया। उसे यह सब कुछ अजीब आक-स्मिक रूप से भटका हुआ लगा। कहीं यह कोई षडयंत्र और चाल तो नहीं?

वह पूरी तरह चौकन्ना हो जाता है। फिर भी बिमली का गदराया सौंदर्य उसे अपनी ओर आकर्षित किए बगैर नहीं रह पाता है।

गाडी कच्ची सडक पार कर पक्की सडक पकड लेती है। अब सब राहत की सास लेते हैं। सतोष की सास लेते हुए निखिल हरनाम मे कहता है, "भैया, मैं तुमसे मिलने ही वाला था।"

विमली भी इधर ही मुखातिब हो जाती है। वह जान जाती है, निखिल क्या कहेगा।

"मुझसे कुछ काम है क्या ?" हरनाम पूछता है।

"हा, भैया ! बहुत सारा काम है।' पिताजी अब बूढ़े हो चले हैं। मुझको खेती-बारी के मामले मे कुछ आता-जाता नही है। सब तुमको ही सभालना है।"

हरनाम भौचक हो निखिल की ओर ताकने लगता है। उसे अपने कानो पर विश्वास ही नही होता।

"हा, भैया ! अब हम लोगो ने यही तय किया है। सब तुमको ही सभालना होगा।" विमली बोलती है।

हरनाम विमली की ओर ताकता है। विमली की आखो मे उसे आमन्त्रण स्पष्ट रूप से नजर आता है। यह उसके जीवन की पहली घटना है, जब अत्यन्त खूबसूरत, काफी पढी-लिखी, बडी-बडी आखो वाली कोई लडकी उसे ऐसा आमन्त्रण दे रही हो। वह अन्दर से डोल जाता है। कुछ भी बोल नही पाता।

धीरे-धीरे निखिल उसे सब बात बताने लगता है। निखिल बडे कायदे से हरनाम को यह बता देता है कि गाव के ढेर सारे चोर उसीके नाम पर उसकी फसल बर्बाद करते हैं तथा आपस में उन दोनों मे झगडा करा देते हैं। अब उनकी दाल नहीं गलने पाएगी। निखिल हरनाम को सब समझाता है। वह बहुत मुलायम तरीके से हरनाम से यह भी कह देता है कि उसे जब जिस चीज की जितनी भी जरूरत हो, उसके घर आकर ले जाए।

निखिल आरा आते-आते हरनाम को अच्छी तरह अपनी बात समझा चुका है, ऐसा उसे स्वत अनुभव होता है। हालांकि हरनाम ने अब तक कोई जवाब नही दिया है। वह निखिल की बात चुपचाप सुनता आया है। आरा आने पर वह उतर जाता है। निखिल और विमली उसे बारी-बारी से नमस्कार करते हैं। वह विमली की ओर देखता है। फिर गाडी चल

पड़ती है। लेकिन बिमली को लगता है कि हरनाम वहीं खड़ा होकर उसे देख रहा है और तब तक देखेगा जब तक गाड़ी उसकी आंखों से ओझल नहीं हो जाएगी।

पटना से लौटने पर बिमली काफ़ी थक गई थी। वह रात भर सो नहीं पाई थी। सर्कस देखने तथा प्रकाश से बातें करने में उसकी सारी रात यों ही गुजर गई थी। उसकी आंखें उनींदी थीं। उससे अब एक क्षण भी नहीं रहा गया। वह छत वाली कोठरी में जाकर सो गई। नींद आने से पहले वह एक बार हल्के से मुस्कराई। उसे प्रकाश की एक बात याद आ गई थी। प्रकाश ने उससे कहा था कि अब प्राय: हर महीने ही निखिल के साथ सर्कस या सिनेमा देखने के बहाने उसे एक रात के लिए अपने यहां बुलाएगा।

बिमली काफ़ी देर तक सोती रही। सारी दुपहरिया उसने नींद में ही गुजार दी। उसकी नींद शाम के वक्त खुली। वह उठकर बिछावन पर बैठ गई। उसकी बगल वाली चारपाई पर निखिल भी एकदम बेख़बर सोया था। वह उठकर कमरे से बाहर आ गई। छत पर टहलने लगी। अचानक उसे नीचे सड़क पर हरनाम दिखाई दिया। उसने मुस्कराते हुए हाथ जोड़कर हरनाम को नमस्कार किया। हरनाम ने हाथ उठाकर उसके नमस्कार को स्वीकार किया और वहीं खड़ा निर्निमेष दृष्टि से उसे देखता रहा। वह देर तक छत पर ठहर नहीं सकी। नीचे उतर आई।

हरनाम बेचैन है। जब से उसने बिमली के गदराए सौंदर्य को देखा है तथा उसकी आंखों में अपने लिए आमंत्रण महसूस किया है तब से उसे चैन नहीं है। वह घूमते घूमते इस ओर आ गया था। लेकिन यहां भी बिमली का अलसाया रूप नमस्कार की मुद्रा में जुड़े दोनों कोमल हाथ तथा मधुर मुस्कान से उसकी बेचैनी और बढ़ जाती है। असल में लड़कियां हरनाम की सबसे बड़ी कमज़ोरी हैं। अगर किसी लड़की को हरनाम ने अपनी औरत बना लिया होता, तब शायद उसकी यह कमज़ोरी उसके व्यक्तित्व पर हावी नहीं होती। लेकिन हरनाम ने ऐसा नहीं किया। इसी लिए दो-दो बार उसकी गिरफ्तारियां लड़कियों के साथ रमण की(

मे ही हुई। भुनिया से ही नही, बल्कि उसकी तरह की गाव की कई गरीब लडकियो से वह सम्वन्धित है, यह वात समूचा गाव जानता है।

लेकिन विमली की तरह रूपवान, नौजवान तथा पढी-लिखी लडकी उसके जीवन मे नही आई थी। इसीलिए विमली के प्रथम दर्शन ने ही उसके अन्तर मे हाहाकार मचा दी है। विमली के इस दूसरे दर्शन और मुस्कान ने तो उसे मतिविहीन कर दिया है। वह आज अपने को नही रोक पाया। पिछले कई दिनो के वाद आज वह पुन सियाराम पासी की मडई की ओर चल पडा। सियाराम पासी ताडी वेचता है। लेकिन लुका-छिपाकर दो-चार वोतल दारू भी रखता है—हरनाम जैसे लोगो के लिए।

हरनाम ने पाच रुपये का नोट सियाराम पासी की ओर वढाया। पाच का नोट देखकर ही सियाराम पासी समझ गया, आज फरमाइश ताडी की नही, दारू की है। वह एक वोतल दारू तथा भुना हुआ चना लाकर हरनाम के सामने रख गया। हरनाम जी भरकर पीता है। खूव छककर। नशा जब रग लाता है, उसे विमली वुरी तरह याद आने लगती है। विमली की आखो के आमत्रण का एहसास पूरे व्यक्तित्व को झनझना देता है। वह विना कुछ सोचे ही विमली के घर की ओर चल देता है।

हरनाम को निखिल दरवाजे पर ही मिलता है। निखिल हरनाम को देखते ही नमस्ते कर उसे दालान मे ले जाकर वैठाता है। फिर जाकर घर सूचना देता है। राणा वहादुरसिंह निखिल के साथ ही दालान मे आते । हरनाम राणा वहादुरसिंह को देखते ही प्रणाम करता है। ऐसा पहली वार हुआ है। राणा वहादुरसिंह अवाक् रह जाते हैं। अपने वेटे की वुद्धि-विलक्षणता पर उन्हें मन ही मन अपार गर्व होता है।

हरनाम नशे की स्थिति में ही वकना शुरू करता है, "चाचाजी, अव हमलोगो की दुश्मनी समाप्त हुई। निखिल ने हमे मिला दिया। अव खेती-वारी का सारा काम मैं सभालूगा। देखूगा, कौन अनाज की एक वाल भी छूता है। मुझे सिर्फ पचीस मन अनाज दे दीजिएगा। मेरी मा के लिए वर्ष भर का खर्च हो जाएगा। वस, मुझे और कुछ नही चाहिए।"

"अरे वेटा, तुम्हारे लिए मैं कव किस चीज को छिपाता हू ? जव जिस चीज की जरूरत पडे, ले जाना। यह अपना घर ही समझना।"

राणा बहादुरसिंह की सारी समस्या और चिंता ही दूर हो जाती है।

निखिल यह सब सुनकर बाग-बाग हो गया। वह हरनाम को घर के अन्दर ले गया। हरनाम निखिल की मां को 'प्रणाम काकी' कहता है। फिर उसकी प्यासी आंखें बिमली को ढूंढने लगती हैं। बिमली ओसारे में रखे पलंग के पाए से सटकर खड़ी है। हरनाम की आंखें जल्द ही उसे ढूंढ लेती हैं। वह बिमली के करीब चला आता है। कहता है 'बिमली तूने मुझे बुलाया था न, ले अब आ गया।

बिमली हंस पड़ती है। बिमली की हंसी जानलेवा होती है। उसका नशा और बढ़ गया। वह पास ही की चारपाई पर बैठ गया। निखिल उसे कुछ खिलाना पिलाना चाहता है लेकिन वह कुछ भी नहीं खाता। बिमली भी उसे खिलाने के लिए ज़ोर देने लगती है। तब वह बिमली से कहता है, "आज बहुत कुछ खाकर आया हूं। कल से खिलाना। अब तो यहीं खाना ही है।

काफी देर तक वहां रहने के बाद हरनाम अपने घर की ओर चल पड़ा। रात काफी गहरा गई है। लेकिन हरनाम को इसकी कोई चिंता नहीं। उसे अपनी आंखों के सामने सिर्फ बिमली ही नजर आ रही है। बिमली की दुनिया में खोया वह अपने घर पहुंच गया।

लोग कहते हैं, दीवारों के कान होते हैं, यह बात बिल्कुल सच है। सुबह-सवेरे ही यह चर्चा पूरे दमखम के साथ गांव भर में ज़ोर पकड़ चुकी थी कि राणा बहादुरसिंह और हरनाम में सांठ-गांठ हो गई है। यह चर्चा जोगिन्दर को अपने किसी प्रिय के शोक-संदेश की भांति प्रतीत होती है। वह तिलमिला उठता है। आखिर ऐसा कैसे हो गया? ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। वह इस चर्चा की प्रामाणिकता की जांच के लिए निकल पड़ा।

उधर निखिल एकदम चिंतारहित बिल्कुल निश्चिंत होकर झुनिया से मिलने की योजना बनाने लगा था। सुबह के आठ बजे हैं। सोचता है, यह समय उपयुक्त नहीं है। दुपहरिया में मिलना ही ठीक होगा। वह विचार करता है कि आज के बाद वह झुनिया के घर दुपहरिया में न जाकर रात में ही जाएगा। या फिर झुनिया को ही अपने बागान या खलिहान में बुला लेगा। लेकिन क्या वह आएगी? एक [illegible]

जाता है निखिल के सामने। फिर निखिल को इस सवाल का जवाब भी मिल जाता है। हा, वह जरूर आएगी। क्यो नही आएगी ? अव तो 'वावन विगहवा' और हरनाम दोनो उसके पास हैं। उसे आना ही है।

उसी दिन की भाति दुपहरिया होते ही निखिल झुनिया के घर की ओर चल पडा। आज पुन उसका अदाज सही साबित होता है। मडई खाली है। हरिहर नही है। कही गया है। और उसके घर का दरवाजा अन्दर से उसी तरह भिडका है। वह दरवाजे पर पहले दिन की तरह ही हाथ की थाप लगाता है। अन्दर से कोई आवाज नही आती है। पुन. दूसरी वार थाप लगाता है। इस बार झुनिया दरवाजा खोलती है "अरे, तुम ! मैं तो समझ रही थी कि वावू हैं।"

"क्यो, वावू के सिवाय किसी और को घर आने देने का विचार नही है क्या ?"

"नही, मैं तो ऐसे ही कह रही थी।" और झुनिया किनारे खिसक गई। निखिल अन्दर आ गया। एक क्षण को चुप रहने के वाद झुनिया ने पूछा, "अच्छा, उस दिन तुम कहा चले गए थे ?"

"मेरा नौकर मुझे खोजते हुए आ गया था। घर पर एक वहुत जरूरी काम था। सोचा, मैं खाऊ या तुम, कोई फर्क पडने का नही।"

"लेकिन मैंने उसे खाया नही है, तुम्हारे लिए रखा है।"

"अरे भला खाने वाली चीज को भी सजोकर रखी जाती है ! अव तक तुम्हे खा लेना चाहिए था। खैर · अव खा लेना।"

दोनो कुछ पल के लिए मौन हो गए। कोई एक-दूसरे से कुछ नही वोला। फिर शुरुआत पुन झुनिया ही करती है, "तुमने अपना काम नही वताया।"

"अच्छा ! हा आज उसी काम के लिए तो आया हू। वो जो वूढी-वूढी दाई है न मेरे घर · वो विदेसी की मा · उससे अव अच्छा काम नही हो पाता है। मैं चाहता हू कि तुम ही अव मेरे घर का काम किया करो।"

"नही, मुझे एकदम फुर्सत नही है। कटनी से लेकर रोपनी तक तो वझी रहती हू। इसपर भी तो अपने घर की रसोई वनानी ही पडती है।

बापू अक्सर बीमार रहते हैं। उनकी सेवा भी तो करनी है।

"क्या हो गया है बापू को? उनका इलाज क्यों नहीं कराती? किसी अच्छे डाक्टर से उनको दिखाओ?"

"हम गरीबों के पास कहां पैसे हैं कि डाक्टर के पास जाएं? डाक्टर तो तुम्हारे जैसे राजा लोगों के लिए होते हैं।"

"ले बापू को किसी डाक्टर को दिखाना।" और निखिल दस-दस के चार नोट झुनिया की ओर बढ़ाता है। झुनिया पीछे हट जाती है। नहीं लेती है। निखिल आगे बढ़कर जबरन उसकी मुट्ठी में नोट ठूंस देता है। झुनिया जानती है, वह नोट ले या नहीं ले वह अपना मंतव्य पूरा करेगा ही। हो सकता है नोट नहीं लेने पर वह रंज भी हो जाए फिर रंज होकर बहुत कुछ कर सकता है। उसके बूढ़े बापू को परेशान भी। और झुनिया कटकर रह जाती है, क्योंकि वह दुनिया का हर अत्याचार सह सकती है लेकिन अपने बापू की परेशानी नहीं सह सकती।

झुनिया को नोट सौंप चुकने के बाद निखिल इतमीनान से वहीं खटिया पर बैठ गया। फिर मुस्कराते हुए बोला "तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो।"

झुनिया कांप जाती है। लेकिन इसलिए नहीं कि निखिल का इरादा अब बदल रहा है बल्कि इसलिए कि पहली दफा राजा बहादुरसिंह ने भी बिल्कुल इसी तरह कहा था। झुनिया को यह देखकर अचरज की सीमा नहीं रहती है कि निखिल ठीक राजा बहादुरसिंह की तरह ही खटिया से उठकर सबसे पहले उसका हाथ पकड़ता है। फिर उसे अपने सीने में दबोचने लगता है। वह छिटककर अलग हो जाती है। कहती है, "बापू आ रहे होंगे यही उनके आने का समय है।"

"तो ठीक है, मैं जा रहा हूं। लेकिन आज नहीं। दो चार दिन बाद आकर खबर दूंगा तब रात को मेरे खलिहान या दालान में दो चार घंटे के लिए आना होगा।"

वह चला जाता है। झुनिया कोई जवाब नहीं दे पाती है। आखिर झुनिया क्या जवाब दे? उसे कुछ भी समझ में नहीं आता है। लोग तो यही न कहेंगे कि उसे अपना व्यवहार ठीक बना लेना चाहिए, किसीको

भी अपने पास नही फटकने देना चाहिए, इस तरह के किसी भी प्रस्ता
पर 'ना' कह देना चाहिए, लेकिन यह झुनिया ही जानती है कि 'ना' कह
के पीछे कितनी शक्ति की जरूरत होती है। उसके पास किसी भी तरह क
शक्ति नहीं है। वह एकदम शक्तिहीन है। फिर वह 'ना' कैसे कहे
'ना' कहना और 'ना' करना दो बिल्कुल अलग-अलग बातें हैं। व
'ना' कहकर ही क्या कर सकती है, जब कि 'ना' करने से किसीको रो
नही सकती ?

छोटी-बडी घटनाए घटती रहती हैं। काम भी नये-पुराने होते रहते हैं
कभी-कभी कोई घटना विशिष्टता का रूप लेकर गाव मे चर्चाओ का विष
भी बन जाती है। लेकिन समय की रफ्तार पर इस सबका कोई प्रभा
नही पडता। अपनी तेज रफ्तार के साथ समय निरतर गुजरता रहता है
झुनिया देखती रहती है, उसकी आखो के सामने से एक लम्बा समय उस
गाव से होकर गुजर गया है।

इस बीच गाव के नक्शे और आकृति पर कई चीजें बनती-बिगडत
हैं। बदलाव का एक भरपूर चक्र पूरी तरह गाव को अपनी गिरफ
मे ले चुका होता है। हरनाम अब पहले का हरनाम नही रह गया है
राणा बहादुरसिह का पालतू कुत्ता हो गया है। उनके एक इशारे प
इधर-उधर दौडता है।

लेकिन दबी जुबान गाव के लोग कहते हैं कि वह सब विमली
चलते ही हो रहा है। विमली और हरनाम के आपसी सबध एकदम गहर
गए हैं। गाव की हर बैठको की फुसफुसाहट तथा गाव के हर युवको क
धीमी आवाज मे विमली और हरनाम के किस्से होते हैं। कई बार, क
लोगो ने विमली और हरनाम को रगे हाथो देख भी लिया है। लेकि
देखकर भी लोग चुप रह गए हैं। बडो की बात है। कौन झगडा मोल ले
विमली तो अक्सर ही शहर सामान खरीदने या बीमारी का बहाना बन
कर हरनाम के साथ ही आती-जाती है। हरनाम का पौरुष एकदम गि
गया है। अब गाव मे उससे कोई नही डरता।

इस बीच जोगिन्दर की राजनीति ने भी गुल खिला दिया है। पूरे गा

में वह पूजनीय हो गया है। अब राणा बहादुरसिंह से किसी भी स्तर से वह कम नहीं रहा है। उसके दुमहले मकान के ऊपर भी एक कोठरी बननी शुरू हो गई है। शायद वह अब उसीमें हुआ जाएगा।

इधर राणा बहादुरसिंह एकदम बूढ़े हो गए हैं। लेकिन निखिल ने बावन बिगहवा से वह सब कुछ करके दिखा दिया है, जिसे जिन्दगी भर राणा बहादुरसिंह नहीं कर पाए थे। अपने पुराने मकान को बिल्कुल तोड़कर निखिल ने आधुनिक ढंग से नया मकान बनवाया है। एक ट्रैक्टर ले लिया है। एक जीप गाड़ी भी तथा बन्दूक और रिवाल्वर साथ-साथ पास करवाया है। वह गाँव में रौब से घूमता है। उसकी शान और रौब में कोई आँच नहीं आई है। गाँव का कोई भी आदमी उसका प्रतिद्वंद्वी बनने की कोशिश नहीं करता है। लेकिन मुनिया के लिए वह कसाई साबित हुआ है। मुनिया को पूरी तरह बर्बाद कर दिया है उसने। राणा बहादुरसिंह आते थे तो शौक से कभी-कभार। हरनाम आता था तो नशे में। लेकिन इसने तो उसके ऊपर अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझ लिया है। मुनिया को इस बात का गहरा दुःख है कि इस अत्याचारी के कुकर्मों को उसके बाबू ने भी भांप लिया है।

मुनिया को लगता है कि इस बीच एकमात्र सोमारू ही है जो तनिक भी नहीं बदला है। वैसे बाहरी और भीतरी रूप से वह भी बिल्कुल बदल गया है। लेकिन मुनिया के प्रति उसके मन की चाह नहीं बदली है। मुनिया को ममत्व भरी दृष्टि से देखने वाली उसकी निगाह नहीं बदली है।

सामारू अब किसीसे डरता नहीं है। वह अकड़कर रहता है। मेहनत मजूरी करके कमाता है। किसीके सामने हाथ पसारने और गिड़गिड़ाने वाली बात उसे पसन्द नहीं। कम मजूरी मिलने के कारण वह कई बार हरनाम से टकरा गया है। उसे इस गाँव में अपने सिर्फ तीन ही शत्रु नजर आते हैं—निखिल, कौशिकर और हरनाम। वह इन तीनों से घृणा करने लगा है। इन लोगों की सूरत देखने की भी उसे इच्छा नहीं होती है। साधनहीन वह गरीबी की चक्की में पिस रहा है, अन्यथा इन लोगों को मजा चखाता। फिर भी वह वक्त और अवसर की तलाश में है। अनुकूल स्थिति आते ही वह इन लोगों को कभी नहीं छोड़ेगा।

और झुनिया जब इन सब लोगो से हटकर खुद अपने बारे मे सोचती है, तो उसे लगता है कि वह भी बहुत कुछ बदल गई है। वैसे सोमारू के प्रति उसके मन में थोडी-बहुत कमजोरी तो बहुत पहले ही से थी, लेकिन अब सोमारू के लिए वह एकदम बेचैन रहने लगी है। जिस शाम सोमारू उसके घर नही आता है, उस रात नीद भी उसकी आखो से जुदा हो जाती है। लेकिन विडबना यह कि सोमारू के प्रति इतनी चाह होते हुए भी वह अपने को सोमारू को सौंप नही पाती है। उसे लगता है कि उसका शरीर घृणित हो चुका है। सोमारू का स्थान उसके मन मे है। वह अपने इस घृणित शरीर से सोमारू का रिश्ता जोडना नही चाहती है। लेकिन यह सवाल बराबर उसके सामने खडा हो जाता है कि क्या सोमारू उसके इस मन की बात को समझ पाएगा? नही, वह इसे बिल्कुल नही समझ पाएगा। उसके लिए मन और तन के अलग-अलग का रिश्ता भी पहेली है। उसे तो तन और मन से परिपूर्ण अपनी झुनिया चाहिए। पूर्ण झुनिया। लेकिन अधूरी झुनिया पूर्ण कैसे हो सकती है? वह सोमारू को कैसे बताए कि यह जानते हुए कि खाना जूठा और बासी है, अपने प्रिय के सामने परोसना कितना कष्टदायक होता है? मगर यह सोमारू भी एकदम देवता है। इस सबका ख्याल नही करता। झुनिया को कभी दोषी नही समझता। यह जानते हुए कि झुनिया का चेहरा दागो से भरा है, वह बराबर झुनिया को बेदाग ही समझता है। काश, इस सोमारू के लिए झुनिया ने कुछ किया होता! झुनिया सोमारू की याद मे डूब जाती है।

अब अक्सर ही ऐसा होने लगा है। शाम होते ही सोमारू की याद झुनिया को धर-दबोचती है। फिर सोमारू जब तक आ नही जाता, तब तक चूल्हे के पास बैठी वह उसकी बाट जोहती रहती है।

हरिहर कही से आता है। आकर ओसारे मे चारपाई पर बैठ जाता है। अब हरिहर की वृद्धावस्था भी आखिरी मजिल पर आ गई है। उससे अब पहले जैसा काम भी नही हो पाता है। फिर भी लगा रहता है। उसके दात आधे से अधिक टूट गए हैं, आखो की रोशनी भी बहुत कुछ चली गई है। वह बैठते ही झुनिया से कहता है, "बेटी, एक गिलास पानी पिलाओ।"

मुनिया उस पानी देती है। वह पानी पीकर शांत हो जाता है। फिर कहता है, "राणा बहादुरसिंह की लड़की की शादी तय हो गई। बड़ी जल्दी इसी हफ्ते बारात आएगी। सुना है, किसी बहुत बड़े शहर में शादी कर रहे हैं पचास हजार तिलक दे रहे हैं। खूब धूम-धाम से शादी होगी।"

मुनिया कोई जवाब नहीं देती है। कहीं बहुत दूर से आती हुई बापू की इस आवाज में उसे दर्द ही दर्द मिलता है। वह जानती है, इस गांव में जब भी किसी लड़की की शादी होती है बापू छटपटा जाते हैं। उनकी आवाज दर्दीली हो उठती है। मुनिया की शादी वे नहीं कर पाए, इसका गम अपने लड़के की मृत्यु से भी उन्हें ज्यादा है। वे अक्सर ही मुनिया की शादी की चिंता में ग्रस्त रहते हैं। मुनिया को इस बात का पूरा विश्वास है कि उम्र और समय ने बापू को उतना नहीं तोड़ा है, जितना उसकी शादी की चिंता ने। हालांकि मुनिया ने बापू से कई बार कहा है 'बापू तुम मेरी शादी की बेकार की चिंता किया करते हो। मुझे शादी-वादी नहीं करनी है। लेकिन उसकी इस बचकानी बात ने हरिहर की चिंता दूर नहीं की है।

हरिहर फिर कहता है, "अब जमाना एकदम बदल गया है। किसी की इज्जत कोई देखने वाला नहीं है। धन-दौलत के बल पर लोग मन मानी करने लगे हैं। आज निर्मल ने सोमारू को पीटा है

क्या सोमारू को " मुनिया बीच ही में बापू को रोक देती है।

"हां, सोमारू को।

"क्यों ?"

"निर्मल कह रहा था कि शादी भर उसे उसके यहां रहना होगा सब काम-धंधा करने के लिए। पर सोमारू तैयार नहीं हुआ। बस इसीलिए।'

बस इसीलिए ? मुनिया माथा पीटकर रह जाती है। एक क्षण मौन रहने के बाद फिर पूछती है "बहुत मार पड़ी है ?

"नहीं मार बहुत नहीं पड़ी है। लेकिन दस आदमी के बीच में जूतों से मारना '

झुनिया अन्दर ही अन्दर काप उठती है। गुस्से के मारे वह तिलमिला जाती है। दात किटकिटाते हुए खून का घूट पीकर रह जाती है। काश, अगर उसका वश चलता तो वह सोमारू का बदला इसी समय निखिल से लेती !

काफी रात वीत जाने पर भी सोमारू नही आया। वावू सो गए हैं। झुनिया को वावू की वातें मथ रही हैं। उससे अव तनिक भी रहा नही जाता है। वह धीरे से किवाड खोलकर वाहर आ जाती है। फिर पूर्ववत् किवाड भिडकाकर चल देती है। गली मे दवे पाव चलते हुए वह सोमारू की मडई के पास पहुच जाती है। वहा वह मडई के आगे नही रुक पाती। मडई के पिछवाडे जाकर खडी होती है। सोचती है, सोमारू को कैसे वुलाए। उसके मा-वाप उसके साथ होंगे। वे क्या सोचेंगे? नही, वह उन लोगो के सामने नही वुलाएगी। तो फिर कैसे वुलाएगी? और इसी उधेडबुन में पडी वह वही चुपचाप खडी रहती है। उसे कुछ भी समझ मे नही आता। उसके माथे के ऊपर से रात सरकती जाती है। अचानक उसका दिमाग साथ दे देता है। वह सोचती है, सोमारू के मा-वाप सो गए होगे। लेकिन सोमारू आज सोया नही होगा। आज वह वुरी तरह अपमानित हुआ है। नीद उसे आएगी भी कैसे?

वस, यही सोचकर झुनिया अपने हाथ हिलाकर चूडिया खनका देती है। फिर चुपचाप मडई के अगवासे की ओर देखने लगती है। मडई के अन्दर से कोई निकलता है। वह आकृति से ही पहचान जाती है—सोमारू है। सोमारू मडई के वाहर एक क्षण तक खडा रहने के वाद फिर अन्दर जाने लगता है। वह इसी समय पुन तेजी से अपनी चूडिया खनकाती है। सोमारू रुक जाता है। मुडकर मडई के पिछवाडे देखता है। कोई खडा है। दूर से पहचान नही पाता। करीव वढ जाता है। "अरे! झुनिया! तुम?" वह चौंक उठता है।

"हा।" झुनिया अपनी निगाहें उसके चेहरे पर जमा देती हैं। वह झुनिया की आखो मे आखें डालकर देखता है। झुनिया की आखें आज उसे वडी प्यारी और शीतल लगती हैं। उसके हर्ष का कोई ठिकाना नही रहता। ऐसा आज पहली वार हुआ है, जव झुनिया उससे मिलने उसके घर आई

है। खुशी के मारे उसके मुँह से बोल भी नहीं फूटते हैं। कुछ मिनट बाद मुनिया ही बोलती है "तिलिक ने तुम्हें मारा है न ?"

"जाने दो उस अत्याचारी का नाम न लो।"

"काफी मार पड़ी है ?"

"नहीं, मार नहीं पड़ी है। हां, साले अत्याचारी ने खूब बेइज्जत किया है।"

मुनिया की निगाहें झुक जाती हैं और उसकी आँखें नम हो जाती हैं। सोमारू यह सह नहीं पाता। वह तत्काल विषय ही बदल देता है, "अरे, तुम यहां खड़ी हो! चलो अन्दर चलो।"

"नहीं, काका क्या कहेंगे? अब मैं घर लौट जाती हूं। सिर्फ तुम्हें देखने ही आई थी। देख लिया। हां, आज शाम को तुम आए क्यों नहीं ?"

"एस ही नहीं आया। मन उखड़ा-उखड़ा था।"

"तो क्या सिर्फ ठीक रहने पर ही आओगे ?"

"अरे, नहीं" और आगे बढ़कर सोमारू मुनिया का हाथ अपने हाथ में ले लेता है "अच्छा अब ऐसा कभी नहीं होगा"

मुनिया अन्य दिनों की भांति अपना हाथ सोमारू के हाथ से नहीं खींचती है। देर तक वे दोनों ऐसे ही खड़े रहते हैं। फिर मुनिया कहती है "अब मैं जा रही हूं।"

"अरे, ऐसा कैसे होगा चलो मैं तुझे तेरे घर तक छोड़ आऊंगा।" और सोमारू मुनिया का हाथ पकड़े उसे लेकर उसके घर की ओर चल देता है। वहां पहुंचकर सोमारू बाहर से भिड़के मुनिया के घर के दरवाजे को खोलता है। फिर अत्यन्त धीमी आवाज में कहता है "अन्दर चली जाओ।"

"नहीं पहले तुम यहां से जाओ तब मैं अन्दर जाऊंगी।

"तो ठीक है देखता हूं पहले कौन जाता है।" और सोमारू भी चुपचाप वहीं खड़ा रहता है। वे देर तक यों ही खड़े रहते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह सोमारू की मड़ई के पिछवाड़े खड़े थे। फिर सोमारू कहता है "अच्छा तेरी ही विजय पहले मैं ही जाता हूं।"

सोमारू चल देता है। मुनिया उसे अपलक [illegible]

मुड-मुडकर देखता जाता है कि झुनिया अभी गई है कि नही। लेकिन झुनिया अभी नही गई है। वह जाते हुए सोमारू को भर नजर देखती रहती है। पर जब सोमारू एक गली से मुडकर आखो से ओझल हो जाता है, तो उसका मन कैसा तो हो जाता है। उससे अब वहा एक क्षण भी खडा नही रहा जाता। वह अन्दर चली जाती है तथा भीतर से दरवाजे को भिडकाकर कुण्डी चढा देती है।

विमली को गए लगभग एक महीना हो गया। उसकी बारात खूब धूम-धाम के साथ आई थी। गाव के बडे बुजुर्ग कहते हैं कि इस तरह की बारात इलाके मे पहले कभी नही आई। लौटती बारात के साथ ही विमली का दूल्हा विमली को भी लेता गया था। अब विमली वही है—अपनी ससुराल मे। शायद इसीलिए हरनाम अब उखडा-उखडा रहने लगा है। चोर, बदमाश और कामुक व्यक्ति का कोई भरोसा नही। जब तक मकसद सधता है, तब तक साथ रहते हैं। स्वार्थ मे थोडी-सी बाधा पडने पर फनफना उठते हैं। एकदम अलग हट जाते हैं। हरनाम भी कुछ इसी तरह का रुख अख्तियार कर लेता है। अब वह सिर्फ नाश्ते और खाने के वक्त ही राणा बहादुरसिंह के घर जाता है। जिस तरह पहले चौबीसों घटे उनके घर रहता था, उस तरह नही रह पाता है। खेती-बारी के उनके कारोबार को भी वह अब ढीले नजरिये से ही देखता है। राणा बहादुरसिंह की ढेर सारी बातें भी वह अनसुनी कर देता है।

जेठ की दुपहरिया लहलहा रही है। इसी लहलहाती दुपहरिया मे हरनाम गाव से बाहर, टीका बाबा के बगीचे की ओर चल देता है। वह झुनिया के घर से आ रहा है। झुनिया घर पर नही है। वहा उसे पता चला है कि वह बापू की दवा खरीदने बाजार गई है। अब शीघ्र ही लौटेगी। बाजार से गाव आने का रास्ता टीका बाबा के बगीचे से होकर ही आना है। इसीलिए हरनाम टीका बाबा के बगीचे मे जा रहा है।

टीका बाबा जब तक जिन्दा थे, इस बगीचे मे किसीको घुसने नही देते थे। उनके मरते ही यह बगीचा लावारिस हो गया है। पूरे पाच बिगहे मे लगाया गया टीका बाबा का यह सघन बगीचा, अब कई कुकर्मों का

साथी हो गया है। इलाके भर के चोर रात में चोरी करके इसी बगीचे में हिस्सा बांटते हैं। इस रास्ते से गुजरने वाले कई राही इस बगीचे में लूटे पीटे गए हैं तथा दो-चार की हत्याएं भी हुई हैं। हरनाम आज इसी बगीचे में मुनिया से मिलने आ रहा है।

हरनाम को बगीचे में बैठकर बहुत देर तक मुनिया की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। मुनिया शीघ्र ही आ गई। धूप से उसका चेहरा लाल हो गया है। वह हरनाम को नहीं देख पाती है। बगीचे में घुसकर कुछ आगे बढ़ जाती है। फिर एक घने वृक्ष के नीचे सुस्ताने की नीयत से बैठ जाती है।

पास ही के एक वृक्ष के नीचे बैठा हरनाम उठकर मुनिया के पास आ गया। मुनिया उसे देखकर तिलमिला उठी। उसका मन कड़वा हो उठा है। हरनाम के मुंह से निकलने वाली शराब की दुर्गन्ध पहले की तरह ही मुनिया को उबकाई पैदा करने लगती है। इस बार हरनाम काफी समय बाद उसके पास आया है। एक लंबे समय बाद। हरनाम कहता है, मुनिया बहुत दिनों बाद तुम्हारे पास आया हूं। साली राजा बहादुर सिंह की छोकरी ने फंसा लिया था।

मुनिया उठ खड़ी होती है। कहती है, "बापू बीमार हैं। उनकी दवा लेकर जा रही हूं।

"बैठ-बठ" लपककर हरनाम मुनिया की बांह पकड़ लेता है, "मैं तेरे घर से ही पता लगाकर आया हूं कि तू बाजार गई है तभी यहां आया हूं। अब तक बापू मरे नहीं हैं तो अब एकाध घंटे के अन्दर मर नहीं जाएंगे। एक-आध घंटे बाद ही जाना।

वह हरनाम से अपनी बांह छुड़ाते हुए कहती है "नहीं छोड़ो निखिल भी आ रहा होगा।

'निखिल ! वह साला यहां क्यों आएगा ?" हरनाम कड़ी आवाज में कहता है।

"हां वह जरूर आएगा। उसने मुझसे कहा है। दवा के लिए भी तो पैसे उसीने दिए हैं।

"बठ ! हरनाम एक झटके के साथ मुनिया की बांह खींचते हुए

गरजता है, "जब तक मैं यहा हू तब तक किसी भी साले की यहा आने की मजाल नही है।"

हरनाम द्वारा झटके से बाह खीचे जाने के कारण झुनिया लडखडा-कर वही गिर पडी। फिर उठी और पेड के तने से सटकर चुपचाप बैठ गई। हठात् उसे बगीचे के एक कोने-से आता निखिल दिखाई पडा। वह हरनाम से बोली, "बाह छोडो। वह देखो, निखिल आ रहा है।"

"आने दो साले को। उसके आने से क्या होगा?" और हरनाम झुनिया की बाह नही छोडता है। उसी तरह पकडे रहता है। धीरे-धीरे निखिल पास आ गया। वह झुनिया की बाह पकडे हरनाम को देखकर चौंक उठा, "हरनाम भैया, यह क्या कर रहे हो?"

हरनाम निखिल के चेहरे की ओर नही देखता है। दूसरी ओर ताकते हुए कहता है, "कुछ भी कर रहा हू, इससे तुमको मतलब?"

निखिल को हरनाम की आवाज बदली हुई लगती है। वह तेज आवाज मे बोलता है, "छोडो-छोडो इसको, जाओ घर, पिताजी तुमको खोज रहे हैं।"

"मैं तुम्हारे बाप का नौकर नही हू!" हरनाम गरजता है, "इस झुनिया के पास मेरे रहते अब तुम कभी मत आना।"

"साले, जिस थाली मे खाते हो, उसीमे छेद करते हो।" निखिल दहाडता है, "मेरे रहते इस झुनिया को कभी हाथ मत लगाना।"

"साला, गाली बकता है! अभी तुझको फाड दूगा।" हरनाम की पहली प्रकृति जाग उठती है। वह निखिल की तरफ झपटता है।

"ठहरो साले बन्दूक लेकर आता हू तो अभी तुझको बताता हू। असल जादा का जन्मे हो तो भागना मत।" और निखिल बन्दूक लेने के लिए अपने घर की ओर भागता है।

"मुझे बन्दूक की धमकी दे रहे हो। अभी अपनी ताकत तुम्हें दिखाता हू।" और बडबडाते हुए एक दूसरे रास्ते से हरनाम भी गाव की ओर चल देता है। अब झुनिया अकेले बच जाती है। वह उठकर घर की ओर चल पडी है। अच्छा हुआ, ये दोनो अत्याचारी आपस मे ही लड गए, अन्यथा उसे ही परेशान करते।

मुनिया अपने घर आ गई है। लेकिन उसके घर आने से पहले ही वे दोनों गाँव आ चुके थे तथा दोनों ओर से गाली-गलौज और धमकियाँ भी शुरू हो गई थीं। निर्मल अपने दालान पर बंदूक लेकर खड़ा है। राणा बहादुरसिंह तथा उसके और अपने लोग उसे रोक रहे हैं। इधर बरगद के पास बिना लाइसेंस वाली अपनी बंदूक लेकर हरनाम भी आ गया है। कुछ लोग उसे भी रोक रहे हैं। दोनों जगह गाँव के लोग तमाशबीन की तरह उमड़े आ रहे हैं तथा विषय से अवगत होकर, चटखारें ले-लेकर गप्पें लड़ा रहे हैं।

यह खबर जोगिंदर को अचानक अपने नाम किसी लॉटरी मिलने की घोषणा सुनने की तरह ही सुखदायी लगी। वह उछल पड़ा। उसका जी करता है कि वह इसी समय दोनों जगहों की ओर दौड़कर मुआयना करे। लेकिन फिर वह सोचता है कि नहीं उसका जाना ठीक नहीं होगा। वे बारी-बारी से स्वयं ही उसके पास आएंगे। उसके पास आए बगैर उनका काम चलेगा कैसे ?

इस सूचना से सोमारू को भी काफी बल मिलता है। ये दोनों अलग अलग हो गए अब सोमारू बारी-बारी से इन दोनों से निबटेगा। सामने ये दोनों मिल गए थे इसीसे वह लाचार हो गया था।

रात अधियाने के कुछ समय बाद सोमारू चूल्हे से उठा फिर निर्मल बहादुर के खलिहान में चला गया। खलिहान में अनाज नहीं है। सिर्फ पुआल के टाल हैं। फिर भी ये काफी कीमती हैं। सोमारू अपनी कमर से माचिस निकालकर जलाता है और पुआल के टाल में आग लगाकर चल देता है।

सोमारू को सबसे अधिक विश्वास मुनिया पर है। सोमारू मुनिया से कुछ भी छिपाना नहीं चाहता। वह लौटते हुए मुनिया को बताता है कि उसने राणा बहादुरसिंह के पुआल में आग लगा दी है। मुनिया उसे कोसती है। वह मुनिया को समझाता है देख मुनिया मैंने कोई गलती नहीं की है। पाप और अत्याचार के खिलाफ छिपकर या सामने होकर लड़ने में कोई फर्क नहीं है। *धर्म तो यही है कि जैसे भी हो सके अत्याचार का* विरोध करो।

शुरू मे भुनिया सोमारू की हर बात का विरोध करती है। मगर सोमारू जब समझाता है, तो समझ जाती है। उसे सोमारू द्वारा समझाई गई बात, बहुत सच्ची और ईमानदार लगती है।

सुबह होने से पहले ही आग की लपटें समूचे गाव को प्रकाशमान कर देती हैं। 'आग लगी है · आग लगी है · ' समूचे गांव मे हल्ला हो उठता है। लोग अपने-अपने घरो से निकलकर दूर से ही तमाशा देखने लगते हैं।

एक जमाना था, जब गाव मे कही भी आग लगने पर हर आदमी अपने घर से एक बाल्टी और डोर लेकर निकलता था। किसी भी कुएं से पानी भरकर लोग उत्साह के साथ आग बुझाने मे जुट जाते थे। लेकिन अब वैसा कुछ भी नही हो पाता है। लोग हाथ सेंकते ही रह जाते हैं और धू धू कर राणा बहादुरसिह का सारा पुआल जल जाता है।

सुबह राणा बहादुरसिह और निखिल की ओर से आवाज निकलती है, "यह काम हरनाम का है। उसके सिवाय दूसरा कर ही नही सकता है। कल ही झगडा हुआ और आज ही यह काम !"

यह काम हरनाम का नही है। लेकिन हरनाम सफाई नही देता है। गुस्से मे चिल्लाता है "हा, यह काम मेरा है। जो जी मे आए करो।"

बस दोनो ओर से गुटबदिया और तैयारिया शुरू हो जाती हैं।

जैसाकि जोगिदर को विश्वास था, उसके पास बारी-बारी से दोनो आते हैं। सबसे पहले निखिल आता है।

"भैया, सुना तुमने न ?"

"अरे, मैं तो पहले ही समझ रहा था · " जोगिदर हसता है, "भला कुत्ते की पूछ मे घी लगाने से उसकी पूछ सीधी होती है !"

"लेकिन भैया, अब क्या होगा ?"

"अरे होगा क्या ? अभी थोडे ही कुछ बिगडा है। बस, एक-दो हजार खर्च करने की जरूरत है। इस बार बच्चू को दस साल के लिए अन्दर भिजवा दिया जाएगा।"

निखिल के बाद जोगिदर हरनाम के पास आता है।

"यार, मैं बहुत फेरे मे पड गया हू। मेरी मति ही मारी गई थी, मैं उसके घर फस गया था।"

'यह तो मुझे शुरू में ही लगा था तुम अब छले जा रहे हो। तुमको पूरी तरह इस्तेमाल कर लिया है उन लोगों ने। मेरा ख्याल है कि अब तुम्हारे साथी भी तुमसे अलग हो गए होंगे।"

"हां दोस्त यही तो सबसे बड़ी मुसीबत हो गई है। कोई अब मेरा साथ देने को तैयार नहीं। सभी साथी कट गए हैं। अब क्या होगा? कोई रास्ता बताओ। बिना तुम्हारी सहायता के मैं कुछ भी नहीं कर सकूंगा।"

कुछ मिनटों के लिए जोगिंदर मौन होकर कुछ सोचने लगता है। फिर उसके चेहरे पर मुस्कान की एक पतली रेखा तैर गई "अच्छा एक रास्ता है लिमिस ने पचीस बीघे खेत में बेहुमा धान की खेती की है। अब जल्द ही उसकी कटनी लगेगी तुम गांव के सभी कटनिहारों को जुटाओ और कहो कि देश में महंगाई बढ़ गई है हर चीज के भाव आसमान छूने लगे हैं सरकारी कर्मचारियों के वेतन बढ़ गए हैं। शहर के मजदूरों की मजदूरी बढ़ गई है। अब पहले के हिसाब से कटनी नहीं होनी चाहिए। यह अत्याचार है। बिना कटनी का रेट बढ़े अब तुम लोग कटनी मत करो। देखूंगा, कैसे वे लोग रेट नहीं बढ़ाते हैं!

हरनाम यह सुनते ही उछलकर जोगिंदर के गले लिपट गया 'हां यार यह एकदम सही रास्ता है। इस रास्ते मुझे मेरे सभी संगी-साथी वापस मिल जाएंगे। तू बड़ा कमाल का आदमी है दोस्त! सचमुच तुम्हारे जैसा तेज दिमाग वाला राजनीतिज्ञ इस पूरे इलाके में कोई नहीं है।

फिर हठात् हरनाम के दिमाग में एक सवाल पैदा हो गया। क्षण भर के लिए उसका मन मलिन हो उठा। वह शंका-समाधान के लिए फिर जोगिंदर से कहता है "यार, अगर बाहर से कटनिहारों को उसने बुला लिया तो?"

"नहीं हरनाम ऐसा कभी होगा ही नहीं। और ऐसा करने पर उसे सफलता भी नहीं मिलेगी। यहां के कटनिहार दूसरे कटनिहारों को कटनी करने ही नहीं देंगे। तुम्हें कुछ नहीं करना है। तुम सिर्फ खड़े रहना। सारा झगड़ा-तकरार कटनिहार स्वयं ही कर देंगे।

हरनाम जोगिंदर से हाथ मिलाकर वहां से चल पड़ा। मन ही मन वह बहुत खुश है। सचमुच इस रास्ते वह राधा महादुर

सकेगा।

एक-एक दिन बीतते-बीतते जेठुआ धान की कटनी का समय भी आ गया। हरनाम बहुत पहले ही से कटनिहारो को इस बात से आगाह कर चुका है कि बगैर कटनी का रेट दुगुना हुए कोई कटनी नही करेगा। रोज मजूरी तथा कटनी करके जीविका चलाने वाले गाव के सभी गरीबो मे खुशी की लहर छा गई है। यह बिल्कुल उनके अपने हित की बात है। इस बात पर वे हरनाम से बहुत प्रभावित हुए हैं। हरनाम से अलग रहने वाले उसके ढेर सगी-साथी उसके करीब आ गए हैं। हरनाम उनका नेता बन गया है। वे बराबर हरनाम के आगे-पीछे चलने लगे हैं।

इधर निखिल भी अब अकेला नही रहा है। गाव के कुछ अन्य खेतिहर गृहस्थ जो निखिल के बराबर तो नही थे, लेकिन उस तक पहुचने की कोशिशो मे लगे थे, वे निखिल के साथ हो गए हैं। हरनाम की यह बात उन्हे बहुत बुरी लगी है। इस बात से निखिल के साथ-साथ उन्हें भी क्षति है।

सदियो से दबे गाव के मजदूर इस बार फनफना गए हैं। उनकी दमित इच्छा को हरनाम से काफी बल मिला है। उनके अन्दर एक अजीब तरह का उत्साह उमड पडा है। वे जगह-जगह बैठको तथा मीटिंगें करने लगे हैं। हरनाम तो उनके जिगर का टुकडा हो गया है। वे उसे इधर से उधर टागे फिरते हैं।

धान पक गए हैं। बालिया खेतो मे पसरने लगी हैं। अब कटनी का आखिरी वक्त गुजर रहा है। निखिल अपने चद साथियो के साथ गाव मे घूमकर ऐलान करता है, "यह सब करने से तुम लोगो को कोई फायदा नही होगा। इस कटनी के नही होने से हम लोग मर नही जाएगे। लेकिन तुम लोगो के पास जगह-जमीन नही है। इस गाव मे फिर कभी काम नही मिलेगा। भूखे मरोगे। किसीके बहकावे मे मत आओ।"

निखिल के जाने के बाद हरनाम समझाता है, "यह धमकी है। इस धमकी के कारण ही तो तुम लोग अब तक चूसे गए हो। आखिर तुम्ही लोग सोचो कि अगर तुम लोग काम नही करोगे, तो फिर इन लोगो की

खेती-गृहस्थी होगी कैसे ? क्या ये लोग अपने-आप कर लेंगे ?"

'नहीं । मजदूर चिल्लाते हैं । हरलाम की बात उन्हें समझ में आ जाती है । अब उन्हें अपनी शक्ति का पता चलता है । वे गर्व के मारे नारे लगाने लगाते हैं "जब तक रेट नहीं बढ़ेगी तब तक कटनी नहीं लगेगी ।"

इधर निखिल चंद लोगों से सलाह-मशवरा कर बाहर से कटनिहार बुलाने चल देता है । यह खबर गांव के मजदूरों को बौखला देती है । वे दहाड़ने लगते हैं 'बाहर के कटनिहारों को कटनी नहीं करने दिया जाएगा ।

निखिल दो दिनों के अन्दर ही बाहर से अनेक कटनिहार लेकर आ गया । फिर मजदूरों के गुस्से का जवाब अपनी गरजती आवाज में देता है "कटनी लगेगी । जिसकी हिम्मत हो वो रोकने आए ।

मजदूरों की ओर से पुनः जवाब आता है "जो कटनी करने चला आएगा, खेत से उसकी लाश जाएगी ।"

बस यहीं से युद्ध का जन्म हो जाता है । दोनों ओर से एक-दूसरे को मारने-काटने की तैयारियां शुरू हो जाती हैं । रातों-रात इलाके भर से दौड़-धूप कर दोनों पार्टियां काफी हथियार इकट्ठा कर लेती हैं । मारने काटने की धुन सबके माथे पर सवार हो जाती है ।

निखिल इस अवसर पर पुलिस की सहायता लेना चाहता है । लेकिन उसकी पार्टी वाले उसे डांट देते हैं "नहीं । आखिर कब-कब हम पुलिस की मदद लेंगे ? कटनी के बाद बोझे घर में तो नहीं रखे जाएंगे । इन्हें खलिहान में ही रखना होगा । फिर दवनी, ओसवनी अभी सब कुछ तो बाकी है ।

निखिल को भी लगता है कि हां यही ठीक है । इस बार ईंट का जवाब पत्थर से देना ही बेहतर होगा ।

दिन के तीन बजे निखिल की पार्टी से ऐलान होता है कि शाम पांच बजे कटनी लगेगी । जिसके सीने में बल हो वह कटनी रोकने आए ।

बस इधर कटनी रोकने का इंतजाम शुरू हो जाता है । हरलाम अपनी बंदूक लेकर खड़ा है । उसके आसपास मजदूरों की भीड़ लगी है

की आखें लाल हैं। किसी भी मजदूर के हाथ खाली नही हैं। भाला, गडास लाठी, वर्छा से सभी लैस हैं। दो-चार नल वन्दूकें भी हैं। हरनाम कहता है, "पहले कटनी लग जाने दो। कटनी लग जाने के वाद एकाएक हमला वोल दिया जाएगा।"

सभी हरनाम की वात का समर्थन करते हैं। लेकिन सोमारू छटपटा-कर रह जाता है। वह छिटपुट रूप से शुरू से ही इस लडाई का विरोध करता रहा है। लेकिन किसीने उसकी वात पर कान नही दी है। अव जव कि लोग लडाई के लिए एकदम तैयार ही हो गए हैं, उससे रहा नही जाता है। वह भीड के वीच पूरी ताकत के साथ चिल्लाता है, "यह लडाई गलत है·· इस लडाई मे हमे कोई फायदा नही होगा। यह हमारी लडाई नही, राणा वहादुरसिह और हरनाम की लडाई है।"

उत्तेजित भीड गालिया वकनी शुरू करती है, "साला कायर है, डरपोक है, हिजडा है, दलाल है· "

हरनाम को परिस्थितिया अनुकूल मालूम पडती हैं। वस, वह चिल्लाता है, "मारो साले को·· मारो साले को। "

भीड सोमारू के ऊपर टूट पडती है। वूढा कहार हरिहर सोमारू को वचाने के लिए दौडकर उसके ऊपर झुक जाता है। वौखलाई हुई भीड यह सव कुछ नही देख पाती। वह चारो ओर से प्रहार करना शुरू कर देती है। हरिहर का माथा फट जाता है। वह लुटककर एक ओर गिर पडता है। हरिहर के माथे से फव्वारे की तरह निकलता खून वहा की जमीन को भिगोने लगता है। वस, भीड थम जाती है। हरिहर के हाथ-पाव छटपटा रहे हैं। लेकिन वहा खडे सभी अवाक् हैं। फिर क्षणभर वाद ही हरिहर का वदन शात पड जाता है। वह सदा के लिए आखें वन्द कर लेता है।

झुनिया दौडते हुए आती है और वावू के शरीर पर लोट-लोटकर चीत्कार करने लगती है। झुनिया का चीत्कार हृदय-विदारक होता है। फिर भी कोई उसे चुप नही कराता है। सोमारू वहा नही है। कही चला गया है।

रात का दूसरा पहर गुजर रहा है। झुनिया अपने दरवाजे पर खडी

है। उसका चेहरा आंसुओं से भीगा है। उसे अब [illegible] आ है? उसके बापू भी उसे छोड़कर मदद [illegible] के लिए चले गए हैं।

अचानक अन्धकार को पार करता हुआ एक आदमी सामने आता है। वह दौड़कर मुनिया के करीब चला आता है। मुनिया उसे पहचान लेती है—वह सोमारू है। मुनिया देखती है सोमारू का चेहरा आंसुओं से तर है। सोमारू भी मुनिया का चेहरा देख रहा है, मुनिया की आंखों से भी आंसू अविरल गति से बह रहे हैं। सोमारू का दुःख [illegible] जाता है। वह अपने को रोक नहीं पाता। अपने दोनों हाथ फैला देता है। अब मुनिया से भी रहा नहीं जाता है। वह अपने को सोमारू की भुजाओं में फेंक देती है। फिर सोमारू मुनिया को चूम लेता है और मुनिया सोमारू को।

बन्दूक की आवाजें होती हैं। साथ ही हो-हल्ला भी। शायद लड़ाई छिड़ गई है। अब सोमारू और मुनिया वहां से उठकर साथ-साथ चल देते हैं। वे इस गांव को छोड़कर जा रहे हैं। अब लौटकर कभी इस गांव में नहीं आएंगे। रोजी-मजूरी करके कहीं भी कमाएंगे और साथ-साथ रहकर ही अपनी जिन्दगी गुजार देंगे।

गांव से काफी दूर आकर वे 'गोमार' के पास चले आते हैं। यहां भी गांव से आने वाली बन्दूक और हल्ला-गुल्ला की आवाजें उन्हें सुनाई पड़ रही हैं। चांद निकल आया है। खूब चटक अंजोरिया। रात में उन्हें सब कुछ दिखाई पड़ रहा है। मुनिया 'गोमार' के चबूतरे पर खड़ी होकर अंतिम बार गांव को देखती है। मुनिया को याद है बचपन में गाय चराते-चराते जब वह यहां आ जाती थी तो इसी 'गोमार' के चबूतरे पर खड़ी होकर अपना गांव देखती थी। तब उसे अपना गांव मकड़ी के जाले की तरह दिखता था और कौन किसका मकान है, यह पहचान पाना उसके लिए बड़ा मुश्किल हुआ था।

आज भी इस अंजोरिया रात में मुनिया को अपना [illegible] की तरह ही लगता है। लेकिन अब गांव के दो पहचान में आ जाते हैं। वे बाबा बहादुरसिंह और [illegible] के सभी मकानों को दबाकर वे मकान काफी ऊंचे [illegible]

झुनिया को लगता है कि उसके बचपन से लेकर आज तक उ
गाव कितना बदला है, यह दूर से ही पहचाना जा सकता है। इसी पो
के चबूतरे से।

गाव की ओर से नजर घुमाकर झुनिया सोमारू का हाथ पकड लेत
फिर दोनो तेज-तेज कदम बढाते हुए आगे की ओर चल देते हैं।

सगीता बनर्जी

आज सुबह अखबार मिलने से पहले मुझे 'अबला निकेतन' का निमंत्रण पत्र मिला। 'अबला निकेतन' मेरे छोटे नगर की एक बड़ी संस्था है। इससे व्यक्ति अवगत हो चुके हैं। निमंत्रण-पत्र पढ़कर मुझे खुशी हुई कि यह संस्था इस वर्ष अपनी पच्चीसवीं वर्षगांठ (रजत जयन्ती) मनाने जा रही है। लेकिन अन्दर से मैं पूरी तरह उद्वेलित हो चुका हूं। एक अनकहा दर्द और एक अनाम-सी बेचैनी ने मुझे घेर लिया है। मन को सिर्फ एक बार निमंत्रण-पत्र देख लेने से ही सन्तोष नहीं हुआ। पुनः एक बार फिर निमंत्रण-पत्र खोलकर देखने लग गया हूं

'मान्यवर,

'अबला-निकेतन' नामक आपके शहर की यह संस्था आपकी सेवा में इस वर्ष अपनी उम्र का पच्चीसवां वर्ष पूरा करने जा रही है। इस पच्चीसवीं वर्षगांठ (रजत जयन्ती) के उपलक्ष्य में इस संस्था की संस्थापिका स्व० संगीता वर्मा की एक बहुत अच्छी आदमकद मूर्ति स्मारक के रूप में इस संस्था के मुख्य द्वार के पास स्थापित की जाएगी। इस अवसर पर देश के अनेक गणमान्य बुद्धिजीवी समाजसेवी तथा नेता पधार रहे हैं। अतः इस शुभ मौके पर हम आपको सादर निमंत्रित कर रहे हैं, क्योंकि यह संस्था आप सभी के सहयोग से ही निर्मित हुई है।

इस संस्था की अब तक की महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं का सार-संक्षेप हम आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं

१ अपनी इस पच्चीस साल की अवधि मे इस सस्था ने पाच हजार ऐमी असहाय लडकियो की शादी की है जो दहेज, जाति-पाति तथा सामाजिक रूढियो के चलते जिन्दगी भर अविवाहित रहने वाली पीडादायक स्थितियो से गुजरने लगी थीं।

२ इस सस्था ने इसी अवधि मे दो हजार विधवा-विवाह भी किए हैं।

३ इसी अवधि मे इस सस्था ने लगभग तेरह सौ ऐसी महिलाओ को आश्रय दिया है, जो लावारिस, सामाजिक रूप से बहिष्कृत तथा अपने पति और परिवार द्वारा परित्यक्ता थी।

अपने इस कार्य को वह सस्था अपना दूधमुहा प्रयास मानती है। यह निरन्तर इससे आगे बढने की कोशिशो मे प्रयत्नशील है। इस सस्था के तमाम सदस्य इस बात के लिए प्रतिबद्ध हैं कि वे अपनी तथा इस क्षेत्र मे अपनी सक्रियता को व्यापकता प्रदान करते जाएगे। इसके लिए आपका सहयोग इस सस्था को प्रार्थनीय है।

भवदीय

—इला भाटिया

सचिव, अबला-निकेतन'

निमत्रण-पत्र पढकर बन्द कर देता हू। आखें अपने-आप मुद जाती हैं। इस नगर के उत्तरी छोर पर स्थित 'अबला-निकेतन' का लम्बा-चौडा घेरा, उसके अन्दर की चमकती कोठरिया तथा उसका बडा-सा मुख्य फाटक आखो के सामने तैरने लगते हैं। फिर अतीत को फाडकर सगीता बनर्जी एकदम बीच फाटक पर खडी नजर आती हैं। उनके चेहरे पर शिकन की कही कोई रेखा नही है। वही ताजगी, वही रौनक, मुस्कराती हुई वही आखें, चेहरे का वही अदाजे-बया । फिर कानो मे उनकी बेलौस हसी, उन्मुक्त बातें और बेबाक विचारधाराए गूजने लगती हैं। लगता है, जैसे लम्बा अतीत बिल्कुल सिमटकर कल की बात बन गया हो।

मेरे साथ ऐसा यह तेरहवी बार हो रहा है। इस संस्था की बारहवी वर्षगाठ तक सगीता बनर्जी जिन्दा थी। इसके बाद वह इस सस्था को ही नही, इस नगर और इस धरती को छोडकर सदा-सदा के लिए चली गई।

उनके चले जाने के बाद जब भी इस संस्था की वर्षगांठ मनाई गई वह मुझे बुरी तरह याद आती रहीं। आंखों के सामने नाचती उनकी आकृति और कानों में गूंजती उनकी बातें मुझे अन्दर ही अन्दर उफनाती रहीं। लेकिन नहीं। अब मुझसे खामोश रहकर यह सब कुछ और नहीं सहा जाएगा। अब मुझे अपनी चुप्पी बेहद अखरने लगी है। मैंने कसम उठा लिया है। यह कहानी उसी चुप्पी को तोड़ने का प्रयास है।

हालांकि अपनी जिन्दगी में संगीता बनर्जी ने कई दफा मुझसे कहा था — श्रीवास्तवजी मैं आपके लिए एक बहुत बढ़िया कहानी का विषय छोड़ जाऊंगी। लेकिन हर बार व्यंग्यात्मक टोन में मैंने उनकी इस बात को उड़ा देने की कोशिश की थी — संगीताजी, अब कहानियों का उद्देश्य मात्र मनोरंजन करना नहीं है। आप जो विषय देंगी वह निश्चित रूप से आउट आफ डेट होगा।

आज इस बात को लेकर मुझे गहरा अफसोस है कि तब संगीता बनर्जी को मैं पहचान नहीं पाया था, अन्यथा इस तरह कभी नहीं कहता। दरअसल वह जिन्दगी बिल्कुल दो स्तरों पर जी रही थीं। उनकी जिन्दगी उनके व्यवहार और उनके सम्बन्ध कुछ और ही होते थे जबकि उनकी बातें, उनकी मान्यताएं और उनकी स्थापनाएं कुछ और ही होती थीं। दोनों में मूलतः बहुत बड़ा फर्क था। आज मुझे लगता है कि मैं उनके विचारों और उनकी स्थापनाओं से भ्रमित होकर स्थूल रूप में ही उनमें पुड़ा था। इसीलिए मैंने उन्हें गलत ढंग से समझने की कोशिश की थी। इसके लिए आज मुझे बहुत खेद है। अब मैं जिन्दगी भर अपनी इस भूल का प्रायश्चित करूंगा। अगले रविवार को उनकी संस्था की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर उनकी चमकती आदमकद मूर्ति मुख्य द्वार के सामने लग जाएगी। इस नगर में ही नहीं इस नगर के अगल-बगल के तमाम नगरों तथा छोटे बड़े कस्बों में भी उनके असंख्य प्रशंसक हो गए हैं। उनके द्वारा सामाजित स्त्री-पुरुष तथा उनके परिवार अब निश्चय ही उनकी इस मूर्ति के आगे माथा झुकाएंगे। वे वास्तव में इस योग्य थीं यह बात मुझे भी आज ही समझ में आ रही है। इसीलिए इस कहानी के माध्यम से अच्छी तरह न पहचान पाने का प्रायश्चित मैं कर रहा हूं।

हा, तो सुनिए, सगीता वनर्जी की कहानी मैं आपको शुरू से ही वता रहा हू। वह इस नगर की मूल निवासी नहीं थी। लेकिन कहा की थीं—मुझे आज तक मालूम नही। मेरे नगर के कुछ लोगो का कहना है कि वह कलकत्ता की थी। कुछ लोग उन्हें दिल्ली की मानते हैं। चन्द वैसे भी लोग हैं, जो उन्हे वम्वई मे जुडा हुआ वताते हैं। इनमे कौन-सी वात सही है, कह पाना मुश्किल है। लेकिन हा, इतना तो दावे के साथ कहा जा सकता है कि वह किसी महानगर की ही थी क्योकि हमारे इस कस्वेनुमा शहर से उनके आचार-विचार और रहन-सहन तनिक भी मेल नही खाते थे। उनकी सभ्यता और सस्कृति को हमारे शहर का वातावरण पचा नही पाता था।

हमारे शहर मे उनका आना विल्कुल आकस्मिक रूप से ही हुआ था। इसका श्रेय हमारे शहर के एक विल्कुल मस्तमौला मनमौजी टाइप के व्यक्ति को है। उस व्यक्ति ने ही सगीता वनर्जी को इस नगर की नागरिकता से जोड दिया था। लेकिन उस व्यक्ति ने अन्त तक सगीता वनर्जी का साथ नहीं दिया था। चद सालो के वाद ही उनसे विदा ले वह सदा के लिए रुख्सत हो गया था।

यहा जव सगीता वनर्जी की कहानी मैं आपको सुना रहा हू, उस व्यक्ति का जिक्र करना भी मुझे वेहद जरूरी लगने लगा है। यह इसलिए भी कि मेरे नगर का वह पहला व्यक्ति था जिसने सगीता वनर्जी को पहचाना था और उन जैसी महिला को अपना जीवनसाथी वनाया था। आज मुझे लगता है कि मेरे शहर का सवसे वडा भाग्यशाली आदमी भी वही था, क्योकि उसे सगीता वनर्जी की जिन्दगी को अत्यन्त करीव से देखने और परखने का मौका मिला था।

तो वह मल्होत्रा नामक व्यक्ति मेरे शहर का एक प्रोफेसर था। विल्कुल मस्तमौला और मनमौजी। वह जिन्दगी जीने के अपने तरीको में विश्वास करना था। परिवार से उसे सन्तुष्टि नही थी। उसका परिवार काफी भरा-पूरा था। उसका वडा लडका, जो आज इस नगर का कोई उच्च पदाधिकारी है, उस समय ही नौकरी पर लग गया था।

लडके-लडकियो से पहले मल्होत्रा की जिन्दगी वडी मजेदार थी। लेकिन धीरे-धीरे परिवार के वढ जाने तथा लडके-लडकियो के सयाने हो

के बीच मल्होत्रा कभी आडे नही आया था।

मल्होत्रा की जिन्दगी के अन्तिम दिन बहुत खुशनसीबी से गुजरे थे, ऐसा वह अपने मित्रो से बताता था। और इसके मूल मे सगीता बनर्जी का अपनी जिन्दगी मे प्रवेश ही वह मानता था। वह सगीता बनर्जी तो तहे-दिल मे चाहने लगा था। उसे इस बात का गहरा दुख था कि सगीता बनर्जी जैसी महिला उसे उसकी जिन्दगी के आखिरी मुकाम पर मिली। काश, अगर वह शुरू मे ही मिल गई होती!

जहा तक सगीता बनर्जी के रूप और सौंदर्य का सवाल है, वह भी इस शहर के लिए दर्शनीय ही था। हालाकि एक युवती की जो उम्र होती है, उसकी सीमा वह निश्चित रूप स लाघ चुकी थी। फिर भी इस शहर की किसी भी खूबसूरत युवती से उनका रूप और सौदर्य किसी भी मायने मे कम आकर्षक नही था।

सगीता बनर्जी को तब देखते ही बनता था, जब मल्होत्रा अपनी जिदगी के आखिरी क्षणो की अस्वस्थता झेल रहा था। तब इस नगर मे कोई ऐसा डाक्टर नही बचा था, जिसके पास सगीता बनर्जी नहीं गई हो और उसे लेकर मल्होत्रा को दिखाने नहीं ले आई हो। सगीता बनर्जी ने इस नगर के बाहर से भी कुछ डाक्टरो को बुला कर मल्होत्रा को दिख-लाया था। मल्होत्रा के लिए उन्होने दूर दूर से दवाइया भी मगवाई थी, पर मल्होत्रा बच नही सका था। उनको बीच रास्ते मे ही छोडकर चला गया था। किन्तु उन्हें इस बात की खुशी थी कि मल्होत्रा को सहज मृत्यु प्राप्त हुई है, क्योंकि मरने से दो दिन पहले मल्होत्रा ने उनसे कहा था कि 'अब उसे जिन्दगी में किसी चीज की चाह नही। उसके मन की हर मुराद पूरी हो गई है।'

इससे पहले एक बार मल्होत्रा को वह मृत्यु के मुह से खीच लाई थी। तब मल्होत्रा इसी तरह बीमार था और नही लग रहा था कि बचेगा। लेकिन अपनी निष्ठा और हार्दिक सेवा के बल पर उन्होने उसे बचा लिया था। फिर एक लम्बे समय तक मल्होत्रा उनके साथ सुख से रहा था। इस बीच मल्होत्रा बराबर ही उनसे कहा करता कि 'मेरी जिन्दगी मे आकर तुमने मेरी उम्र बढा दी है। काश, मैं तुम्हारी ही उम्र का

होता ताकि लम्बे समय तक मुझे तुम्हारा साथ मिलता !'

जिस दिन मल्होत्रा की मृत्यु हुई थी उस दिन उसके घर कई लोग गए थे। हालांकि इसके पहले उसके घर कभी कोई नहीं आता था। वह सिर्फ अपने पड़ोसियों की नजर में ही नहीं बल्कि पूरे शहर की निगाहों में पतित हो गया था। जब से संगीता बनर्जी उसकी जिन्दगी में आई थी उसका परिवार उससे बहुत घृणा करने लगा था। संगीता बनर्जी के आने के बाद मल्होत्रा के परिवार को किसी ने कभी उधर भटकते हुए नहीं देखा था। लेकिन हां मल्होत्रा की मृत्यु के बाद उसका पूरा परिवार पत्नी लड़कियां बहुएं तथा लड़के सब साथ आए थे। मल्होत्रा का बड़ा लड़का शव-यात्रा की तैयारी कर रहा था।

लेकिन संगीता बनर्जी ! वह गुमसुम और उदास जरूर थी मगर उनकी आंखों में आंसू का एक कतरा भी नहीं था। वह अन्य औरतों की तरह हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठी भी नहीं थी। बिना किसी के कहे-सुने शव-यात्रा की तैयारियों में संलग्न थी। जानती थी कि उनका परिवार यह सब कुछ करने भी नहीं आता लेकिन लोक-परलोक और शहर की आलोचनाओं के डर से आया है।

शव-यात्रा के साथ-साथ संगीता बनर्जी को ले चलने के लिए कोई तैयार नहीं था। लेकिन उन्हें रोकने की क्षमता भी तो किसी में नहीं थी। दर-असल कोई उनसे बोलता ही नहीं था। वह शव-यात्रा के साथ-साथ चुपचाप श्मशान तक गईं। फिर अलग बैठकर सब कुछ देखती रहीं। जब मल्होत्रा की लाश धू-धू करके जल उठी तब वे श्मशान से लौट आईं।

यह संगीता बनर्जी के मेरे शहर में आने और मल्होत्रा के साथ रहने की कहानी है। संगीता बनर्जी की सही और असली कहानी अब यहीं से प्रारम्भ होगी।

जिस संगीता बनर्जी को आज मैं सही मान रहा हूं उस समय मैंने भी उन्हें पूर्णतः गलत समझा था। असल में उनके स्थूल रूप से अलग हटकर उनकी सूक्ष्म भावनाओं विचारों और स्थापनाओं को कहीं बहुत गहरे में उतरकर मैंने कभी टटोलने की कोशिश नहीं की थी। मैंने कभी

यह जानना नहीं चाहा था कि पूरे शहर की जुबान मे बदनाम सगीता बनर्जी नामक इस महिला के चेहरे से ताज़गी लुप्त क्यों नहीं होती थी ? वह क्यों शिथिल नहीं पड रही थीं ? सामाजिक स्तर पर सघर्षरत अपनी जिंदगी मे वह क्यो निरन्तर वृद्धि ही करती जा रही थी ? वह कभी भी टूटी क्यों नहीं थी ? किसी भी व्यक्ति मे उन्हें, किसी भी तरह का सम-झौता कर लेने के मूल मे क्या था ? वह क्यों मल्होत्रा के बाद किसीसे शादी करना नहीं चाहती थी ? वह सुख-सुविधाओ का रास्ता छोड अपनी जिंदगी को जोखिम-भरे रास्तो से क्यो गुजार रही थी ?

दरअसल, उस समय मेरे सामने इस तरह के सवाल ही पैदा नहीं हुए थे। उनके सगमरमरी जिस्म और दूधिया हसी को लेकर इस शहर ने इतने अधिक अफसाने गढ दिए थे कि उन अफसानो को परे ढकेलकर कुछ सोचना ही मुश्किल था।

आज वे अफसाने बहुत पुराने और धुधले पड गए हैं। सगीता बनर्जी की स्थापनाओ ने लोगो को चौंधिया दिया है। प्राय हर व्यक्ति अब उन्हें न पहचान पाने का खेद प्रकट कर रहा है। इस अवसर पर, कही बहुत गहरे में जाकर मैंने सगीता बनर्जी का मूल्याकन किया है। यह जान-कर कि वे पूर्णत सही थीं, मेरे अन्दर एक सुखद एहसास की अनुभूति हो रही है। साथ ही मैं इस बात के लिए आसू भी बहा रहा हू कि उस समय मेरी समझ इतनी दकियानूसी क्यो थी ? मैंने बहुत बडी भूल की है। अब मैं कभी माफ नही किया जाऊगा। इस एक कहानी से क्या, इस तरह की कई कहानिया लिखकर अब मुझे प्रायश्चित्त करना है। एक कहानीकार के लिए यह कितनी अशोभनीय और हास्यास्पद बात है कि कोई महिला उसे अच्छी तरह पहचान जाती है, लेकिन समय रहते वह उसे नही पहचान पाता है।

मल्होत्रा की मृत्यु के बाद सगीता बनर्जी इस शहर मे बिलकुल अकेली बच गई थी। उनका कोई हमदर्द, कोई रिश्तेदार और कोई अपना नहीं था, लेकिन इसपर भी वह इस शहर को छोडने की स्थिति मे नही थी। शहर की बात तो अलग, मल्होत्रा ने जिस किराये के मकान मे रखा था, वह मकान भी वह नहीं छोड सकी थी। हालांकि मल्होत्रा बहुत अधिक

पैसा उनके नाम नहीं छोड़ गया था। मल्होत्रा द्वारा छोड़े गए पैसों और सामानों से वह बमुश्किल तीन महीना ही गुजर-बसर कर सकी थी। इस बीच शहर के कई प्रतिष्ठित लोगों के यहाँ जाकर उनके बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने की बात भी वे कर आई थीं तथा इस शहर में अपने परिचय के दायरे को भी वह विस्तृत करने लगी थी।

इस तरह मल्होत्रा के अभाव में संगीता बनर्जी ने अपनी आजीविका की समस्या हल कर ली थी। लेकिन यही बात मेरे छोटे और दकियानूसी शहर को अखर गई। यहाँ के लोगों ने उनके ऊपर कीचड़ उछालना शुरू किया। वह जिन-जिन घरों में ट्यूशन पढ़ाती थी तथा वह जिन जिन लोगों से मिलती थीं उनके नामों को उनसे साथ जोड़कर लोगों ने उन्हें बदनाम करना शुरू कर दिया। असल में इस शहर में बहुमत पुराने ख्यालात वाले लोगों का है। वे नारी को पुरुष की भोग्या मानते हैं। नारी स्वतन्त्र होकर अपनी आजीविका और अपने व्यक्तित्व को संभाल सकती है यह बात उनके गले के अन्दर नहीं उतरती है। उनकी मान्यता है कि नारी चाहे जिस रूप में रहे उसे पुरुष की आश्रिता होकर ही जीना है। संगीता बनर्जी ने उन्हें एक तेज झटका दिया था इसीलिए वे बौखला गए थे।

हालांकि संगीता बनर्जी ही मेरे शहर की एकमात्र महिला नहीं थीं जो कमाती थीं। अनेक महिलाएं इस शहर के विभिन्न क्षेत्रों में तब भी कमाती थीं और अब भी कमा रही हैं लेकिन वे संगीता बनर्जी की तरह स्वतन्त्र नहीं हैं। किसी न किसी पुरुष का संरक्षण और आश्रय उन्हें प्राप्त है ही।

उन्हीं दिनों कुछ मनचले टाइप के लोगों ने संगीता बनर्जी से मिल कर यह कहा था कि अभी आपकी उम्र कोई खास नहीं है। अभी तो सारी जिन्दगी बाकी है। देखने में भी आप तनिक पुरानी नहीं लगती हैं। आपके लिए बेहतर यही है कि पुनः शादी करके कायदे से जिन्दगी गुजारें।

लेकिन संगीता बनर्जी ने जो जवाब दिया था, उससे मेरे शहर के लोग एकदम भौंचक्के हो गए थे। संगीता बनर्जी ने बताया था कि मल्होत्रा से यह उनकी चौथी शादी थी। उनके अनुसार इन चार शादियों के बीच

'शादी' नामक रस्म की अर्थवत्ता को उन्होने खूब गहराई से जीया और भोगा है। इसीलिए अब उन्हें शादी से सख्त एलर्जी है।

आज मुझे सगीता बनर्जी की यह बात अत्यन्त गहन और अनुभवपूर्ण लगती है। किन्तु तब मेरे शहर के लोगो ने इसका उलटा ही अर्थ लगा लिया था। उन्होंने यह बात प्रचारित कर दी थी कि शादी से इसे अपनी स्वतन्त्रता मे अड़चन महसूस होती है। यह अब शादी नही करेगी। मनमाने ढग से इस शहर मे भ्रष्टता फैलाएगी।

लेकिन सगीता बनर्जी को इसकी कोई परवाह नही। वह पहले की तरह ही सडको पर अकडकर चलती थी तथा कही भी किसी विषय पर बात करते हुए उन्मुक्त ठहाके लगाती थी। शायद यह उनके जीवन की सबसे बडी विशेषता थी कि परेशानियो, समस्याओ और आपदाओ को वह अपने चेहरे की उदास व गमगीन रेखा नही बनने देती थी। साथ ही नारी सुलभ भावुकता से भी वह बिल्कुल परे थी।

हमारे नगर के अफसर, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार यानी कुल मिलाकर बुद्धिजीवी वर्ग मे उनकी पैठ एक घटना के बाद हुई थी। यहा के प्रगतिशील समझे जाने वाले कुछ लोग एक नाटक का आयोजन कर रहे थे। उस नाटक में मुख्य भूमिका एक औरत की थी। लेकिन दुर्भाग्य कि उस तरह की औरत इस नगर में उन्हें मिल नही रही थी। फिर भी पता नही कैसे, यह बात सगीता बनर्जी के कानो मे भी पडी। बस, यहा के प्रसिद्ध रगकर्मियो से मिलकर, उन्होंने उनकी समस्या दूर कर दी। उस भूमिका के लिए वह तैयार हो गई।

उसके बाद इस शहर मे अब तक कितने नाटक हुए, लेकिन लोग कहते हैं कि वैसा नाटक आज तक नही हुआ। उस नाटक का मचन लगातार तीन दिन तक हुआ। सिर्फ सगीता बनर्जी की भूमिका को देखने के लिए ही पूरा शहर उमड पडा था। यहा के साहित्यिक रुचि वाले डी० एम० ने एक हजार रुपये से सगीता बनर्जी को पुरस्कृत किया था। और रातोरात ही सगीता बनर्जी इस शहर के बुद्धिजीवी वर्ग की जुबान पर चढ गई थी। फिर बुद्धिजीवियों का उनसे मिलने, किसी भी सास्कृतिक कार्यक्रम मे उनको निमन्त्रित करने तथा क्लबो और रेस्तराओ मे उनके साथ घूमने

की प्रक्रिया जोरों पर आ गई थी।

लेकिन जैसा कि होता है बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। वह मेरे शहर की छोटी मछली थी। उसके पीछे किसी तरह की सुरक्षात्मक शक्ति तथा पर्याप्त आर्थिक सुविधाएं नहीं थी। इसीलिए इस शहर के बुद्धिजीवी वर्ग ने परोक्ष प्रत्यक्षतः उन्हें आर्थिक सुविधाओं से जोड़कर उनका इस्तेमाल शुरू किया। इसे ही सुमे शब्दों में यों कहूं कि वे उन्हें लूटने लगे। उनकी संगमरमरी देह और दुबिया हंसी के परे उनका प्रखर और ज्वलन्त व्यक्तित्व इतम की निगाह किसीके पास नहीं थी। लेकिन लोग कहते हैं कि इस लूट खान में भी संगीता बनर्जी तनिक भय भीत नहीं हुई थी। इस शहर में पूरी तरह बदनाम हो चुकने के बाद भी उनके ठहाके गुम नहीं हुए थे और उनके चहरे पर मायूसी की कोई भी रेखा नहीं उभरी थी। शायद इसीलिए मेरे नगरवासी इस शहर को दोषी न समझकर उन्हें ही दोषी समझते थे।

तब पता नहीं क्यों मेरी निगाह भी धौपट हो गई थी। पान और चाय की कई दुकानों पर उनके विषय में चटखारे ले-लेकर बातें करते हुए मैंने भी लुत्फ लिया था। आज मुझे लगता है कि आदमी अनुभव के दौरान चीजों को देखता-समझता जरूर है लेकिन अनुभव के बाद ही काफी गहराई से उन्हें परखता है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ है।

संगीता बनर्जी से मेरा व्यक्तिगत परिचय 'अबला निकेतन' नामक संस्था के निर्माण के लिए उनके द्वारा बुलाई गई मीटिंग के बाद हुआ था। दरअसल एक लम्बे समय तक बदनामी और आलोचना की तेज धार पर चलने के बाद संगीता बनर्जी ने इस नगर में 'अबला-निकेतन' नामक एक संस्था के निर्माण की बात अपने मन में तय की थी। लेकिन पता नहीं यह योजना शुरू से ही उनके मन में थी या बाद में उठी थी? हमें तो इसकी सूचना तब मिली थी जब इस नगर में उन्होंने एक आम सभा का आयोजन किया था। सभा में प्रायः सभी सोचने-समझने तथा कायदे से जिन्दगी जीने वाले जुटे थे।

सभा की कार्यवाही जब शुरू हुई थी और 'अबला निकेतन' नामक

सस्था के लिए प्रस्ताव पारित किया गया था, तब लोगो मे विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाए हुई थी। कुछ लोगो ने इसका समर्थन जरूर किया था, लेकिन अधिकाश लोग विरोध मे खडे हो गए थे। आवेश की स्थिति मे आकर तो कुछ लोगो ने मच पर सरेआम ऐलान भी किया था—'सगीता बनर्जी बदनाम महिला है। हम इसको चन्दा नही देंगे। 'अबला-निकेतन' नामक सस्था के नाम पर यह हमे ठगने का षड्यन्त्र रचा रही है।'

मगर अन्त मे सगीता बनर्जी जब मच पर बोलने लगी थी, तब जिस तरह उनकी जिन्दगी से हम कई बार आश्चर्यचकित हो गए थे, एक बार यहा फिर हम आश्चर्य मे पड गए थे। हमने पहली दफा जाना था कि सगीता बनर्जी को हिन्दी का बहुत अच्छा ज्ञान है। साथ ही 'महिलाओ की स्थिति' नामक जिस विषय पर वह बोल रही थी, उस विषय की उन्हें बहुत गहरी जानकारी थी।

जब उनका भाषण खत्म हुआ था, तब तमाम लोगो के बीच सन्नाटा छा गया था। प्राय सभी विरोधी-स्वर खत्म हो गए थे। फिर भी लोग खुलकर उनका समर्थन नही कर रहे थे, क्योकि सगीता बनर्जी की व्यक्तिगत जिन्दगी से उन्हें एलर्जी थी।

सभा विसर्जित होने के बाद सभी लोग अपने-अपने घर लौट गए थे। मेरे मित्र ने उसी क्षण सगीता बनर्जी से मेरा परिचय कराया था। मुझे आज भी अच्छी तरह याद है मेरा नाम सुनते ही सगीता बनर्जी चौंक गई थी, 'अच्छा, तो आप ही हैं श्रीवास्तवजी ! मैं आपसे बहुत दिनो से मिलना चाह रही हू। आपसे मिलकर मुझे हार्दिक खुशी हुई ।'

और फिर विभिन्न पत्रिकाओ मे छपी लगभग मेरी आधा दर्जन कहानियो की चर्चा उन्होंने खूब जमकर की। यहा यह कहने मे मुझे तनिक भी सकोच नही कि मैं इस नगर से पिछले कई वर्षों से लिख रहा हू, लेकिन सगीता बनर्जी ही इस नगर की पहली महिला थी, जिन्होंने मेरी कहानियो के चलते मुझे सम्मानित और आदरपूर्ण नजरो से देखा था। इसीलिए आज मेरे अन्दर यह बात दर्द बनकर उतर गई है कि वह मुझे मेरे सही सन्दर्भों मे पहचान गई थी। लेकिन उनका असली

रूप में उनकी ज़िन्दगी में नहीं पाया था।

मुझ से परिचय हो जाने के बाद वह अक्सर मेरे पास आने लगी थी। किन्तु मेरे पास वह सिर्फ इसलिए नहीं आती थी कि उन्हें मेरे पास आना होता था। बल्कि मेरे मुहल्ले में अपनी संस्था के लिए वह जब भी चन्दा उगाहने आती थीं मुझ से जरूर मिलती थीं। सहयोग के लिए वह मुझसे भी आग्रह करती थीं। पर न जाने क्यों वह जब भी मेरे पास आती थीं मेरा कहानीकार कहीं गुम हो जाता था। शहर में उनके बारे में फैली भ्रान्तियां मेरे ज़ेहन में मंडराने लगती थीं। फिर मेरी आंखें उनकी चर्चित संयमरसभरी देह और दुधिया हंसी पर टिक जाती थीं। वह मेरी कहानियों पर मुझसे बात करतीं। लेकिन यह सब मुझे पसन्द नहीं आता। मैं विषय बदल कर उन्हें नाश्ता कराने लगता तथा चाय पिलाने लगता। फिर दूसरी तरह की बातें शुरू कर देता, जो प्रायः मैं कभी किसीसे नहीं करता था।

आज जब मैं इन स्थितियों का मूल्यांकन करता हूं तब मुझे लगता है कि अफवाहें चाहे जितनी झूठी ही क्यों न हों, आदमी के सामने एक मोटी-सी चादर बुन देती हैं जिसके उस पार की दुनिया कुछ क्षणों के लिए एकदम ओझल हो जाती है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि संगीता बनर्जी का 'अबला-निकेतन' नामक संस्था के नाम पर कोई चन्दा नहीं दे रहा था। उनकी बदनाम ज़िन्दगी से फायदा उठाकर लोग इसी बहाने में चन्दा के नाम पर कुछ दे देते थे जो चन्दा कम, उनके रूप का मूल्य ही अधिक होता था। इसीलिए तत्काल ही यह खबर सनसनी की तरह पूरे शहर में फैल गई थी कि संगीता बनर्जी चन्दे के नाम पर 'धन्धा' करने लगी हैं। फिर भी संगीता बनर्जी न तो कहीं से टूटी थीं और न हताश ही हुई थीं। उसी लगन व निष्ठा के साथ संस्था के निर्माण में संलग्न रहीं थीं।

आज संस्था के पास अपनी ज़मीन, अपनी बिल्डिंग और चारदीवारी है। लेकिन तब संगीता बनर्जी ने अपने किराये के उसी छोटे मकान में संस्था की स्थापना की थी। उनके द्वारा बुलाई गई आम सभा के चौथ महीने बाद ही उनके मकान के सामने 'अबला निकेतन' की तख्ती टंग गई

थी। लेकिन इस तख्ती से लोगो मे किसी तरह सरगर्मी पैदा नही हुई थी। लोगो ने समझा था कि खडी होकर पानी के वुलवुले की तरह विलीन हो जाने वाली इस नगर की हजारो सस्थाओ की तरह ही इसका भी हश्र होगा।

लेकिन आज मुझे लगता है कि इस सस्था की निर्माणकर्त्री सगीता वनर्जी की जिदगी को न पहचान पाने के कारण ही लोगो ने ऐसा समझा था, अव जवकि वह अपनी स्थूल जिन्दगी को एकदम परे ढकेलकर, अपनी स्थापनाओं के माध्यम से सामने आ गई हैं, हर मन मे उनके प्रति पाली गई गलतफहमिया दूर हो गई हैं।

सगीता वनर्जी ने अपनी सस्था की पहली वर्षगाठ पर पुन एक सभा का आयोजन किया था। उस सभा मे वोलते हुए सगीता वनर्जी ने यह आकडा प्रस्तुत किया था कि 'इस प्रथम साल के शुभारम्भ मे ही पचीस असहाय, निरुपाय और अनाथ लडकिया तथा वीस विधवाओं की शादी इस सस्था ने की है। साथ ही ग्यारह लावारिस, वहिष्कृत और परित्यक्ता महिलाओ को इसने आश्रय दिया है।' इस आकडे को लोग अविश्वास-भरी निगाह से न देखें, इसके लिए सगीता वनर्जी ने उपर्युक्त सभी महिलाओं के नाम और पूर्ण पते प्रस्तुत किए थे।

अपनी आस्थापूर्ण और गम्भीर आवाज में सगीता वनर्जी ने आगे कहा था कि सस्था अपने इस आकडे को अपनी उपलव्धि नही वताती है, वल्कि सिर्फ यह सूचना देती है कि उसने अपना कार्य-क्षेत्र शुरू कर दिया है। और आप जानते ही हैं कि किसी भी कार्य की शुरुआत ही सिर्फ मुश्किल होती है।

सगीता वनर्जी के इस आकडे ने सचमुच मेरे शहर के लोगो को परिवर्तित होने के लिए वाध्य कर दिया था, क्योंकि वातें और वायदे झुठलाए जा सकते हैं, ठोस प्रमाण नही झुठलाए जा सकते। इस वात का एहसास मुझे आज नही, उनकी सस्था की पहली वर्षगाठ के दिन ही हो गया था कि उनके ऊपर से वदनामी की चादर धीरे-धीरे सरकने लगी है। लेकिन तव इसके मूल मे जाकर इसके औचित्य को प्रकाश मे लाने की मैंने कोशिश

नहीं की थी।

संगीता बनर्जी ने पर्चों द्वारा अपनी संस्था के नियमों को हर जगह प्रचारित कर दिया था। उनकी संस्था के नियम निम्नलिखित हैं

(१) कोई भी लड़की चाहे जिस तरह से अविवाहित रहने की स्थिति में आ गई हो, वह इस संस्था में अपना नाम दर्ज कराए। कोई जरूरी नहीं कि हर लड़की को इस संस्था में रहना ही होगा। वह अपनी सुविधानुसार कहीं भी रह सकती है। लेकिन संस्था के हर बुलावे पर उसे आना होगा। यह संस्था वर्ष भर के अन्दर उसकी शादी की गारण्टी लेती है।

(२) विधवाएं, चाहे जिस उम्र की हों जिस समस्या से आक्रान्त हों इस संस्था में पधारें या लिखें। यह संस्था उनकी इच्छानुसार, उनकी शादी तथा उनका इलाज करेगी और उन्हें रोजगार देगी।

(३) वे लावारिस औरतें दुनिया में जिनका कोई नहीं है समाज ने जिन्हें ठुकरा दिया है, पति और परिवार ने जिन्हें भगा दिया है वे इस संस्था में आएं। यह संस्था उनकी बाट जोह रही है। उनकी समस्या को समझते हुए यह संस्था उन्हें उचित रास्ता देगी ऐसा इस संस्था ने संकल्प लिया है।

(४) यह संस्था जाति और धर्म ही नहीं बल्कि रूढ़ियों और संस्कारों को भी ठुकरा चुकी है। इस संस्था में आने से पहले हर महिला को इनसे मुक्त हो जाना है।

(५) यह संस्था कभी और किसी समय बन्द नहीं रहती है। रात दिन आपकी सेवा में कर्तव्यरत है। आप जब चाहें पधारें। इस संस्था में आपका स्वागत है।

संगीता बनर्जी अपनी संस्था के इन नियमों की सफलता के लिए बहुत कुछ करती थी। संस्था के अन्दर उन्होंने छोटे-मोटे कई उद्योग शुरू कर दिए थे। इसी संस्था ने पहली बार इस शहर में हाथ के बुने स्वेटर बेचने शुरू किए थे। साथ ही ग्राहकों की पसन्द के अनुसार इस संस्था में विभिन्न तरह के स्वेटर की बुनाई तथा कपड़ों की सिलाई शुरू हो गई थी।

इस सस्था की महिलाओ को उनकी मनपसन्द शिक्षा भी दी जाने लगी थी। इस सस्था की कुछ पढी-लिखी महिलाओ ने टाइप का प्रशिक्षण ले लिया था। सस्था ने उनके लिए कुछ टाइपराइटर खरीद लिए थे। इनसे सस्था को अच्छी आमदनी होने लगी थी। अक्सर हिन्दी और अग्रेजी के अच्छे टाइप के लिए लोग इस सस्था मे पधारते थे और आज भी पधारते हैं। यहा इस बात का जिक्र भी बेहद जरूरी हो गया है कि इस सस्था के अन्दर किसी भी पुरुष के प्रवेश की सख्त मनाही थी और है। मुख्य द्वार के पास ही अनेक खिडकिया हैं, जहा से ग्राहको मे निपट लिया जाता है।

सगीता बनर्जी अपनी सस्था की विवाहेच्छुक महिलाओ के नाम, उम्र और योग्यता का विज्ञापन अखबारो मे प्राय हर महीने ही देती थीं। वह सिर्फ स्थानीय अखबारो मे ही नही, बल्कि इस देश के कई प्रमुख अखबारो में यह विज्ञापन देती थी। फिर जिस तरह मल्होत्रा के विज्ञापन पर वह इस शहर मे आई थी, उसी तरह इन महिलाओ के विज्ञापन पर अनेक पुरुष अभ्यार्थी आवेदन-पत्र देते थे। सगीता बनर्जी आवेदनकर्ताओ को अच्छी तरह परखकर, उन्हे साक्षात्कार के लिए बुलाती थी और कानूनी तरीके से अपनी सस्था की महिलाओ की शादी उनसे करती थी।

आज जब मैं सगीता बनर्जी की इस सस्था की उत्तरोत्तर लोकप्रियता के कारणो पर विचार करता हू, तो मुझे लगता है कि बदलते युग-बोध ने अनेक जीवन-मूल्यो को बदल दिया है, जिसने बहुत हद तक आदमी अपनी पूर्वापर स्थितियों मे भी बरी हो गया है। मेरा ख्याल है कि जागरूक युवा वर्ग की यह समझ हो गई है कि दहेज और जाति पाति के बधनो को ठुकराकर शादी करें। लेकिन एक सवाल भी इसके साथ ही है कि आखिर वे शादी करें तो कहा करें? क्या कोई लडका यो ही किसी लडकी के सामने प्रस्ताव रख दे? नहीं। क्योकि कोई जरूरी नहीं कि वह लडकी उस लडके से सहमत होगी। इसी तरह उपर्युक्त विचारो वाली किसी लडकी का किसी लडके के सामने प्रस्ताव रखना भी बेवकूफी है, क्योकि लडके की समझ लडकी की समझ से मेल खाएगी, इसकी कोई गारण्टी नही। लडके लडकी समान समझ के हैं यह जानकारी हासिल करना

बहुत कठिन काम है। और जब तक यह जानकारी हासिल नहीं होती है, कुंठिमुक्त शादी की कल्पना ही बेकार है। लेकिन संगीता बनर्जी ने इसकी कल्पना को मूर्त रूप दे दिया है। उनकी संस्था इस काम का माध्यम बन गई है। सिर्फ समान समझ के महिला-पुरुष ही उनकी संस्था में आते हैं जिनका एक-दूसरे के प्रति समर्पित हो जाना अनिवार्य ही है। शायद यही कारण है कि यह संस्था लोकप्रियता की आखिरी ऊंचाई को छूने जा रही है।

संगीता बनर्जी इस संस्था की महिलाओं की एक छोटी-सी टुकड़ी को लेकर, इस संस्था के लिए चन्दा उगाहने तथा इसका प्रचार करने इस शहर से बाहर के शहरों कस्बों तथा गांवों में भी जाती थीं। इस क्रम में उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली थी। उनके बाद भी यह परम्परा कायम है।

इस संस्था की हर वर्षगांठ पहली वर्षगांठ से अधिक धूमधाम के साथ मनाई जाती थी। और ताज्जुब यह कि हर वर्षगांठ के बाद संगीता बनर्जी की बदनाम जिन्दगी लोगों के दिलो-दिमाग और जुबान से उतरती जाती थी। शायद संस्था के बढ़ावे से ही ऐसा हो रहा था, क्योंकि मुझे अच्छी तरह याद है उनकी संस्था की ग्यारहवीं वर्षगांठ तक उनकी पूर्वापर *जिन्दगी प्रायः* लोगों के दिमाग से लुप्त हो चली थी।

संगीता बनर्जी के अन्तिम दिन बहुत आराम से गुजरे थे। इसके लिए मुझे हार्दिक खुशी है। लेकिन इसके मूल में रमा भाटिया का उनके जीवन में आना ही है। रमा भाटिया के आने से पहले वह इस बात के लिए चिन्तित रहती थीं कि उनके बाद उनकी संस्था टूट-बिखर जाएगी। लेकिन रमा भाटिया के आ जाने से उन्हें आन्तरिक सन्तोष मिला था। अपने जीवन काल में ही वह रमा भाटिया की कार्य-कुशलता और इस संस्था के प्रति उनकी आन्तरिक सम्बद्धता को काफी गहराई से जांच-परख चुकी थीं।

रमा भाटिया एक ऐसी महिला हैं जिनकी दो बार शादी इस संस्था से की थी। लेकिन उनके दोनों पति दुर्भाग्य से आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त हो गए थे। संगीता बनर्जी ने उनकी तीसरी शादी करनी चाही थी लेकिन

इला भाटिया ने अस्वीकार कर दिया था। तब से इला भाटिया इस संस्था को पूर्णत समर्पित हो गई है। वह काफी पढी-लिखी तथा सुलझे विचारो वाली हैं। सगीता बनर्जी की तरह उनका व्यक्तित्व व्यापक और बहुमुखी तो नही है फिर भी किसी न किसी रूप में सगीता बनर्जी की प्रखरता को वह पा गई हैं, जो उनके व्यक्तित्व की सबसे बडी विशेषता है।

•

सगीता बनर्जी की इस मशहूर सस्था की पच्चीसवीं वर्षगाठ समारोह से मैं अभी-अभी लौटा हू। सचमुच इस बार आयोजन व्यापक और भव्य था। सगीता बनर्जी की मूर्ति अनावृत्त करने के लिए इस देश के एक महान साहित्यकार को बुलाया गया था। साथ ही इस नगर के बाहर के नगरो, कस्बो और गावो से दर्शक के रूप मे असख्य लोग आए थे। इस सस्था को प्रकाश मे लाने के लिए स्थानीय तथा बाहर के प्रमुख अतिथियो ने अपना अपना भाषण भी दिया था।

लेकिन इला भाटिया के आग्रह करने पर भी मैं कुछ नही कह सका था, क्योकि सगीता बनर्जी की प्रतिमा अनावृत्त हो जाने के बाद मैं होश-हवास खो बैठा था। वही ताजगी वही रौनक · मुस्कराती हुई वही आखें चेहरे का वही अन्दाजे-बया! नही, यह सब कुछ मुझसे और नही सहा जाएगा·· ।

और मैं सभा विसर्जित होने से पहले ही चुपके से वहा से खिसक गया था। किन्तु उनकी आखें दूर तक मेरा पीछा करती रही थी। साथ ही कानो मे माइक पर गरजती इला भाटिया की आवाज गूज रही थी, "हर्ष के साथ यह सस्था आपको सूचित कर रही है कि इस नगर के बाहर के कई नगरो मे इसी साल से यह अपनी शाखाए खोलने जा रही है। पूरे देश मे यह अपने को पसार दे, यही इसका दायित्व है। सगीता बनर्जी ने इस दायित्व को मद्देनजर रखते हुए इस सस्था की स्थापना की थी। अब जबकि वह नही हैं, उनके सपने को हमे साकार बनाना है।"

मैं तेज-तेज कदम बढाते हुए अपने घर की ओर चल पडा था। लेकिन यहा आकर भी मुझे शाति नही है। सगीता बनर्जी की बडी-बडी खुली

आँखों ने मुझे अन्दर से रेत दिया है। मैं भीतर ही भीतर घुट रहा हूं। लग रहा है, जैसे चोरी करते हुए सरेआम पकड़ लिया गया हूं। काश इस शहर के तमाम लोगों की तरह मैं भी अतीत को भूल चुका होता।

लेकिन नहीं मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। शायद यह मेरे भाग्य की विडम्बना थी कि मुझे अपनी भूल के लिए अन्दर ही अन्दर घुटना था। खैर सुना है गलती स्वीकार लेने तथा अपनी व्यथा दूसरों से कह देने से आदमी हल्का हो जाता है। तो सुनिए, संगीता बनर्जी को उनकी संस्था के लिए, चाहे जिस तरह का सहयोग और मदद मैंने उन्हें दिया था, वह उनकी संस्था के नाम पर नहीं बल्कि उनके नारी-तन के कारण जिसके लिए आज मुझे गहरा दुख है। लेकिन यह दुख सिर्फ इसलिए नहीं है कि मैं उनका निकटतम बना बल्कि इसलिए कि तब मैं उन्हें पहचान नहीं पाया था।

नरेश वह

आज अपने गांव की एक अजीब औरत से मैं आपका परिचय करा रहा हूं। उसका अपना नाम क्या है मुझे मालूम नहीं। गांव का दिया हुआ उसका नाम नरेश बहू है। वह मेरे गांव में न तो बिटिया के रूप में किसी के घर जन्मी थी और न ही पतोहू के रूप में ही उसका आगमन हुआ था बल्कि आज से पच्चीस साल पहले बगल वाले गांव से भागकर वह मेरे गांव आई थी और तब से आज तक वह निरंतर मेरे गांव ही रहती आ रही है।

मेरे गांव से बाहर सड़क के किनारे जामुन का एक बहुत ही घना वृक्ष है। उसी वृक्ष के नीचे वह सारा दिन बैठी रहती है। वहां बैठकर बाहर से गांव आने वाले लोगों को वह चुपचाप निर्निमेष दृष्टि से घूरती रहती है। फिर जब शाम गहरान गी होती है, किसीके आने की संभावना खत्म हो जाती है, तब वह गांव लौट आती है।

शुरू-शुरू में गांव के लोगों को उसका इस तरह बैठना ठीक नहीं लगा था। कई लोगों ने उसे टोका था। कुछ लोगों ने डांट भी लगाई थी। लेकिन उसने किसीकी एक न सुनी। सुबह शाम अपने कामों से निबट वह रोज उस जामुन वृक्ष के नीचे आ बैठती। फिर एकटक गांव आने वाले राहगीरों को देखती रहती उसका वहां बैठना और राहगीरों को एकटक देखना तब से आज तक निरंतर जारी है।

अब धीरे-धीरे गांव के लोग उसे पागल समझने लगे हैं। अक्सर उसके

बारे मे बातचीत करते हुए वे उसे पागल सज्ञा से ही अभिहित करने लगे हैं। लेकिन यही बात मुझे अखरने लगी है, क्योंकि पागलो की तरह की कोई भी हरकत वह नही करती है। पागलो की तरह का कोई भी व्यवहार उसमें किसीने आज तक नहीं देखा है। फिर उसे पागल कहना, उनके प्रति सरासर अन्याय नही तो और क्या है?

मुझे लगता है, मेरी तरह गाव के प्राय सभी लोग यह जानते हैं कि जामुन वृक्ष के नीचे बैठकर वह किसकी प्रतीक्षा किया करती है? लेकिन जानबूझकर भी लोग अनजान बनने की कोशिश करते हैं। अपनी इस कोशिश मे उस प्रतीक्षा किए जाने वाले व्यक्ति को इस गाव से बिलकुल भुला देने की एक चतुर साजिश मेरे गांववाले काफी समय से करते आ रहे हैं। पर मेरे साथ सच्चाई यह है कि चाहकर भी मैं उसे भूल नही पा रहा हू। इसलिए समय रहते ही सीधे, सच्चे शब्दो मे आपको मैं यह बता देना चाहता हू कि वह पागल है या क्या है और जामुन वृक्ष के नीचे बैठकर वह किसकी प्रतीक्षा किया करती है?

बात बहुत पुरानी है। एक दिन मेरे गाव का एक युवक बीरू अपने खेतो मे हल जोत रहा था। वह समय गर्मियो के मौसम का था। जेठ की चिलचिलाती दोपहरी थी और बीरू तेजी के साथ हल जोते जा रहा था। आषाढ की पहली बरखा से पहले ही बीरू अपने समूचे खेत को जोत देना चाहता था। इसीलिए पूरी शक्ति और पूरे मन के साथ वह जुट गया। पर मौसम अनुकूल नही था। फलत शीघ्र ही वह थक गया। फिर रोज की भाति कुछ क्षण आराम करने के लिए सडक के किनारे वाले महुआ गाछ के नीचे आ बैठा।

अभी मुश्किल से उसको बैठे हुए दस-पद्रह मिनट भी नही हुए थे कि अचानक सडक से हाफती हुई एक जवान औरत वहा आई। वह औरत बीरू के लिए बिलकुल अपरिचित थी। फिर भी वेश-भूषा और रग-ढग से बीरू को साफ लग गया कि वह घर-परिवार के अदर की पर्दे के भीतर रहने वाली बहुरिया है।

बीरू के करीब आते ही वह भय और घबराहट के स्वर मे रोते हुए

बोली "भैया मुझे बचा लो। वे पकड़ लेंगे तो मुझे ज़िंदा जला डालेंगे। उनके साथ अब एक मिनट भी मैं नहीं रहूंगी अगर मैं जानती तो शादी से पहले ही ज़हर खा लिया होता।

बीरू ने मुड़कर देखा। सचमुच उस औरत को पकड़ने के लिए कुछ लोग बहुत तेज़ी से आ रहे थे। इससे पहले कि बीरू उस औरत से कुछ पूछता वे लोग भी आ धमके। उनकी संख्या तीन थी। उनमें से एक ने तेज़ी से आगे बढ़कर उस औरत के बाल पकड़ लिए। फिर कसकर उसके चेहरे पर एक तमाचा जमाया। इसके बाद उसे खींचते हुए वे चल पड़ा 'हरामज़ादी भागकर कहां जाएगी इज्ज़त बिगाड़ने पर ही तुली है बस तुझे इस बार काटकर आंगन में गाड़ नहीं दिया तो मेरा नाम नरेश नहीं "

अब तक बीरू हतप्रभ खड़ा चुपचाप देखता रहा। उसे तो जैसे काठ मार गया हो। वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे। लेकिन जब उस पुरुष के साथ घसीटती हुई जा रही औरत ने एक बार फिर पलटकर उसे देखा और अपनी रक्षा के लिए गिड़गिड़ाई भैया मुझे बचा लो मैं ज़िंदगी भर तुम्हें याद रखूंगी ये कसाई इस बार मुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे" तब बीरू की सारी किंकर्तव्यविमूढ़ता ख़त्म हो गई। उसका पुरुष जाग गया। वह सिंह की भांति तेज़ी से लपका और एक ही झटके में उस औरत को उस पुरुष के चंगुल से मुक्त कर दिया। अब उस पुरुष के सामने बीरू था। औरत उसके पीछे हो गई थी।

"तुम इसे रोकने वाले कौन हो? उस पुरुष ने गरजते हुए बीरू से पूछा।

"और तुम इसे बलात् ले जाने वाले कौन हो?" बीरू का जवाब भी एक गरजता हुआ सवाल बन गया।

"मैं इसका पति हूं। यह मेरी पत्नी है। उस पुरुष ने चिल्लाकर अपने अधिकार से बीरू को वाकिफ़ कराया।

'लेकिन पत्नी का अर्थ भेड़-बकरी नहीं होता है।" बीरू ने सधे हुए लहज़े में जवाब दिया।

"आखिर तुम कहना क्या चाहते हो?" वह पुरुष फिर गरजा।

'मेरे कहने का मतलब यह कि अब यह तुम्हारी पत्नी नहीं है। जब तक तुमसे निभ सकी, ठीक था। अब यह तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती है।"

"और यह फैसला करने वाले तुम हो?"

"नहीं, मैं फैसला करने वाला नहीं हू। किंतु एक अबला की रक्षा करने से चूकूगा भी नहीं।"

"तुम गुडे हो शोहदे हो किसी की इज्जत बर्बाद करने पर तुले हो "

"गालिया मत बको वरना जबान खींच लूगा।"

"तू मुझे धमकी देता है...हट जा मेरे सामने से!" उस पुरुष ने वीरू को धक्का लगाया।

"तेरी ये मजाल!" वीरू दहाड उठा, "मैं तेरा खून पी जाऊगा।" और वीरू ने अपने मजबूत हाथो से उस पुरुष का गला पकड लिया। उसके साथ के दोनो व्यक्ति जिनमे से एक मरियल बूढा था और एक रोगी लगनेवाला दुबला-पतला युवक, अपने गाव की ओर भाग चले। इधर आस-पडोस के खेतो मे काम करने वाले किसान हल्ला-गुल्ला सुनकर जुटने लगे। वीरू के खेत मेरे गाव से काफी नजदीक हैं और उस पुरुष का गाव भी वहा से करीब ही पडता है। इसीलिए बहुत जल्द ही दोनो गावो मे सनसनी की तरह यह खबर फैल गई। फिर दोनो गांवो के लोग वहा तेजी से जुटने लगे। देखते-देखते कुछ क्षणो मे ही वहा लोगो की भीड उमड पडी। फिर बातो-बातो मे ही लोग तैश मे आ गए। सवाल वीरू और उस पुरुष के झगडे का नही रहा। सवाल एक गाव से दूसरे गाव का मोर्चा लेने का हो गया। उस पुरुष के गाव के युवको ने ऐलान किया, 'यह औरत हमारे गाव की बहू है। हमारे गाव की इज्जत है। हम इसे किसी भी सूरत मे अपने गाव ले जाएगे।"

मेरे गाव के युवको ने जवाब दिया, "यह औरत चाहे किसी भी गाव की क्यो न हो जब यह जाना चाहती है तब आप इसे ले जा सकते हैं, वरना इसे जबरन हम कभी नही ले जाने देंगे।"

"शरणागतानाम् रक्षा परमो धर्म '—मेरे गाव के एक पडितजी ने

इस श्लोक का उच्चारण भी कर दिया। बस फिर क्या था दोनों ओर के युवक अपने-अपने गांव की शान रखने के लिए सिर पर कफन बांधकर सामने आ गए। भाले और गंडासे दोनों ओर से चमक उठे। कई बंदूकें भी कंधों पर आ गईं। इससे पहले कि खून का दरिया बहता दोनों ओर के बुजुर्ग युवकों को पीछे धकेलकर बीच में आ गए। क्योंकि मेरे गांव और उस पुरुष के गांव के काफी लोग एक-दूसरे के परिचित थे दोनों गांवों में काफी पटती भी थी इसीलिए बुजुर्ग दोनों गांवों के बीच खून-खराबी होने देना नहीं चाहते थे। मेरे गांव के बुजुर्ग काफी अनुनय-विनय और मुलायम स्वर में उस पुरुष के गांव के बुजुर्गों से बोले "आप लोग इस औरत को ले जा सकते हैं यह औरत आपके गांव की ही इज्जत है" हम रोकने का हमारा कोई अधिकार नहीं है लेकिन यह एक मानवीय जिंदगी है, इसीलिए हम जरूर यह जानना चाहेंगे कि इज्जत से कोई जिंदगी बड़ी होती है या छोटी ?

हमारे गांव के बुजुर्गों के इस सवाल पर उस पुरुष के गांव के बुजुर्ग एकदम निरुत्तरित हो गए। फिर देर तक सहानुभूतिपूर्ण और आपसी समझौते की बातें दोनों ओर से चलती रहीं। अंततः उस औरत को छोड़ कर ही उस गांव के लोगों को लौटना पड़ा। वह औरत हमारे गांव आ गई। उस औरत का पुरुष हार गया था। दरअसल उसके आतंक और मनमानी की चरम सीमा जो आ गई थी। और बीच बीत गया था। असल में उसकी लड़ाई बलात्कार और शोषण के खिलाफ़ जो थी। मानवीय हक के लिए बलात्कार और शोषण के खिलाफ लड़ी जाने वाली लड़ाई की तो जीत होती है न ?

हां तो उस दिन बीरू के खेत के पास से शाम को मजमा हटा। शाम गहराने के बाद मेरे गांव के लोग वापस लौटे। उनके चेहरे पर हर्ष और उल्लास की रेखाएं थीं। गर्व से वे सीना फुलाए हुए थे। वे बलात्कार और शोषण के खिलाफ लड़ी जाने वाली लड़ाई में एक औरत को जीतकर ले आए थे।

गांव में घुसने के बाद हर घर की खिड़कियों और दरवाजों पर

आ जुटी थी। ढेर सारी औरतें तो गलियो मे भी उतर गई थी। दरअसल वे उस औरत को अच्छी तरह देख लेना चाहती थीं, जिसके कारण दो गावो के बीच खून का दरिया बहने वाला था।

शाम के गहराते अवेरे मे उस औरत को राम बुझावनसिंह के दालान पर ले जाया गया। राम बुझावनसिंह मेरे गाव के सबसे ऊची पगडी के व्यक्ति हैं। सारा गाव उनकी इज्जत करता है। सरकार द्वारा जमींदारी छीन लिए जाने के बाद भी अभी उनके पास इतने खेत और इतनी जायदाद है कि समूचे गाव के ऊपर उनका रोबदाब पूर्वत बना हुआ है। गाव मे किसी भी तरह की वारदात होती है या कोई भी समस्या सामने आती है, राम बुझावनसिंह के दालान पर ही उसका फैसला होता है।

राम बुझावनसिंह के सामने उस औरत को पेश किया गया। अब तक हर फैसले की भाति इस बार भी गाव के लोगो का जमघट वहा लग चुका था। औरतें, बच्चे, बडे, बूढे सभी राम बुझावनसिंह के दालान पर जुट गए थे। मसनद के सहारे आराम से बैठे राम बुझावनसिंह कुछ क्षण तक उस औरत को देखते रहे। फिर उन्होंने अपना पहला सवाल उछाल दिया, "तुम अपने पति के घर से क्यो भागी हो ?"

उसने कोई जवाब नही दिया। माथा झुकाए वह चुपचाप खडी रही। भीड पूरी तरह खामोश हो गई थी। असल मे, राम बुझावनसिंह को ही नही, बल्कि सारे गांव के लोगो को इस सवाल का उत्तर चाहिए था। सभी यह जानने के लिए व्यग्र थे कि आखिर वह क्यो भागी है।

राम बुझावनसिंह पुन बोल पडे, "क्यो, चुप क्यो हो ? डर रही हो ? अब तुम्हें कोई नही तकलीफ देगा अब तुम स्वतत्र हो। लेकिन यह तो बताओ, आखिर क्यो भागी हो, कहा जाओगी ?"

इस बार भी वह कुछ नही बोली। चुपचाप पूर्वत खडी रही। लेकिन लग रहा था जैसे अन्दर ही अन्दर छटपटा रही थी। इधर भीड भी बेचैन थी। सास रोके लोग उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

राम बुझावनसिंह फिर बोल पडे। इस बार उन्होंने अपना सवाल बदल दिया था, "अच्छा, यह बताओ, किस गाव की बेटी हो ? तुम्हारे बाप का नाम क्या है ? क्या तुमको तुम्हारे गाव पहुचवा दिया जाए ?"

इस सवाल को सुनते ही वह फफककर रो पड़ी। फिर रोते हुए ही बोली "बाबू साहब अगर मां-बाप ही होते तब फिर मेरी यह हालत कभी न होती।"

"क्यों क्या हुआ तुम्हारे मां-बाप को ?"

"वे बचपन में ही मुझे छोड़कर इस दुनिया से चले गए।

"फिर तुम्हारी शादी किसने की ?

"चाचा चाची हैं। उन लोगों ने ही मेरी शादी की। शादी के बाद दहेज में उन्होंने काफी सामान देना मंजूर किया था लेकिन शादी हो जाने पर उन्होंने कुछ भी नहीं दिया। बस इसीके चलते मेरे ससुराल वाले मुझसे नफरत करते हैं आखिर मेरा कसूर ही क्या है मैं क्या कर सकती हूं मेरी सास मुझे रोज पिटती है मेरा पति रोज शाम को दारू पीकर आता है और अपनी मां के कहे अनुसार मुझे दो चार हाथ कसकर लगाता है। वे मुझ मार-मारकर ही दहेज न मिलने का गुस्सा उतार रहे हैं।"

"तब तुम अपने चाचा-चाची को खब

"मैंने खबर को थी पर उन्होंने कोई एक बार वहां गई थी। लेकिन उनकी अपन देते मुझे आंगन में एक क्षण भी उन्हें "ससुराल चली आएगी भागकर आई है लौट आ और मजबूरन मैं पुनः ससुराल ह एक मिनट भी ससुराल नहीं रहना चाहती गांव में जीवन बिता लूंगी किंतु अब वहां जिंदा ही आ जाना चाहती है मेरा पति व्यवहार करता है।" उस औरत ने अप कुम्भकर्नसिंह के सामने कर दी थी। लोग सारी पीठ जख्मों से भरी थी। उसकी पी सास और उसके पति के अत्याचार की दास

राम कुम्भकर्नसिंह ने ऐलान कि" " तुम्हें कोई तंग नहीं करेगा। इतने बड़े ॰ ॰ में

लीफ नहीं उठानी पडेगी। इस गाव मे तुम कही भी रह सकती हो। आज मेरे घर जाकर सोओ। कल सुवह जहा इच्छा हो, रहना।" इसके बाद सभा खत्म हो गई। राम बुझावनसिंह ने नौकर को इशारा दिया। राम बुझावनसिंह का नौकर उस औरत को लेकर हवेली के अदर चला गया। अव भीड विखरने लगी। लोग टुकडो-टुकडो मे वटकर अपने-अपने घर की ओर चल पडे। फिर हर घर के आसपास वाली वैठकें गर्म हो गई।

अकसर रात के नौ वजते-वजते सभी वैठकें खत्म हो जाती थी। लेकिन उस दिन रात के वारह-एक वजने के वाद भी लोग वैठको से उठना नही चाहते थे। असल मे, गाव की वैठको के लिए लोगो को खूब जवरदस्त मसाला मिल गया था। कुछ लोग अपने गाव की शक्ति और एकता की तारीफ कर रहे थे। कुछ लोग उस औरत के साहस का गुण-गान करने मे जुटे थे। कुछ वैसे लोग भी थे, जो उस औरत की जवानी और भावी सवध की कल्पना व्यक्त कर रहे थे। कुछ लोग उसके भागने का मूल्याकन करने लगे थे। अधिकाश लोगो के अनुसार उसका भागना सही ही सावित होता था, लेकिन अपवादस्वरूप कुछ वैसे लोग भी थे, जो उसके भागने को गलत करार दे रहे थे। इसी तरह वातें उस औरत और गाव की उस अविस्मरणीय घट ा के इर्द-गिर्द ही चक्कर काट रही थी। फिर पता नहीं कव, अपने-आप वातें वीरू के ऊपर केन्द्रित हो गई। दरअसल, उस औरत की तरह ही उस घटना मे वीरू की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। लेकिन क्योकि वीरू मेरे गाव का था, इसीलिए मेरे गाव-वासी शुरू मे उस औरत के ऊपर ही केंद्रित रहे। किंतु धीरे-धीरे घटना-क्रम के अनुसार वे स्वत वीरू के ऊपर लौट आए। और फिर इस तरह लौटे कि हर वैठक की चर्चा का विषय वीरू हो गया, हर होठो पर वीरू का नाम उभर आया।

वीरू! मेरे गाव का एक सघर्पशील और कर्मठ युवक। वीरू! जिसने जिंदगी मे कभी समझौता करना नही जाना। वीरू! जिसके सामने निरतर कठिनाइया खडी होती गई और वह कठिनाइयो को रौंदता गया। वीरू! जिसन गाव और वहा के लोगो के हक मे कोई भी गलत काम नहीं किया। उस वीरू को गाव ने क्या दिया, मुझसे मत पूछिए। मुझे चिंता

है, जहाँ बीरू की असली कहानी भी मैं कह पाऊँगा या नहीं ? मैं खुद बीरू से किस रूप में जुड़ा था और मेरी क्या भूमिका थी यह भी आप मत सुनिए। कृपया इस बार इस बात के लिए मुझे माफ कर दीजिए कि अपनी कुछ अन्य कहानियों की भाँति इस कहानी में मैं अपनी भूमिका आपको नहीं बता पाऊँगा ।

हाँ तो बीरू का पूरा नाम वीरेन्द्रकुमार सिंह था। लेकिन सारा गाँव उसे बीरू-बीरू ही कहता था। उसके पिता मेरे गाँव के एक बिलकुल निराले किस्म के व्यक्ति थे। उनके पास काफी पुश्तैनी जमीन और जायदाद थी। लेकिन अपनी जमीन और जायदाद को संचित करके रखना तथा कायदे से उसका इस्तेमाल करना वे नहीं जानते थे। असल में वे जानते भी तो कैसे ? अपने खून और पसीने की कमाई ही को तो आदमी संचित करके रखना तथा तरीके से उसका इस्तेमाल करना जान पाता है। पुश्तैनी जगह-जमीन और विरासत में मिली जायदाद की परिणति तो भोग में ही खत्म हो जाना होता है। और इसीलिए बीरू के पिता के साथ भी ऐसा ही हुआ। वे दीन-दुनिया से तटस्थ एक लंबे समय तक भोग में डूबे रहे। अपनी पुश्तैनी जगह जमीन और विरासत की जायदाद को वे दोनों हाथों से लुटाते रहे।

तब उनके पास चमचों की एक अपार भीड़ थी। उनकी एक आवाज पर गाँव के कई चमचे उनके सामने हाजिर हो जाते थे। गाँव में उनका रोब-दाब भी कायम हो गया था। गाना नाच और ओझा-गुसाईं के लिए उनकी बैठक दर्शनीय बन गई थी। लेकिन सुनते हैं, भोगवाद की आँखें अंधी होती हैं। शायद इसीलिए बीरू के पिता भी अंधे हो गए थे। यह उनके अंधेपन का ही सबूत है कि शराब का अनियमित दौर चलने लगा था और इलाके की नामी-गिरामी वेश्याएँ उनके सामने थिरकने लगी थीं। फिर क्या था ? वे शीघ्र ही लुट गए थे। जैसाकि इतिहास बताता है, इस क्रम में बड़े-बड़े महाराजा लुट गए हैं। फिर बीरू के पिता की औकात ही क्या थी ?

और उनका लुटा जाना चारों तरफ से हुआ। दो-चार बीघा खेत छोड़ कर सारा धन-दौलत खत्म हो गया था। इस बीच पत्नी भी उनको छोड़

कर स्वर्ग सिधार चुकी थी। उनकी पत्नी एक लंबे समय से बीमार रहती आ रही थी, लेकिन पत्नी के इलाज मे उन्होने कोई रुचि नही ली थी। शायद यह बताने की जरूरत नही कि भोगवाद का पहला लक्षण सबधो मे दरार पडना होता है। वे भोगवाद मे लीन होकर पत्नी मे बिलकुल विमुख हो गए थे और रोग-शैया पर पडी पत्नी ने कराह-कराहकर दम तोड दिया था।

पत्नी की मृत्यु के बाद उनके चमचो ने उनके लिए कही से एक बद-चलन औरत ला दी थी। वह औरत पेशेवर जिस्मबाज थी। उसको लेकर मेरे गाव मे हजारो कहानिया प्रसिद्ध हैं लेकिन स्थानाभाव के कारण यहा किसी भी कहानी का जिक्र मैं नही करूगा। बस, आप सिर्फ इतना ही जान लें कि वीरू का जन्म उसी औरत की कोख से हुआ था।

वीरू को एक साल का छोडकर ही वह औरत गाव के एक जुआरी के साथ भाग गई थी। फिर तब से आज तक वह गाव कभी नही लौटी। काफी समय बाद वह जुआरी लौटा था। तब वह बिलकुल अपाहिज हो गया था। उस औरत ने उसे बिलकुल बर्बाद करके छोडा था। कभी-कभी उस औरत को लेकर मैं बहुत परेशान हो जाता हू कि आखिर उसको किसने बर्बाद किया था, जिसका बदला चुकाने के लिए वह कई-कई लोगो को बर्बाद कर रही थी। खैर 'यहा छोडिए, यहा उसकी चर्चा अप्रासगिक होगी। किसी दूसरी कहानी मे मैं उससे आपको मिलाऊगा।

हा, तो वीरू का लालन-पालन उसके मस्तमौजी किस्म के पिता ने ही किया था। लेकिन तब उसके पिता की सारी मस्ती उतर चुकी थी। एक खास समय के भीतर ही उनका सब कुछ लुट चुका था। अभावो ने उनकी जिदगी की गाडी को पूरी तरह जकड लिया था। उनके पास फटकनेवाले चमचे अब उनसे बिलकुल दूर हट गए थे। अब वे उन्हें देखना भी नही चाहते थे। भोगवाद के कारण उनके शरीर की शिथिल हुई इद्रिया भी रोगग्रस्त होने लगी थी। किसी तरह अपने शेष बचे दो-चार बीघे खेत से वे अपना पेट भर रहे थे और वीरू के बचपन को किशोरावस्था की ओर बढा रहे थे।

गांव के बड़े-बुजुर्ग बताते हैं कि बीरू के पिता के अंतिम दिन बहुत कष्टपूर्ण थे। वे कुछ अति भयानक और असाध्य बीमारियों से इस कदर ग्रसित हो गए थे कि कोई उनके पास एक क्षण खड़ा होना भी स्वीकार नहीं कर पाता था। लेकिन यह उनका सौभाग्य था कि ऐन मौके पर बीरू बचपन को लांघकर किशोरावस्था में आ गया था। फिर उनकी सेवा-टहल होने लगी थी। बीरू रात दिन उनकी सेवा में लगा रहता। उन्हें खाट से उठाना-बैठाना खिलाना-पिलाना सब कुछ बीरू करता।

सुनने में आता है कि बीरू के पिता ने अपनी जिंदगी के अंतिम दिनों में इस बात के लिए ढेर-सारा पश्चात्ताप किया था और ढेर सारे आंसू बहाए थे कि बीरू के लिए उन्होंने कुछ भी नहीं किया। मरते वक्त उन्होंने अपने शेष बचे खेत बीरू के नाम कर दिए थे। लेकिन इससे उन्हें तनिक भी संतोष नहीं हुआ था। उनकी जिंदगी के अंतिम दिनों में पुत्र की जो भूमिका बीरू ने अदा की थी उस हिसाब से पिता की भूमिका में वे बिल्कुल चूक गए थे।

उनके मर जाने के बाद बीरू एकदम अकेला बच गया था। उसे ऐसी स्थितियों के बीच से गुजरना पड़ा था कि वह कुछ भी पढ़-लिख नहीं सका था। अपना पेट चलाने और अपनी अकेली दुनिया आबाद करने के लिए उसने नये सिरे से खेती गृहस्थी का सिलसिला प्रारंभ किया। पहले जब उसके पिता जिंदा थे खेत ठीका-बटाई पर दे दिए जाते थे। जो कुछ अनाज मिलता था उससे गुजर-बसर होता था। लेकिन पिता की मृत्यु के बाद बीरू स्वयं खेती-गृहस्थी में उतर आया। शुरू-शुरू में तो उसे मुंह की खानी पड़ी। वह खेती-गृहस्थी के क्षेत्र के लिए एकदम नया था। फलतः काफी कम अनाज ही वह पैदा कर सका। इसपर गांव के चोर-बदमाशों ने उसे कमजोर और अकेला समझकर उसके कम अनाज का आधा हिस्सा भी गायब कर दिया। फिर भी वह टूटा नहीं। उस पहले साल तकलीफ और परेशानियों के बीच वह जरूर घिर गया। लेकिन धीरे धीरे अपनी संघर्ष क्षमता और अपनी मेहनत के बल पर वह अपनी हर मुश्किल को आसान बनाता गया।

क्योंकि उसकी पैदाइश एक बदचलन औरत की कोख से हुई थी

इसीलिए सारा गाव उससे घृणा करता था। लोग उसके साथ उठना-बैठना और खाना-पीना एकदम स्वीकार नहीं करते थे। गाव की सभाओ और उत्सवो मे भी उसे शामिल नही होने दिया जाता था। वह गाव में रहकर भी एकदम अकेला था। उसे न तो किसी ने साथ ही दिया था और न किसीने अपना स्नेह-सरक्षण ही। फलत धीरे-धीरे वह अपने गाव मे कटता गया और अपनी खेती-गृहस्थी की दुनिया मे जुटता गया।

वह किसीसे कुछ भी रिश्ता नही रखता था और न ही किसीसे कुछ अपेक्षा ही करता था। सुवह से शाम तक वह सारा दिन अपने खेतो मे खटता रहता। शुरू-शुरू मे तो उसे अपनी दुनिया उजाड और वीरान लगती। लेकिन वाद मे खुला आकाश, तेजी से वहती हुई हवा, खेतो की सोधी गध और लहराती हुई फसलों ने उसे अपने साथ जोड लिया। फिर क्या था! वह गाव मे विलकुल कट गया। अपने खेत के एक कोने मे ही उसने अपने रहने के लिए भी एक कोठरी वना ली।

उसे कुछ भी पता नही चलता, गाव मे कव क्या हुआ? वह गाव जाता भी वहुत कम ही था—कभी, किसी आवश्यक कार्यवश ही। जिस तरह गाव ने उसके साथ उपेक्षा वरती थी, उसी तरह वह भी गाव के साथ उपेक्षा वरतने लगा था। वह गाव की किसी भी वात मे रुचि नही लेता था। अपने को वरावर किसी न किसी काम में ही उलझाए रहता था। इस क्रम मे उसे दो फायदे भी हुए थे। पहला फायदा तो यह कि दिन-रात खेतो की देखभाल करते रहने के कारण उसकी फसलें आस-पड़ोस के सभी किसानो की फसलो से ज्यादा अच्छी होने लगी थी। दूसरा फायदा यह हुआ कि अव चोर-वदमाश उसकी फसलो को अधिक तहस नहस नही कर पाते थे। हालाकि रातो मे चोर जव भी उस वधार में जाते, तव उसके पास अवश्य चले आते। लेकिन उसकी अक्खडता और निडरता को देखकर उसे अपना गुरु समझ आगे वढ जाते।

काफी समय तक प्रकृति के सहचर्य मे रहने के कारण उसे दो जवर-दस्त चीजें उपलब्ध हुई थी—अक्खड व्यक्तित्व और खूब सुगठित भरपूर स्वस्थ शरीर। अव लोग उसे अकेला और असहाय नहीं समझते। उसके साथ मनमानी और अत्याचार करते हुए भी लोग डरते। वह लोहपुरुष

की तरह सर्दी-गर्मी और आंधी-पानी के बीच भी अपने खेतों में काम करता। अपने शरीर को उसने प्रकृति के बिलकुल अनुकूल बना लिया था। शायद यही कारण था कि बीमारी आदि की परेशानियों से वह बराबर बचा रहता।

उन दिनों गांव के लोग उसकी कसरती देह और निरंतर आठों पहर खटते रहने की चर्चा बराबर करने लगे थे। क्योंकि परिश्रम और मेहनत के बल उसने अपने खेतों की मिट्टी को बिलकुल उर्वरा बना दिया था। इसीलिए उसके आस-पड़ोस के किसान और गांव के कई अन्य लोग खेती गृहस्थी के मामले में उस साथ रखना चाहने लगे थे। लेकिन लोगों के साथ चाहने के बावजूद वह किसी के साथ नहीं हो सका क्योंकि बचपन में ही गांव द्वारा मिले तीखे अपमान ने गांव और वहां के लोगों के प्रति उसके मन में एक गांठ पैदा कर दी थी। उस गांठ के चलते ही वह गांव और वहां के लोगों की समस्याओं के बीच रुचि लेना नहीं चाहता था। लेकिन एक लंबे समय बाद न चाहते हुए भी वह बलभद्दरे गांव से भाग कर आ रही एक औरत के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ खड़ा हो गया था। पता नहीं इसके लिए उसे प्रेरणा प्रकृति से ही मिली थी या जिंदगी से मुझे ठीक-ठीक मालूम नहीं। शायद इसके बारे में मेरे गांव के अन्य लोग भी नहीं जानते हैं। लेकिन उसी दिन से सारे गांव की चर्चाओं का वह विषय बन गया। हर एक के होंठों पर उसका नाम उभर आया। हर बैठक में उसके अक्खड़ व्यक्तित्व और लौह-शरीर के किस्से शुरू हो गए।

जैसाकि आप जान चुके हैं बीरू के पौरुष के चलते ही वह औरत मेरे गांव आई थी। लेकिन बीरू से अधिक मेरे गांव को यश मिला क्योंकि टक्कर एक गांव की दूसरे गांव से हो गई थी। पर इसके मूल में बीरू का ही पौरुष था। अन्याय के खिलाफ अपना पहला कदम बीरू ने ही उठाया था। मुझे पूरा विश्वास है अगर बीरू के स्थान पर कोई होता तो वह स्थिति कभी नहीं आती क्योंकि इस घटना के पहले कभी भी मेरे गांव में किसी व्यक्ति को न्याय दिलाने के लिए कोई तीसरा आदमी खड़ा नहीं हुआ था।

वात आगे वढी थी। वह औरत अव मेरे गाव मे ही रहने लगी थी। हालाकि अपने पति नरेश के अत्याचारो से वह पूर्णत मुक्त हो गई थी, लेकिन मेरे गाव के लोगो की मानसिकता अभी इतनी विकसित नही हुई थी कि नरेश के नाम मे भी उसे मुक्त कर दे। शायद यही कारण था कि नरेश से अलग हो जाने के वाद मेरे गाव के लोग उसे नरेश वहू से ही सवो-धित करने लगे थे। फिर धीरे-धीरे समूचे गाव में उसका यही नाम प्रचा-रित हो गया था।

शुरू-शुरू मे नरेश वहू दो-तीन दिनो तक राम वृन्दावनसिंह के घर रही थी। फिर गाव मे घूमने लगी थी। जल्द ही उसने गाव के सभी घरो से अपना परिचय कर लिया था। सभी घरो मे उसका उठना-वैठना शुरू हो गया था, पर उसे चैन नही था। वह वेचैनी के साथ किसीको खोज रही थी। जव समूचे गाव मे वह उसे नही मिला, तव वह गाव से वाहर खेतो मे उसे ढूढने लगी। फिर गाव से वाहर, वियावान खेतो के वीच एक दिन वह उसे मिल गया। वह वीरू था।

इस गाव मे आने के तीन-चार दिन वाद से ही वह वीरू को ढूढने लगी थी। वैसे वह कभी किसीसे नहीं पूछती कि उसको इस गाव ले आने वाला युवक कहा है? लेकिन उसकी आखें निरतर उस युवक को ही खोज रही थी और उसका मन उस युवक को अच्छी तरह जानने-समझने के लिए वेचैन था। आखिर वह कैसा और कौन-सा युवक है? उससे तो उसका कोई भी परिचय नही था। फिर भी उस अपरिचित युवक ने ही उसकी मुसीवतो के वीच फसी जिदगी को किनारे लगाया था। और शायद इसीलिए उस युवक को देखने तथा उसको जानने-समझने की जिज्ञासा उसके मन मे तीव्र हो गई थी।

जिस समय नरेश वहू वीरू के पास पहुची, उस समय दुपहरिया तप रही थी। खेतों मे काम करनेवाले प्राय सभी किसान अपने घर चले गए थे। लेकिन वीरू का घर तो उसका खेत ही था। इसीलिए वह अपने खेत पर ही था। अपने खेत के पास ही सडक के किनारे महुआ गाछ के नीचे उसी दिन की भाति आराम कर रहा था। लेकिन उस दिन तो नरेश वहू दुख तक-लीफ और परेशानियों के कारण हाफते हुए वहा पहुची थी, परतु इस

बार बहुत शांति और गंभीरता के साथ वह आई थी। रास्ते भर उसे अनेक सवाल कचोटते रहे थे—वह उस युवक से कैसे बात करेगी ? बीच-बीच में उसका मन कहता—वह बुरा तो नहीं सोचेगा ? अगर उसे परिस्थिति समझा देगा तब क्या करेगी ? आदि-आदि।

बहुत सहमते हुए नरेश बहू महुआ गाछ के साये में उसके पास पहुंची। उसे देखते ही वह पहचान गया। इससे पहले कि नरेश बहू कुछ कहती वह बोल उठा, "कैसी हो ?

"ठीक हूं।

"अब तो कोई तकलीफ नहीं है ?

"नहीं।

"यहां पुनः कैसे चली आई हो ?"

"आपसे मिलने। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैंने तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं किया है। वह तो मेरा फर्ज था।"

"लेकिन लोग आज अपने फर्ज को कहां याद रख पाते हैं ?"

"लोगों को छोड़ो। मुझे लोगों से कोई मतलब नहीं। मैं तो बराबर लोगों से दूर रहता हूं।"

"अकेले मन कैसे लग जाता है ? अकेलापन खलता नहीं ?

"अकेले कहां हूं। मेरे बैल हैं। मेरे खेत हैं। घर है। मिट्टी है। पानी है। खुली हवा है। खुला आकाश है।"

"मैं सब कुछ जान चुकी हूं। मुझे दुख है, गांव ने आपके साथ अन्याय किया है।"

"नहीं गांव ने मेरे साथ कुछ भी नहीं किया है। मुझे गांव से कोई शिकायत नहीं है"—इस बार उसकी आवाज भर्रा गई थी जिससे साफ जाहिर हो रहा था उसे गांव से शिकायत है लेकिन वह किसी से कहना नहीं चाह रहा था। फिर दोनों मौन हो गए थे। तब थोड़ी खामोशी को भेदता हुआ उसने पूछा "गांव में अपने रहन और खाने-पीने का इंतजाम तो कर लिया है न ?"

एक छोटी चुप्पी के बाद जवाब में कुछ सोचते हुए वह बोली अभी

तो इधर-उधर ही खाना मिल जा रहा है, लेकिन अब कुछ करूगी। मुझे ढेंकी मे चावल कुटना आता है। जाते से गेहू पीसना जानती हू। घर-आगन की झाड-बुहार तथा चोका-वर्तन भी कर सकती हू। अपना पेट चलाने भर इस गांव मे काम कर लूगी। अभी तो किसी-किसीके घर औरतो के साथ ही रह जाती हू लेकिन बाद मे अपने रहने का इतजाम भी कर लूगी।"

इसके बाद पुन वे दोनो चुप हो गए थे। फिर देर तक चुप रहे थे। अब तक शाम ढल चुकी थी। दिन मे ठढापन उतर आया था। किसान पुन खेतो मे आ गए थे। वीरू भी खेतो में जाना चाहता था। लेकिन नरेश बहू को अकेले छोडकर जाना वह ठीक नही समझता था। शायद नरेश बहू ने भी भाप लिया कि वीरू उसके चलते खेतो मे जा नही पा रहा है। अत वह वीरू से विदा लेकर गाव की ओर चल पडी। अभी उस महुआ गाछ से आगे वह दो-तीन कदम भी नही बढ पाई थी कि वीरू ने आवाज लगाई, "सुनो !"

"क्या ?" मुडते हुए वह वीरू की ओर ताकने लगी।

"मैं एक अजीब आदमी हू। अपना पेट भरन के सिवाय मेरे पास कुछ भी नही है। फिर भी तुम्हें जब भी किसी बात की तकलीफ हो या किसी चीज की जरूरत लगे मुझे याद कर लेना' कहते हुए वीरू खेतो की ओर चल पडा। वह भी गाव की ओर मुड चली। लेकिन रास्ते भर वह पलट-पलटकर वीरू को देखती जाती। वीरू जैसा आदमी वह अपनी अब तक की जिदगी मे कभी नही देख पाई थी। वीरू उसे बिलकुल प्रकृति पुरुष जचा था—इस दुनिया के छल-कपट और शोषण-प्रपच से बिलकुल अलग, प्रकृति की तरह ही पवित्र और ईमानदार।

नरेश बहू ने यह साफ महसूस किया कि वीरू ने शोषण और अत्याचार से उसे मुक्त किया है, इसीलिए उसे इस बात की चिंता है कि कही फिर वह शोषण और अत्याचर के बीच फस न जाए। नरेश बहू के मन मे कही बहुत गहरे तक वीरू का पौरुष उतर गया। वह मन ही मन सोचने लगी, काश ! वीरू जैसे लोग शुरू मे ही उसकी रक्षा के लिए सामने आ गए होते, तो फिर उसकी यह दुर्गति कभी नही होती।

मेरे गांव में बात का बतंगड़ बनते देर नहीं लगती है। कोई कुछ देखे, न देखे नमक मिर्च मिलाकर बात को बेबात बना देता है। नरेश बहू के साथ भी ऐसा ही हुआ। जिस दिन नरेश बहू बीरू से मिलकर गांव लौटी, उसी दिन सनसनी की तरह यह खबर पूरे गांव में फैल गई कि नरेश बहू का बीरू से गलत संबंध है कि बीरू को नरेश बहू ने फांस रखा है कि नरेश बहू एक चरित्रहीन महिला है। कुछ लोगों ने तो यहां तक कहा कि नरेश बहू का बीरू से बहुत पहले का संबंध है कि अक्सर रातों में वह बीरू के पास जाती थी कि बीरू से सांठ-गांठ करके ही वह अपने घर से भागी थी, कि यही कारण था कि उसके लिए बीरू ने नरेश से लड़ाई मोल ली थी आदि-आदि।

फिर नरेश बहू के साथ मेरे गांव के लोगों का वही सलूक शुरू हो गया जो सलूक चरित्रहीन और बदचलन की उपाधि से ग्रसित हो जाने पर किसी भी महिला के साथ होता है। गांव के प्रायः सभी मनचले नरेश बहू को कामुक नजरों से घूरने लगे। उसके साथ ठिठोली करना तथा उसे एकांत में पाकर छेड़ना लोगों ने शुरू कर दिया। उसकी मजबूरियां और उसकी असहाय निरुपाय जिंदगी बहुत जल्द ही लोगों के दिमाग से लुप्त हो गई। उसकी जवानी और उसके नारीदेह के सामीप्य की बात ही लोगों के मन में उठने लगी। फिर उसे इस्तेमाल करने के लिए कुचक्रों और षड्यंत्रों का जाल भी लोग बुनने लगे।

शुरुआत राम कुमारबलसिंह के बड़े लड़के ने ही की। नरेश बहू को अपने घर चौका-बर्तन के लिए स्थायी रूप से उसने रख लिया। साथ ही उसके रहने के लिए अपने मकान के बाहर की एक कोठरी भी दे दी। हालांकि इससे पहले नरेश बहू ने गांव के कई घरों में अपना काम शुरू कर दिया था। अपने जीविकोपार्जन की समस्या वह हल कर चुकी थी, लेकिन राम कुमारबलसिंह का बड़ा लड़का तो षड्यंत्रों के बीच उसे फंसा-कर मनमानी करना चाहता था। इसीलिए उसने ऐसा किया।

शुरू-शुरू में जब नरेश बहू गांव आई थी और राम कुमारबलसिंह ने दो-तीन दिन के लिए अपने घर में पनाह दी थी यह बात गांव की समझ में आ गई थी क्योंकि तब स्थिति ही कुछ और थी। लेकिन इस बार जब